# सन २०१३ में सभी बाजार का वायदा-हाजिर-भविष्य फल

लेखक:- श्री केदार नाथ कपूर

( तेजी मन्दी विशेषज्ञ )

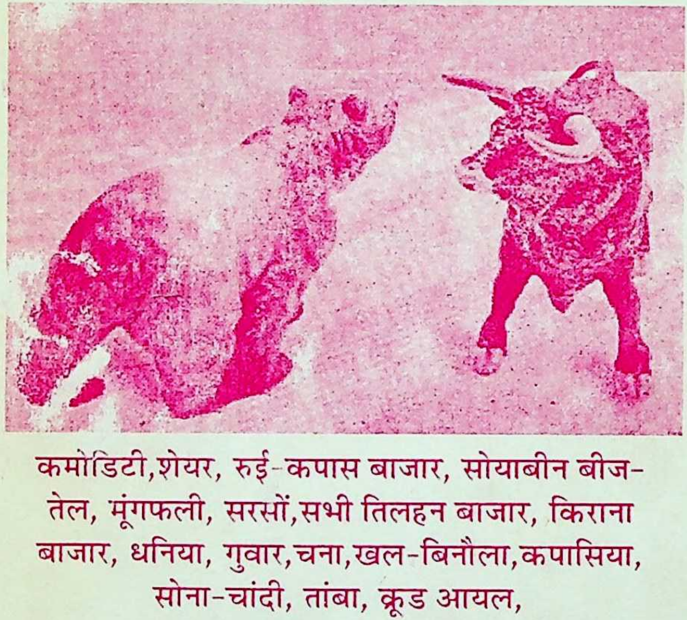

कमोडिटी,शेयर, रुई-कपास बाजार, सोयाबीन बीज-तेल, मूंगफली, सरसों,सभी तिलहन बाजार, किराना बाजार, धनिया, गुवार,चना,खल-बिनौला,कपासिया, सोना-चांदी, तांबा, क्रूड आयल,
एवं सट्टे में उपयोगी मार्गदर्शक लेखों केसाथ

प्रकाशक- कंचन एस्ट्रॉलाजिकल पब्लिकेशन, वाराणसी

फोन:- ०५४२/ २४४०६४९, ०९३३५३३३५३५

मूल्य रु. ४००/-

# भारत के सभी बाजार का
# वायदा-हाजिर-भविष्य फल

क़मोडिटी बाजार, शेयर बाजार सोना-चांदी, तांबा,
क्रूडआयल, तिलहन -दलहन, किराना बाजार,
गुवार,चना, रुई-कपास, खल-बिनौला,कपासिया,
एवं सट्टे में उपयोगी मार्गदर्शक लेखों के साथ

लेखकः- श्री केदार नाथ कपूर
( तेजी मन्दी विशेषज्ञ )

सम्पादक- चिन्तामणि पञ्चाङ्ग व चिन्तामणि जन्त्री

प्रकाशक- कंचन एस्ट्रॉलाजिकल पब्लिकेशन
एम-२१ गंगानगर कालोनी,
भदऊ, राजघाट
वाराणसी-२२१००१

फोनः- ०५४२/ २४४०६४९
०९३३५३३३५३५

मूल्य रु. ४००/-

# *भूमिका*

आधुनिक ज्योतिष के सिद्धान्तों के आधार पर लिखी गयी पिछले वर्ष भविष्य फल-वायदा हाजिर पुस्तक से ज्योतिष की प्रामाणिकता पर लोगों का विश्वास दृढ़ हो गया। ज्योतिष पर विश्वास न करने वाले भी इसके कायल हो गए।

इस पुस्तक में गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। सभी बाजारों के विषय में खुलासे से लिखा गया है जिससे बाजार समझने में आसानी हो। कमोडिटी बाजार, N.C.D.E.X. और M.C.X., शेयर बाजार, धातु बाजार, सोना, चांदी, क्रूड आयल व अन्य बाजार को अलग-अलग लिखा गया है जिससे आपको किसी तरह की परेशानी न हो। कुछ प्रमुख वस्तुओं की तेजी-मन्दी महीनेवार अलग से दी गयी है। सूर्य की सभी संक्रान्तियों का फल अलग से विस्तृत लिखा गया है। व्यापार अधिपति बुध का प्रत्येक महीने की तेजी-मन्दी और वस्तुओं पर पड़ने वाले असर का फल विस्तृत रुप से लिखा गया है। बरसात के महीनों में जब बाजार रुख अनिश्चित हो जाता है और व्यापारी वर्ग आशंकित रहते हैं उस समय के लिए हवामान एवं वर्षा विचार भी दिया गया है जिससे आपको निर्णय लेने में सुविधा हो। इस कारण पुस्तक का इस वर्ष कुछ विस्तार हो गया है। आधुनिक ज्योतिष में रुचि रखने वालों के लिए तेजी-मन्दी के कुछ सिद्धान्तों की भी जानकारी दी गयी है। सौदे में सतर्क रहने के लिए प्रत्येक राशि के लिए अशुभ समय को भी दर्शाया गया है।

आशा है कि हम अपने प्रयास में सफल होंगे।

**श्री केदार नाथ कपूर**

**सम्पादक- चिन्तामणि पञ्चाङ्ग व चिन्तामणि जन्त्री**

**वाराणसी**

## निवेदन

आधुनिक और प्राचीन ज्योतिष के सिद्धान्त के आधार पर इस पुस्तक में अधिक से अधिक देने का प्रयास किया गया है। हम अपने प्रयास में कितने सफल हुए हैं इसका निर्णय आप करेगें। शेयर बाजार पर जितना इसमें लिखा गया है आप कहीं और नहीं पाएंगे। जो भी लिखा गया है वह स्पष्ट भाषा में लिखा गया है। आशा है कि इससे सभी तरह का काम करने वाले लोग पूरा सहयोग प्राप्त करेंगे। स्टाक करने वाले बड़े व्यापारिक के साथ ही छोटे व्यापारी भी लाभ पाएंगे। कमोडिटी बाजार में भी पूर्णतया लाभकारी रहेगा।

यदि आप इससे भी अधिक विस्तृत रुप से पाना चाहते हैं तो हमसे सम्पर्क करिए। आप हमारे विशिष्ट ग्राहक बनकर स्पेशल रिपोर्ट से और भी अच्छा लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

शेयर बाजार की दैनिक रिपोर्ट के साथ पूरे वर्ष का शुल्क रु. ११०००/-, छः महीने का रु. ६१००/-

सोना-चांदी की वार्षिक-दैनिक रिपोर्ट रु. ११०००/-, रिपोर्ट के अतिरिक्त प्रत्येक सप्ताह नीचे ऊपर का भाव भी बताया जाता है।

कॉपर, क्रूड ऑयल का रु. ५१००/-

यदि आप भयंकर घाटा देकर निराश हो चुके हों तो ऐसे व्यापारी बन्धु हमसे मिलकर फिर से कारोबार शुरु कर घाटा पूरा करें। फोम पर यह बात नहीं होगी।

॥ आप सभी की भौतिक उन्नति की कामना के साथ॥

| विषय सूची | पृष्ठ |
|---|---|
| भूमिका | २ |
| ग्रहयोग, विश्व अर्थव्यवस्था एवं भारत | ५-९ |
| सन २०१३ में ग्रह संचार और व्यापार चक्र | १०-१५ |
| बुध एवं व्यापार चक्र | १६-३८ |
| कमोडिटी बाजार,N.C.D.E.X.और M.C.X. | ३९-६२ |
| शेयर बाजार की तेजी-मन्दी | ६३-७९ |
| सोना-चांदी | ८०-८७ |
| क्रूड ऑयल | ८७-९१ |
| तांबा बाजार | ९१-९४ |
| निकल | ९५ |
| अल्यूमिनम | ९५ |
| जिन्क | ९६ |
| रीयल इस्टेट | ९६ |
| रुई-कपास बाजार | ९७-१०२ |
| मूंगफली | १०३-१०८ |
| सरसों बाजार | १०९-११३ |
| एरण्डा बाजार | ११४-११७ |
| सोयाबीन बीज और तेल | ११८-१२४ |
| कपासिया बीज | १२५-१२८ |
| चीनी-गुड़ | १२९-१३१ |
| किराना बाजार | १३२-१३४ |
| धनिया | १३५-१३८ |
| गुवार | १३९-१४१ |
| चना | १४२-१४६ |
| खल-बिनौला | १४७-१५१ |
| आर्द्रा प्रवेश फल-मानसून एवं वर्षा | १५२-१५३ |
| हवामान एवं वर्षा विचार | १५४-१५७ |
| वायदा सौदे के गुर | १५८-१६४ |
| सफलता के सूत्र | १६५-१६७ |
| आर्थिक ज्योतिष के उपयोगी सिद्धान्त | १६८-१७९ |
| भारतीय ज्योतिष और पाश्चात्य ज्योतिष में योग | १८०-१८४ |
| विभिन्न राशियों के लिए सन २०१३ के अतिनेष्ट काल | १८५-१९२ |

## ग्रह योग विश्व अर्थव्यवस्था और भारत

सन २००४ से ग्रह योगों का जो सिलसिला चला उससे विश्व की सभी सरकारें झूठी और भ्रष्ट होती गयीं। विश्व के नेता भ्रष्ट होते गए और भ्रष्टाचार का एक के बाद एक रिकार्ड बनाते गए। इसका नतीजा यह निकला कि पूरा विश्व आर्थिक संकट में फंसता चला गया। सन् २००८ में अचानक विस्फोट हुआ और अमेरिका में बड़ी-बड़ी कम्पनियां और बैन्क फेल हुए। इसका असर शुरु में यूरोप पर हुआ। वहां भी कम्पनियां, उद्योगपति, बैन्क फेल हुए। ग्रीस-स्पेन जैसे देश दिवालियापन पर पहुंच गए। यूरोप के बैन्क और देशों के बचाने के लिए बड़े स्तर पर बेल आउट दिया गया। तमाम कोशिशों के बावजूद आज भी विश्व संकट में फंसा हुआ है। इन ग्रह योगों का असर विश्व पर पड़ता है। लेकिन हमारे यहां के झूठे और भ्रष्ट नेता यही कहते रहे कि भारत पर इसका असर नहीं पड़ेगा। हमारा Fundamental बहुत मजबूत है। शुतुरमुर्ग की तरह यह बने रहे। वास्तविकता को नकारने का खामियाजा आज भुगतना पड़ रहा है।

आर्थिक मन्दी तो जारी हुई ही उसके साथ औद्योगिक उत्पादन भी घट रहा है। इसके बाद बेरोजगारी बढ़ी और बेरोजगारी के बाद मंहगाई बढ़ना तय रहता है। यह मन्दी सन १९३० की मन्दी से भी खतरनाक है। अभी तो हम इस मन्दी के मध्य में हैं और सन २०१५ के बाद ही संकट समाप्त होने का ग्रह योग है। ऐसी ही मन्दी के योग में हिटलर का उदय हुआ था और उसकी सनक का परिणाम द्वितीय विश्वयुद्ध का होना था। इस मन्दी में किस तरह का हिटलर होगा और उसकी क्या सनक होगी यह आने वाला समय बनाएगा।

संकट से लड़ने का इनके पास एक ही रास्ता है 'व्याज बढ़ाओ-

व्याज घटाओ। R.P.O. घटाओ-बढ़ाओ। उधार देना कम करो या बढ़ाओ। केवल बैन्क ही दिखाई देता है जहां यह सब कवायद करने से अर्थव्यवस्था पर काबू पाया जा सकता है। अब तक पन्द्रह बार यह हिकमत की जा चुकी है लेकिन सफलता न मिली है न मिलेगी।

स्थिति बराबर बिगड़ रही है। हर्शल-प्लूटो का केन्द्र योग अभी सुधार ले आने की कोशिश का फल नहीं देगा। पहले पिछले कर्मो का फल देने के बाद ही स्थिति में बदलाव करेगा। पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था इस दौर में बदल जाएगी। सन १९३३ में प्रेसिडेन्ट रुजवेल्ट ने डालर की कीमत गिराकर सोने का भाव २० डालर की जगह ३५ डालर प्रति औंस कर दिया। अमेरिका के पास अभी भी विश्व का सबसे अधिक सोना है। World Gold Council के अनुसार पिछले पांच वर्षो में रुस ने अपने स्वर्ण भण्डार को दूना कर लिया है। इस मामले में अन्य देशों की अपेक्षा पुतिन नें बढ़त ले ली है। स्वर्ण भण्डार के मामले में रुस की स्थिति पांचवी हो गयी है। अभी आधा बिलियन डालर के औसत से यह प्रत्येक महीने सोना खरीद रहा है। कुछ दिनों पहले तक अमेरिका और यूरोप में सबसे अधिक सोना था जो सदियों से इकठ्ठा किया जा रहा था। अमेरिकी करेन्सी का ७५ प्रतिशत सोने के रुप में था। विश्व के अन्य कई राष्ट्रों के पास भी मुद्रा के बदले सोना था। लेकिन अब विश्व स्वर्ण कौन्सिल के अनुसार स्थिति बदल रही है। तेजी से विकसित होने वाले देश बहुत कम प्रतिशत में ही सही सोना खरीद रहे हैं। चीन अपनी मुद्रा का दो प्रतिशत सोने में रख चुका है। रुस में मुद्रा का नौ प्रतिशत स्वर्ण भण्डार है। चीन, रुस, सऊदी अरब अब प्रथम पांच में चल रहे हैं। पश्चिम यूरोप के देश सोना बेच रहे हैं। यदि वर्तमान संकट बढ़ता है तो वह और सोना बेचेंगे। चीन का स्वर्ण

आयात तेजी से बढ़ रहा है और भविष्य में भारत उपयोग के मामले में नम्बर दो पर जाने वाला है।

अमेरिकन अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए डालर का पुर्नमूल्यांकन ही एक रास्ता बच रहा है। यदि इसने रातों रात प्रेसिडेन्ट रुजवेल्ट की तरह डालर की कीमत घटा दिया और सोने का भाव आसमान पर कर दिया तब क्या होगा! इससे इसका ऋण तो चुकता हो जाएगा लेकिन इससे मुद्रा स्फीति बहुत बढ़ जाएगी। बढ़ी हुई मुद्रा स्फीति के कारण सभी चीजों के दाम बेतहाशा बढ़ जाएंगे।

यह वर्तमान मन्दी के विपरीत होगा। अन्य देश भी अपनी मुद्रा की कीमत घटाएंगे जिससे वह भी अपना ऋण चुका सके। अन्त में एक नई मुद्रा प्रणाली या व्यवस्था विश्व में स्वीकार होगी तब विश्व की ऋण समस्या का समाधान होगा। जहां तक मै अनुमान लगा रहा हूं कि विश्व इसी को अपनाकर अपने ऋण भार से छुटकारा पाएगा। यदि डालर का अचानक पुर्नमूल्यांकन होता है तब जिन चतुर और धनी लोगों के पास सूचना होगी वह सोना खरीदकर जल्दी ही अच्छा खासा लाभ पाएंगे।

फेडरल अधिक नोट छापकर उल्टी धारा नहीं बहा सकता। इस समय मुद्रा युद्ध चल रहा है कि कौन अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी और सस्ती मुद्रा छापकर दे सकता है। जब तक स्वर्ण आधार था तब यह असंभव था। स्वर्ण आधार के नियन्त्रण के बिना हम किसी भी सेन्ट्रल बैन्क को नोट छापने से नहीं रोक सकते। अधिक मुद्रा प्रसार से हम मुद्रास्फीति की ओर बढ़ते हैं। मुद्रा स्फीति हमें दिखाई नहीं देती लेकिन जब एक बार यह दस्तक दे देती है तब उपद्रवी हो जाती है। उपभोक्ता तक पहुंचते-पहुंचते यह आंधी से बढ़कर तूफान का रुप ले लेती है और इसको रोका नहीं जा सकता।

अब स्वर्ण आधार की ओर लौटना मुश्किल है। सभी सरकार जितना चाहती है, नोट छापती है। अधिक मात्रा में नोट छापने का मतलब कि भविष्य की समस्याओं का यह भी एक हिस्सा है। साधनों की कमी और भंयकर ऋणजाल की समस्या। अधिक मुद्रा का मतलब भविष्य में अधिक मुद्रास्फीति जिससे इस समय स्वर्ण भण्डार की ओर लौटना असंभव है।

सोने के भाव बढ़ने के साथ इधर विश्व में नया ट्रेण्ड बन रहा है। जैसे-जैसे सोने का भाव बढ़ता है, बेरोजगारी भी उसी तरह बढ़ती है। कहने का अर्थ मुद्रा का पतन अर्थव्यवस्था में कई संकट को जन्म देता है। भारत जैसे देश में जहां बेरोजगारी पहले से ही अधिक है वहां यदि बेरोजगारों का संख्या और बढ़ती है तो समस्या शान्त या समाप्त होने की सोच ही नहीं सकते। उसी तरह अमेरिकी डालर का पुर्नमूल्यांकन होने पर भारत की मुद्रा का कितना अवमूल्यन होगा इसको भी नहीं कहा जा सकता है।

इन सभी विषयों पर मैं वर्षो पहले से सन २००४ से ही कहता चला आ रहा हूं जब मैने सोने का मूल्य जल्दी ही एक हजार डालर हो जाने को कहा था। उस समय लोगों ने यकीन नहीं किया था और जब एक हजार डालर हुआ तो मैने अगले एक हजार डालर अर्थात २००० डालर का भाव दिया। २००० डालर का सोना अब होने जा रहा है और आगे यह २५०० डालर का भाव देखेगा। यदि अमेरिका डालर का अवमूल्यन करता है तब पचास प्रतिशत इसका भाव और बढ़ जाएगा और इसका भाव भाव ३५०० डालर हो जाएगा। इसलिए अभी भी सोने में निवेश करना बुद्धिमानी होगी। रुपए में इसका क्या भाव होगा, अभी

तो सोचा भी नहीं जा सकता। अनुमान से उस स्थिति में इसका भाव ५०,००० रु. प्रति दस ग्राम तक हो सकता है। अभी यह भाव असम्भव मालूम हो सकता है लेकिन यह भाव बनेगा और उससे भी ऊपर जा सकता है।

सन १९९२ में जब मनमोहन सिंह अपनी उदारवादी पारदर्शिता की नीति जब लेकर आए थे उसी समय मैने अपने लेख में लिखा था कि सन २०१० में जब वर्तमान स्थिति बदलेगी उस समय सभी नेताओं, उनकी योजनाओं, नीतियों अन्त निराशा में होगा। तब का लिखा हुआ आज सही साबित हो रहा है। लेख के अंश को चिन्तामणि पंचांग सन २०१३-१४ में देखिए। कोई कुछ भी कहे या सुने वास्तविकता सामने आती ही है।

इसी तरह वर्तमान मन्दी का सबसे पहले संकेत सन १९८९ में किया था। सन २००३ से २००५ के बीच बराबर तेजी और मन्दी के बारे में लिखता रहा। सन २००८ के पंचांग में साफ-साफ लिख दिया था कि इस वर्ष विश्व में भयानक आर्थिक संकट होगा जिसमें बड़े-बड़े बैन्क दिवालिया हो जाएंगे। बेरोजगारी, आर्थिक संकट बढ़ता जाएगा। वही आज चार सालों से चला आ रहा है और अभी आगे भी सन २०१५ तक तो चलेगा ही नहीं।

कमोडिटी बाजार भी Cycle के अनुसार चलता है। इसकी बीस वर्ष की साइकिल होती है। सन २००१ से इस बाजार में तेजी बनी हुई है लेकिन जब इसकी मन्दी की Cycle शुरु होगी तब ?
आगे अगले वर्ष।

## सन् २०१३ में ग्रह-संचार और व्यापार चक्र

कोई कुछ भी कहे या सुने वास्तविकता (Fundamentals) अपनी जगह कायम रहती है। पिछले वर्ष विश्व व भारत के बाजारों के बारे में जो भी लिखा गया वह सभी ठीक गया। यही वह कारण है जिससे ज्योतिषीय आधार से बाजार के विषय में जो कुछ कहा जाता है उस पर लोगों का विश्वास मजबूत होता है। आधुनिक समय में बाजार की विवेचना करने के लिए तमाम तरह के ज्योतिषीय आंकड़ों को इकठ्ठा करने के साथ बाजार के आंकड़ों को इकठ्ठा करना, कृषि उपज, पूर्ति और मांग, आयात-निर्यात, सरकारी कानून एवं अनेक आंकड़ों को इकठ्ठा करने के बाद उनका समुचित विवेचना करने पर ही किसी वस्तु की तेजी-मन्दी बतायी जाती है। किसी भी वस्तु के भाव के लिए उस समय के प्रमुख ग्रह योगों का जानना जरुरी होता है। कुछ ग्रह योग पूरे बाजार पर अपना प्रभाव डालते हैं जिससे चलती लाइन मजबूत हो जाती है या बाजार की लाइन पलट जाती है। तेजी का बाजार मन्दी में या मन्दी का बाजार तेजी में पलट जाता है। ऐसे समय में जिसका सौदा सही हो जाता है वह अच्छा मुनाफा पाते हैं। यहां हम सन २०१३ के कुछ प्रमुख योग दे रहे हैं जिसमें सतर्क होकर काम करना चाहिए। योग बनने के पहले और बाद में बाजार पर निगाह रखना चाहिए।

प्रत्येक राशि, नक्षत्र-तारे, ग्रह का विश्व के सभी प्राणियों, जीव-जन्तुओं, कृषि उपज, आविष्कार, उन्नति-अवसान पर व्यापक रुप से पड़ता है। इनकी तरंगों के प्रभाव में मानव मस्तिष्क आने से

वस्तुओं के भाव नीचे-ऊपर होते हैं। सही तरंगों को पकड़कर जो व्यापार करता है, वह हमेशा लाभ की स्थिति में रहता है। गलत तरंगों के प्रभाव में आने पर सौदा हमेशा उल्टा होने पर हानि उठाना पड़ता है। गलत तरंगों के प्रभाव में न आने पांए उसके लिए कुछ नियम है।

बड़े ग्रह शनि, गुरु, हर्शल, नेपच्यून का प्रभाव धीमे लेकिन लम्बे समय तक रहता है। छोटे ग्रह बुध-शुक्र, सूर्य, मंगल, का प्रभाव जल्दी और बहुत तीव्रता से पड़ता है। अतः यदि आप बड़े ग्रह की अधिकतर वस्तुओं का व्यवसाय कर रहे हों तो उसकी खरीद-बिक्री के लिए निर्णय शीघ्रता में नहीं करिए। कुछ समय उनकी चाल देखने के बाद ही निर्णय लीजिए। छोटे ग्रह की अधिकार वाली वस्तुओं का निर्णय जल्दी लिया जाता है। बड़े ग्रहों की वस्तुओं का स्टाक करने से लाभ अच्छा होता है। किसी कारण से भाव यदि गिर भी जाए तो बड़ा ग्रह तेजी में रहने पर उसके भाव को फिर बढ़ा देगा। इनके अंशात्मक योग पूरा होने के समय और ग्रहों के राशि बदलने के समय विशेष ध्यान रखिएगा।

जनवरी में ही एक प्रमुख योग बन रहा है। ता. १४ को राहु धनु राशि छोड़कर तुला राशि में प्रवेश करके शनि के साथ लगभग १८ महीने रहेगा। यह योग बाजार में कई वस्तुओं पर असर डालेगा। यह जिस पर भी अपना प्रभाव देगा तेजीकारक रहेगा। उसी तरह मन्दीकारक स्थिति में भाव नीचे भी ले आएगा। सितम्बर में इसकी शनि से युति होगी उस समय बाजार मन्दी में जाने का पूरा चान्स रहेगा। वर्ष के शुरु

में यह तेजी देगा। इसके प्रभाव में आने वाली वस्तुएं सौंफ, लौंग, जायफल, मेन्था, पिपरमिन्ट, अजवाइन, बादाम, पिस्ता, दालचीनी, केशर, इलायची, तिल, धनिया, जीरा, सोंठ, अदरख, खल बिनौला, मूंगफली रहेगी। यदि आपने सही वस्तु का चुनाव किया तो अच्छा लाभ मिलेगा। केवल तेजड़िए ही नहीं, मन्दड़िए भी अच्छा मुनाफा कमाएंगे।

एक विचित्र योग ता. ७ जनवरी को हो रहा है जिसमें बाजार में अच्छी उलट-फेर करने की क्षमता है। इस दिन चार ग्रह यथा मकर में मंगल, धनु में बुध, तुला में शनि और धनु में प्लूटो अपनी भ्रमण राशियों में १६ वें अंश पर रहेंगे। ऐसा योग कहीं पहले देखने में नहीं आया है। मेरे विचार से बाजार में इस दिन अच्छा उलटफेर होना चाहिए। चलता हुआ बाजार उलट सकता है। इस दिन बाजार में तेज गिरावट का रुख रहना चाहिए। कम से कम दो दिन आगे-पीछे इसका प्रभाव देखना चाहिए।

दूसरा इसी तरह का विचित्र योग ता. १९ मई को बन रहा है। उस समय वृष का शुक्र, मीन का हर्शल और धनु का प्लूटो तीनों अपनी राशियों में १८ वें अंश पर भ्रमण कर रहे होंगे। इसके ठीक कुछ दिन पहले ता. १० मई को कंकणाकृति सूर्य ग्रहण मेष राशि में होगा। उस समय ग्रहों का जमघट मेष राशि में रहेगा जिसमें सूर्य चन्द्र-मंगल-बुध और वृष में गुरु-शुक्र रहेंगे। सभी बाजारों में अफरा-तफरी की स्थिति ता. ७ या ८ से मचेगी जो ता. १९ तक जारी रह सकती है।

तीसरा इसी तरह का योग १८ जुलाई को बन रहा है। उस

समय तुला में शनि, नेपच्यून का कुम्भ, मिथुन का गुरु, तीनों ११ वें अंश पर चल रहे होंगे। गुरु के पास ही मिथुन में मंगल नवें अंश पर रहेगा। गुरु इस समय शंनि और नेपच्यून से त्रिकोण करेगा। यह दुर्लभ किस्म का योग है। ता. २० को मंगल भी शनि-नेपच्यून से त्रिकोण दो घण्टे के अन्दर ही करेगा। इन सभी ग्रहों के पास ही सूर्य कर्क में दूसरे अंश पर, मिथुन में बुध बीसवें अंश पर, वृश्चिक में चन्द्र २६ वें अंश पर रहेगा। केवल सभी बाजार ही नहीं किन्तु राजनैतिक क्षेत्र पर भी अच्छा-खासा असर होगा। कुछ बाजार तेजी से नीचे का रुख करेंगे तो कुछ ऊपर की ओर भी चलेंगे।

इसके बाद सितम्बर में युतियों का महत्वपूर्ण योग बन रहा है। ता. १७ सितम्बर को शनि-राहु की युति होगी और अगले ही दिन शुक्र-राहु और शुक्र-शनि युति छः घण्टे के अन्दर होगी। इस समय जिन बाजारों में नीचे का भाव या रुख बनेगा उनमें नीचे का नया भाव या स्तर भी आगे देखने को मिलेगा।

शुक्र की ही तरह अगले महीने ता. ५ अक्टूबर को बुध भी राहु से युति कर रहा है और ता. ८ को शनि से युति कर रहा है। यह अपने तरह का अलग योग बना रहा है। ता. २५ सितम्बर को यह

तुला राशि में प्रवेश करके ता. २१ अक्टूबर को वक्री हो रहा है और ता. १० नवम्बर को मार्गी होगा तथा १ दिसम्बर तक इसी में रहेगा। तुला राशि में रहते हुए यह तीन बार शनि-राहु से युति करेगा और बाजार पर प्रभाव देगा। अक्टूबर और नवम्बर महीना बाजार अधिकतर बुध के

नियन्त्रण में रहने के कारण बाजार में काफी उलटफेर होगा। कुछ वस्तुओं के ऊपर और नीचे दोनों भाव दिखाई पडेंगे तो कुछ में ऊपर और कुछ में नीचे का भाव भी देखने को मिलेगा।

शनि से ३० अक्टूबर को बुध की दूसरी युति होगी और राहु से दूसरी युति ता. ३ नवम्बर को कर रहा है। ता. १ को यह सूर्य से युति करने के बाद बुध ता. ३ नवम्बर को राहु से दूसरी युति कर रहा है। इसी दिन सूर्य ग्रहण हो रहा है और जहां भी यह खग्रास सूर्य ग्रहण दिखलाई देगा, ग्रहण के समय बुध ग्रह भी आकाश में सूर्य के पास दिखलाई देगा। यह अद्‌भुत तथा साथ ही दुर्लभ दृश्य होगा। ता. ६ नवम्बर को सूर्य-शनि युति होगी। ता. १९ को बुध की राहु से तीसरी तथा २६ नवम्बर को शनि से तीसरी युति होगी। यह सभी योग अक्टूबर में अनेक बाजार में संकट ले आएंगे। कुछ बाजार तेजी से धराशायी होंगे। कुछ के भाव नीचे का स्तर देखेंगे। पूरा अक्टूबर अफरा-तफरी में जा सकता है। इस महीने बाजार की तेजी-मन्दी के विचार से ता. ५ से ११ के बीच का दिन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। मेरे विचार से कम पूंजी वालों को इस महीने सट्टे से दूर ही रहना चाहिए। तेज उतार-चढ़ाव और भाव के बदलाव से बहुत तेजी से निर्णय लेना भी जरुरी होगा।

राशि परिवर्तन के मामले में इस वर्ष गुरु ग्रह का वृष राशि में से निकलकर ता. ३१ मई को मिथुन में प्रवेश करना रहेगा।

ता. २७ मई को बुध से युति होने के बाद ही बुध मिथुन राशि में प्रवेश कर जाएगा। ता. २८ को शुक्र-गुरु से युति के बाद ता. २९ को

शुक्र मिथुन में प्रवेश कर जाएगा। ता. ३१ को गुरु भी मिथुन में प्रवेश कर जाएगा। इस समय कई वस्तुओं के भाव ऊँचे का स्तर बना रहे होंगे। चलती लाइन अचानक बदलेगी। कमोडिटी बाजार में यह Turning Point बनेगा। जल्दी ही टूटकर अनेक वस्तुओं के भाव नीचे आएंगे। कमोडिटी बाजार में इस समय सतर्क रहकर काम करें। गुरु के प्रभाव में आने पर साहस और आवेग बढ़ जाता है जिससे सौदा अपनी लिमिट से ज्यादा हो जाता है। सौदा उल्दा हो जाने पर घाटे में काटना जरुरी हो जाता है। इस समय आप बाजार में देखेंगे कि लोग Over Trading करेंगे। अपनी क्षमता से अधिक सौदा करेंगे और रिस्क बढ़ा लेंगे। अन्त में घाटा काटना मजबूरी हो जाएगा। बुलियन मार्केट में यह अधिक होगा। गुरु के राशि परिवर्तन से इसमें अच्छा उछाला देखने को मिलेगा।

गुरु के मिथुन प्रवेश से इस वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण योग इसका तुला के शनि-राहु से और कुम्भ के नेपच्यून से त्रिकोण योग बनना रहेगा। तेल-तिलहन बाजार, अनाज-दलहन के बाजार में तेजी का रुख बनेगा। तिलहन बीज एवं खल-बिनौला भी बढ़ेगा। अनेक सूखे मेवे का भाव भी इस वर्ष बढ़ जाएगा। किराना में सौंफ, कालीमिर्च, इलायची, लौंग, जीरा, मेन्था, पिपरमिन्ट, धनिया, जीरा, सरसों, जायफल का भाव बढ़ेगा। किराना के भाव गुरु राशिचार से कम बढ़ेंगे। आगे बढ़ने पर वक्री-मार्गी होकर तथा अन्य ग्रहों के योग से बाजार पर प्रभाव डालेगा। क्रूड आयल में भी यह तेजी-मन्दी दोनों को सहयोग देगा। अधिकतर समय क्रूड आयल में तेजीकारक रहेगा।

## व्यापार अधिपति बुध एवं व्यापार चक्र सन २०१३

**जनवरी**-वर्षारम्भ के शुरु में बुध किसी भी ग्रह के नियन्त्रण में नही रहेगा। यह स्थिति पिछले महीने ता. २७ दिसम्बर से बनी हुई है और इस महीने ता. १५ को मकर में प्रवेश के बाद बदलेगी। धनु राशि इसकी अस्तगत राशि है और उसमें अनियन्त्रित होकर बाजार में उतार-चढ़ाव अधिक करता है। अत: सट्टे में घटे पर खरीदकर चलना चाहिए। पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला बुध है। सूर्य से सबसे करीब होने के कारण इसको सूर्य की सबसे अधिक उर्जा प्राप्त होती है। यह शक्ति पृथ्वी के सभी प्राणी, समाज, देश और व्यापार पर पड़ती है। बाजार की चाल को एकाएक बदल देता है। तेजी का बाजार अचानक मन्दी और मन्दी का बाजार तेजी का बन जाता है। कम समय में ही तेजी का ऐसा गुब्बारा बना देता है कि लोग मन्दी को भूल जाते हैं और समय रहते तेजी का लाभ नहीं ले पाते। सट्टे के बाजार में तो हाथ आया मुनाफा घाटे में बदल जाता है। एक साल में तीन बार वक्री होता है। वक्री समय के फल को बताने में सभी चूकं जाते हैं। इसलिए बुध जब भी वक्री हो सट्टे के सौदे में हमेशा सर्तक रहना चाहिए। यदि वक्री काल में सट्टे में सही सौदा हो जाए तो जीवन भर की कमाई एक ही बार में हो सकती है लेकिन ऐसा रिस्क लेना नहीं चाहिए।

यदि दूसरे ग्रहों का सहयोग मिल जाए तों बाजार में तेजी का तूफान ले आता है। भाव अनाप-शनाप बढ़ने लगते हैं और वायदा बाजार में झूठे सौदे होने लगते हैं। इसके अपने जिन्स तेजी की ऊंचाई पकड़ने लगते हैं और दूसरे ग्रह की भी वस्तुएं तेजी पकड़ लेती हैं। अत: हर वर्ष बुध के अधिकार क्षेत्र वाली वस्तुओं पर ध्यान रखना चाहिए। स्टाक में कम से कम एक वस्तु तो रखना चाहिए। नीचे भाव का किया स्टाक

घाटा नहीं देगा और यदि अच्छी तेजी का रुख बना तो मुनाफा अच्छा हो जाएगा।

पिछले वर्ष बुध के किए विवेचन को सभी व्यापारियों ने सहारा और हम इसके लिए अभारी हैं।

सन २०१३ में जनवरी में यह पूरे महीने उदय रहेगा और मार्गी गति से चलता हुआ धनु राशि से मकर में प्रवेश करेगा। ता. १ को यह नेपच्यून से त्रिरेकादश करेगा। महीने के शुरु से ही अधिकतर अनाज, ज्वार, बाजरा, मोंठ, उड़द, मूंगफली, तोरिया, तिलहन, ग्वार, हल्दी, कपास, हैसियन, जूट, आलू, तिल, रबड़, में दुतर्फा रुख के साथ तेजी बनेगी। ता. १ से ७ के अन्दर अनेक बाजारों में भाव में काफी उलटफेर होगा। जनवरी में बहुत कम जिन्सों में ही मन्दी दिखाई देगी। ता. ७ को हर्शल से केन्द्र योग बनेगा जिससे मूंग, मटर, मोंठ, ज्वार, बाजरा, गेहूं, ग्वार, अरहर, सौंफ, कपास, बिनौला में एक मन्दा आकर जल्द ही बाजार सुधर जाएगा। ता. ६ को प्लूटो से युति मन्दीकारक रहेगी। मन्दा इस दिन या अगले दिन भी हो सकता है। ता. ११ को नेपच्यून से अर्ध-केन्द्र होगा, इस दिन बाजार कुछ दबकर बाद में फिर तेज होगा।

ता. १४ को सूर्य के मकर में प्रवेश के बाद अगले ही दिन ता. १५ को बुध भी मकर में प्रवेश कर रहा है। दोनों की युति उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हो रही है। ता. १६ से २० के अन्दर बाजार में अफरा-तफरी मचेगी। भाव तेजी से ऊपर का रुख करेंगे। ता. १८ से २० के अन्दर भाव अचानक ऊपर का रुख करेंगे। ता. २२ को बुध के बाद धनिया, हल्दी, पीली सरसों, सौंफ, कपास, बिनौला में भाव बढ़ेगा। ग्वार का भाव हल्का बढ़ेगा। ता. १५ से २४ के बीच ग्वार अचानक बढ़ सकता है। महीने के अन्त तक भाव दबने के बाद ऊपर आता रहेगा।

ता. २५ से ३१ के बीच अनाज के अनेक जिन्सों में तेजी का इकतरफा रुख बनेगा। किराना बाजार में भी अच्छी हलचल होगी। हल्दी का भाव तेजी में जाएगा। महीने के आखिरी सप्ताह में N.C.D.E.X. और M.C.X. में कुछ वस्तुओं के भाव अच्छे चढ़ सकते हैं।

ता. २९ को बुध कुम्भ में प्रवेश करके नेपच्यून और मंगल का साथ पकड़ेगा। यहां वह शनि से त्रिकोण योग बनाएगा। शनि के साथ राहु भी संचरण कर रहा है। जिससे भाव अप्रत्याशित रुप से नीचे ऊपर होंगे। गुरु से केन्द्र योग भी बनाएगा। इस महीने जो वस्तुएं नीचे में चल रही होंगी उनमें अधिकांश के भाव महीने के अन्त तक नीचे के बन चुके रहेंगे। इनको खरीदकर चलना चाहिए।

**फरवरी**- ता. २ को बुध कुम्भ में प्रवेश करने के साथ ही शनि से क्रान्तिसाम्य बनाकर तिलहन-दलहन-घी-तेल नकली सिल्क, लोहा में अचानक नीचे का भाव बनाएगा। अगले ही दिन ता. ३ को भाव फिर संभल जाएगा। मटर, मूंग, अरहर, मसूर, चना के भाव में सुधार होगा। यहां से मेन्था, पिपरमिन्ट के भाव पर ध्यान रखना चाहिए। जल्दी ही इसमें एक तेज उछाला आएगा। इस महीने तेजड़िया वर्ग बाजार में अपना वर्चस्व कायम कर लेंगे। ता. ५ और ता. ६ को N.C.D.E.X. और M.C.X. में अनेक वस्तुओं के भाव दबकर ता. ७ से बुध-नेपच्यून युति के बाद अचानक तेजी में जाएगा। हालांकि मंगल के कारण भाव अधिक नहीं बढ़ेंगे। ता. ८ को बुध-मंगल युति से अनेक अनाज में तेजी का अच्छा भाव बनेगा। मूंग, उड़द, चना, आलू, सरसों, मटर, मसूर, गेहूं में तेजी का रुख बनेगा। ता. ९ को गुरु से यह अंशात्मक केन्द्र योग बनाएगा। अनाज के भाव में मन्दी का एक तेज झटका इस दिन लगेगा। ता. १० की अमावस्या पर चन्द्रमा कुम्भ में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग

बना रहा है इससे बाजार में तेजी का अच्छा माहौल रहेगा। अनेक वस्तुओं का भाव अचानक तेज होगा। ता. ११ को चन्द्रमा विशेष योग बना रहा है। यह तीन ग्रह नेपच्यून, मंगल और बुध के साथ कुछ घण्टों के अन्तर पर युति कर रहा है। बाजार में अच्छी तेजी इस दिन रहेगी। सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग, जायफल, केशर, पिस्ता, तिल, पिपर, लौंग, मेन्था के भाव बढ़ेंगे। खसखस में भी अच्छी तेजी इस महीने बनना चाहिए। नशे के सभी पदार्थ तेज़ी में रहेंगे। अमावस्या और चन्द्र-दर्शन तेजी में सहयोग देने वाला है।

चन्द्रमा के कुम्भ राशि छोड़ने के पहले सूर्य कुम्भ में प्रवेश कर जा रहे हैं। कुम्भ में चतुर्ग्रही योग बना रहेगा और मजबूत होता जाएगा। संक्रान्ति के समय पंचग्रही योग कुम्भ में बना हुआ है। इससे सट्टे की अधिकतर वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। सभी अनाज, रसकस, दलहन-तिलहन के भाव में तेजी दिखने को मिलेगी। ता. १४ से तेजी की रफ्तार कम होगी। ता. ७ से १२ के बीच बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। अफवाह और खबर से बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। हालांकि अफरा-तफरी और अनिश्चितता की स्थिति पूरे महीने ही बनी रहेगी। इस समय जो बाजार को परखकर काम करेंगे उनको कम समय में ही अच्छा मुनाफा मिलेगा। ता.१८-१९ के आस-पास प्रतिक्रिया में एक दिन भाव अच्छा टूटेगा लेकिन ता. २१ से बाजार संभल जाएगा। ता. २३ को बुध वक्री होगा और ता. २६ को मंगल से दूसरी बार युति करेगा। पहली युति ८ को इसी महीने हुई थी। इससे ता. २६ को बाजार में तेजी का रुख रहेगा।

इन सभी योगों का बाजार पर यदि अच्छा प्रभाव पड़ा तो सभी वस्तुओं के भाव इस महीने काफी ऊपर जाएगा। खासकर बुध के

अधिकार क्षेत्र की वस्तुओं का भाव अच्छा बढ़ेगा।

इस महीने में ता. २ को बुध उदय होकर ता. २६ को अस्त हो जाएगा। अस्त होने के बाद यह नियन्त्रण से बाहर हो जाएगा। उदयकाल में यह बाजार में तेजी ले आने में सक्रिय रहेगा साथ ही अस्त काल में तेजी और बढ़ा देगा। इस समय बाजार में भुगतान का संकट भी खड़ा होगा और कई पार्टिया दिवाला भी मार सकती हैं। व्यापार में रुपये की कमी महसूस होगी। महीने के अन्त तक अनेक वस्तुओं के भाव ऊँचे का स्तर देख सकते हैं। बाजार धीमे-धीमे एक स्तर पर रुकना शुरु हो जाएगा और एक सीमित दायरे में घूमेगा।

कुम्भ राशि में पंचग्रही योग बनने से तेजी का गुब्बारा तो बनेगा लेकिन बाद में एक बार बाजार दबने के बाद लगातार दबता चला जाएगा। महीने का अन्त तेजी में होगा और भाव समझ के बाहर होगा।

**मार्च**- व्यापार की स्थिति असमंजस की होगी। रुपये की कमी बनी रहेगी। समय पर भुगतान मिलना मुश्किल रहेगा। N.C.D.E.X. M.C.X. में वातावरण तेजी का रहेगा और सौदा गलत होने से लोगों का Stop Loss कटता रहेगा। इस समय सौदा गलत होने पर उसको तुरन्त काट देना चाहिए। बुध नियन्त्रण के बाहर होने पर भाव अनाप-शनाप बढ़ते या घटते हैं। इस स्थिति में यह इस महीने की ता. ८ तक रहेगा। ता. ७ को शुक्र से युति होने के बाद ही यह नियन्त्रण में होगा। ता. ४ को सूर्य से अर्न्तयुति और ता. ७ शुक्र से युति महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। एक महत्वपूर्ण योग बुध का शनि और प्लूटो से सहयोग बनना है। यह पिछले महीने की ता. २२ से ता. १२ मार्च तक बना रहेगा। यह आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिक सभी क्षेत्र पर प्रभाव डालेगा। सट्टे के सभी बाजार और आर्थिक जगत में इस अवधि

में कुछ नया घटित होने जा रहा है। कुछ या बहुत क्षेत्र में आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा। आर्थिक क्षेत्र में यहां से मन्दी कष्टकारी होगी। विश्व की आर्थिक स्थितिं और भी खराब होगी।

इस महीने भी बुध कुम्भ में ही संचार करेगा। कुम्भ संचार के दौरान उदय-अस्त, वक्री-मार्गी होकर यह सभी ग्रहों से सम्बन्ध बनाकर बाजार में सभी वस्तुओं पर अपना प्रभाव डालेगा। तेजी के बाद मन्दी भी दिखा सकता है।

ता. ३ को बुध-सूर्य की अर्न्तयुति से बाजार में कई जिन्सों में मन्दी का तेज धमाका होकर जल्दी ही बाजार सुधर जाएगा। सभी-रस-कस, चना, गुड़, चीनी, तेल-तिलहन, किराना की अनेक वस्तुओं का भाव दबेगा। ता. ४ या ५ को बाजार सुधरता हुआ दिखाई देगा। ता. ७ को बुध-शुक्र युति होगी, इससे बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। सौंफ, धनिया, पिपरमेन्ट, मेन्था, गेहूं, जौ, चना, का भाव बढ़ जाएगा। यहां पर तेजी की रफ्तार धीमी पड़ने लगेगी। ता. १० को बाजार में अनेक वस्तुएं दबने का चान्स है। हल्दी, सोयाबीन, सोयाबीन तेल, किराना के अंनेक आइटम मन्दी देखेंगे। धातुओं के भाव भी इस दिन घटेंगे। ता. १२ के आस-पास तेल-तिलहन, दलहन, क्रूड आयल के भाव में गिरावट दर्ज होगी। इस दिन गेहूं, जौ, चना, मसूर के भाव नीचे का रुख करेंगे और हो सकता है कि पूरे महीने ही यह रुख बना रहे। ता. १७ को मार्गी होकर बाजार में मन्दी देगा। इसका प्रभाव अगले दिन ता. १८ को होगा। तेजी यहां से रुकती हुई समझ में आ रही है और यह सम्भव है कि जिन वस्तुओं के भाव अनाप-शनाप बढ़े हों उनका भाव नीचे में आ जाए।

बुध की मंगल से कुम्भ राशि में दो बार युति यह दर्शाती है कि

वस्तुओं के भाव कृत्रिम रुप से बढ़ाया जाएगा और कम समय में ही कुछ वस्तुओं के भाव काफी बढ़ाए जाएंगे जिससे सभी लोग तेजी में आ जाएंगे और बाद में तेजड़िया वर्ग मैदान छोड़ देगा। अतः इस महीने सतर्क रहकर काम करना चाहिए। यहां पर केवल बुध का ही विचार किया जा रहा है अन्य ग्रहों का नहीं अतः जो वस्तुएं अन्य ग्रहों की हैं, उनकी तेजी-मन्दी उनकी आपसी योग पर निर्भर करेगी। फिर भी कमोडिटी बाजार इस महीने ता. १७ के पहले नहीं दबेगा और मन्दी के लक्षण होने पर ही बाजार टूटेगा। समझदारी से सौदा करिए और अच्छा मुनाफा कमाइए।

**अप्रैल**- महीने के शुरु में बुध कुम्भ राशि में नेपच्यून के साथ रहेगा। इससे तेजी की रफ्तार रहेगी फिर भी बाजार हल्की तेजी में रहेगा। गुरु से और राहु से केन्द्र योग रहने के कारण कुछ बाजार में मन्दी भी हो सकती है। तेज गति से चलता हुआ बुध मीन राशि पार कर जाएगा। मीन में यह हर्शल के सहयोग से तेजी को बनाए रखेगा। बाजार में रह-रहकर तेजी का उछाला आता रहेगा। ता. १५ तक जिन वस्तुओं मे मन्दा बनना है वह बन चुका रहेगा। इसके बाद तेजी में एक बार फिर आ जाएगा।

ता. १ को किराने के कुछ आइटम सौंफ, कालीमिर्च, लालमिर्च, धनिया, जीरा, लहसुन, अदरख का भाव बढ़ेगा। सोयाबीन और इसका तेल, मेन्था, पिपरमिन्ट, ग्वार में अचानक भाव बढ़ेगा। गेहूं, जौ, चना, के भाव में तेजी के लक्षण बनने लगेंगे। इसके बाद भाव दुतर्फा रुख लेकर तेजी मं चलेंगे। शुरुआती समय में भाव थमे रहकर बाद में धीमे-धीमे मजबूत होना शुरु होंगे। ता. २ के बाद बुध कमजोर होता ज़ाएगा जिससे बाजार कुछ दबेंगे। यहां से दो सप्ताह तक तेजी के लिए इन्तजार

करना होगा। पिछले मार्च महीने से विदेशों में कमोडिटी बाजार में अनाज, तेल-तिलहन, पॉम आयल, सोयाबीन मक्का में तेजी के समाचार आने लगेंगे जिससे यहां मार्च में तो तेजी बनी रहेगी लेकिन इस महीने यहां भी तेजी का माहौल बनेगा। मास मध्य बीतने के बाद सभी अनाजों में तेजी का रुख बनेगा। रस-कस, दुग्ध पदार्थ, डेयरी उत्पाद, किराना सभी में तेजी का रुख बनेगा। जानवरों का चारा भी इस महीने तेजी में आ जाएगा। खल-बिनौला का भाव ऊपर का रुख करेगा। ता. १० की अमावस्या मन्दी को सहयोग देने वाली है। अगले ही दिन मन्दा दूर होकर ता. १२ को तेजी का उछाला देखने को मिलेगा। गेहूं, चना, मूंग, मटर, मसूर, जीरा, कालीमिर्च, लालमिर्च, सरसों, जायफल, हल्दी, पिपरमिन्ट, केशर, तिल में तेजी का उछाला आएगा। कमोडिटी बाजार N.C.D.E.X., M.C.X. में तेजी का जोर रहेगा। कुछ में ऊपर का सर्किट भी लग सकता है। बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्य तेजी को बढ़ावा देने वाला है। इसके बाद बाजार आगे की तेजी की तैयारी में लग जाएगा। बाजार एक दायरे में लगभग ता. २१ तक चलता रहेगा लेकिन ऊपर लिखी वस्तुओं में से कुछ के भाव तेजी में बने रहेंगे। ता. २२ से भाव ऊपर का रुख करने लगेंगे। मीन के आखिरी अंशो में यह कुछ कमजोर रहेगा। मीन इसकी अस्तगत एवं नीच की राशि है और अन्य ग्रहों का सहयोग न मिलने से तेजी रुकी रहेगी। ता. २४ को गुरु से त्रिरेकादश बनाकर हल्की तेजी देगा। ता. २८ को यह मेष राशि में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बना रहा है और बाजार यहीं से तेजी में चल पड़ेगा।

देश में इस महीने कमोडिटी बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। महीने के शुरु में ही यह दिखलाई पड़ने लगेगा। ता. ६ से ११ के बीच तेजी का ज्वार देखने को मिलेगा। सभी खरीदने में लगे रहेंगे।

केवल कमोडिटी बाजार ही नहीं स्टाक मार्केट, धातु-बाजार सभी में तेजी का उफान बनेगा। फिर ता. १५ से २२ के बीच इकतरफा तेजी का उफान रहेगा। अतः इस महीने मन्दी का सौदा भूलकर भी नही करना चाहिए। ता. २० को बुध-हर्शल युति सभी अनाज, रस-कस, चीनी-गुड़, तिल-तेलहन, सभी का भाव तेजी में रहेगा। इस महीने मुनाफावसूली भी जमकर होगी जिससे अचानक बिकवाली होने से बाजार किसी-किसी दिन काफी नीचे भी जाएगा। इसको मन्दी का लक्षण नहीं समझना चाहिए।

**मई**-आर्थिक जगत में हलचल बनी रहेगी। विश्व की अनेक मुद्राएं दबाव में रहेगी तथा अनेक मुद्राओं का पतन होगा। इस सबसे कमोडिटी बाजार में तेजड़ियों को खुला मैदान मिलेगा और इस महीने कमोडिटी बाजार उनकी गिरफ्त में रहेगा। ता. १० का सूर्य ग्रहण तेजी को बढ़ाने वाला है। तेजी रहते हुए भी कुछ अनाजों के भाव में तेजी नहीं बन सकेगी। कुछ के भाव लगातार बढ़ते जाएंगे। ता. १३ को बुध वृष में प्रवेश करके मंगल, सूर्य, शुक्र, गुरु सभी से युति करेगा। इससे उसकी ताकत बढ़ती जाएगी और २० मई से सभी के नियन्त्रण से बाहर हो जाएगा। ताकत अधिक बढ़ने से इसकी कुछ ताकत करीब के ग्रह शुक्र को प्रभावित करेगी और वह भी २४ मई से मनमाना व्यवहार करेगा। दोनों ग्रह नियन्त्रण से बाहर होकर एक दूसरे से सहयोग करेंगे जिससे मंहगाई बेलगाम होगी। बुध अपने स्वभाव के कारण तेजी-मन्दी दोनों को समय-समय पर साथ देता रहेगा।

पिछले महीने का ट्रेन्ड इस महीने के शुरु में जारी रहेगा। ता. ३ को मटर, मूंग, हल्दी, तिल, उड़द, काली मिर्च में मन्दी का रुख रहेगा। ता. ५ को बुध-तुला के शनि से प्रतियुति करेगा जिससे सौंफ,

काली मिर्च, जौ, मक्का, धनिया, जीरा, लहसुन, उड़द, मेथी में तेजी बनेगी। अगले ही दिन भाव का बढ़ना रुकेगा। ता. ७ को मन्दी का भाव कुछ जिन्सों में दिखाई देगा। ता. ८ को बुध-मंगल युति से बाजार में अफरा-तंफरी मचेगी। यह स्थिति आगे ता. १३ या १४ तक बनी रहेगी। भाव तेजी से ऊपर-नीचे होंगे और कमोडिटी बाजार में कुछ वस्तुओं पर निश्चय ही ऊपर का सर्किट लगेगा। ता. ९ को बुध-राहु प्रतियुति से तेजी को बल मिलेगा। ता. १० को सूर्य ग्रहण के कारण मन्दा हो सकता है, कारण बुध उस समय राहु से क्रान्तिसाम्य की स्थिति में रहेगा। ता. ११ या १२ को बाजार मन्दी में रहेगा। कुछ अनाजों के भाव काफी दब जाएंगे। इस दिन मुनाफा वसूली के कारण कमोडिटी बाजार में भाव नीचे जाएगा। ता. १५ को एक बार बाजार फिर दबेगा। एक सप्ताह में कुछ वस्तुओं के भाव काफी नीचे जा सकते हैं। ता. १० के ग्रहण के बाद ही बुध-सूर्य की ता. ११ को बहिर्युति मन्दी देकर एक सप्ताह बाजार दबाए रख सकती है। ता. १८ से बाजार की दिशा बदलेगा। इस दिन बाजार तेजी देखेगा। ता. २० से नियन्त्रण से बाहर होकर ता. २४ को शुक्र से युति करेगा। युति तेजी कारक है। सभी दलहन-तिलहन-अनाज, गुड़-चीनी, रस-कस में तेजी का जोर बढ़ेगा। तेजी बढ़ाने में इस समय बुध को सभी ग्रहों का सहयोग मिलेगा। इस समय एकाध वस्तुओं के भाव नया रिकार्ड भी बनाएंगे। शुक्र से युति करने के पहले यह एक मन्दा देकर तब भाव बढ़ाएगा। ता. २७ को वृष के आखिरी अंश में गुरु से युति होगी जिससे शाक-सब्जियों के भाव में तेजी, रस-कस महंगा, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों तेल के भाव में तेजी का रुख बन जाएगा। महीने के अन्त में बाजार तेंजी में ही रहेगा और अफरा-तफरी रहेगी। बादाम, सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग, केशर, पिस्ता,

पिपरमिन्ट, मेन्था, के भाव तेजी में रहेंगे। दलहन के कुछ जिन्स भी अच्छे बढ़ेंगे। जनवरी से जारी मजबूती इस महीने भी बनी रहेगी। इतनी लम्बी मजबूती बाजार में अभी तक नहीं दिखाई दी है। विश्वव्यापी मौसम में उपद्रव होने, पैदावार की कमी, आवक में कमी तथा मांग अधिक होने से यह सब होगा। अगले महीने से बाजार में मन्दी के झटके लगना शुरु हो जाएगा।

**जून**- इस महीने अधिकतर ग्रह बहुत करीब चलेंगे। बुध की गति घटती जाएगी। ता. २६ को यह पुनर्वसु नक्षत्र में वक्री हो जाएगा और बाजार की तेजी एक स्तर पर जाकर ठहर जाएगी। कुछ वस्तुओं में मन्दी का भी रुख बनेगा। भाव टूटेगा नहीं लेकिन पहले से घटेगा। मानसून की स्थिति गड़बड़ होगी। अनेक स्थानों में बारिश की कमी इस वर्ष भी महसूस होगी। उत्तर भारत के अधिकतर भागों में ९ जुलाई के पहले पहुंचने की आशा नहीं है। आगे भी वर्षा अवरोध बना रहेगा। यह भी संभावना बन रही है कि मानसून सन २०१२ से भी कमजोर रहेगा। इस स्थिति में फसल की बिजाई कम होगी और कृषि उत्पादन पर असर पड़ेगा। इसलिए मंहगाई एक्सप्रेस यदि किसी महीने ठहर भी जाए तो मन्दी आने वाली नहीं रहेगी। भाव थोड़ा नीचे जाने के बाद अगली तेजी के लिए तैयारी शुरु हो जाएगी।

ता. ३-४ को नेपच्यून-शनि से बुध त्रिकोण योग बनाएगा। इससे बाजार मन्दी में जाएगा। कमोडिटी बाजार में यह Turning Point होगा। दो दिन मन्दा देखने के बाद ता. ७ को यह प्लूटो से प्रतियुति करेगा जिससे ता. ८ को कुछ वस्तुओं में नीचे का रुख बना रहेगा। अगले ही दिन हर्शल से केन्द्र योग बनेगा। ता. ९ को भाव तेजी का रुख करेगा। ता. १० को बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्य होगा यहां से

बाजार तेजी में चल देगा। अनाज-डेयरी उत्पाद के साथ ही इस महीने मेवे कें बाजार की कई वस्तुएं तेजी का रुख करेंगी। बादाम, सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग, जीरा, जायफल, हल्दी, मूंगफली, अखरोट, धनिया, पिपरमिन्ट, केशर, के भाव अचानक बढ़ेंगे। ता. १२ को भाव प्रतिक्रिया में दब सकता है, निश्चित नहीं है। इस महीने कपास, सूत, हैसियन, जूट में भी तेजी का रुख बनेगा। इसके बाद दूसरी मन्दी की संभावित तारीख १७ हो सकती है जब बाजार का रुख कमजोर हो जाए।

ता. १३ से बुध नियन्त्रण में आ जाएगा। कमोडिटी बाजार में अभी तक तेज उठा-पटक का प्रमुख रुप से जिम्मेदार बाजार में कुछ दिन के लिए शान्ति देगा। कुछ क्षेत्र को छोड़कर बाकी सभी में जिनमें लगातार तेजी चल रही थी उनमें तेजी का ज्वार रुकेगा।

ता. १३ को सूर्य-बुध क्रान्तिसाम्य से बाजार एक बार हल्का दबकर तुरन्त फिर ऊपर आ जाएगा। इसके बाद धीमी गति से संचार करता हुआ ता. २१ को शुक्र से युति करेगा। जूट, कपास, सरसों, सूत, कपड़ा में तेजी का रुख बनेगा। डेयरी उत्पाद के भाव बढ़ेंगे। बुध मिथुन में रहता हुआ सभी ग्रहों से सम्बन्ध बना रहा है। गुरु के साथ इसी राशि में बना रहेगा साथ ही सूर्य, मंगल, शुक्र, से युति करेगा। शनि-राहु और नेपच्यून से त्रिकोण योग बनाएगा तथा हर्शल से केन्द्र तथा प्लूटो से प्रतियुति की स्थिति बनाएगा। विश्व के सभी बाजारों में तेज हलचल होगी। कहीं पर तेजी का गुब्बारा जरुरत से अधिक फूलकर फट जाएगा। ता. २५ को प्लूटो से क्रान्तिसाम्य बनाकर बाजार को दबाएगा और ता. २६ को वक्री हो जाएगा। इसके बाद कोई महत्वपूर्ण योग नहीं बना रहा है। महीने के अन्त तक बाजार खामोशी में चलता रहेगा।

**जुलाई**-पिछले महीने की तारीख २१ के बाद बाजार में कमजोरी आना शुरु हो जाएगी। महीने के शुरु में बुध वक्री रहकर मिथुन में संचार करेगा जबकि शुक्र से इसका साथ छूट जाएगा और मंगल का साथ होगा। वक्री होने के बाद बाजार में तेजी बनाए रखने की शक्ति बहुत कुछ इस-महीने गंवा देगा। अधिकतर अनाजों में एव तिलहन में यह मन्दी देगा। फिर भी एक महत्वपूर्ण योग यह भी बन रहा है कि मानसून कमजोर रहे। मानसून कमजोर रहने का मतलब कि बाजार बहुत नीचे नहीं जाएगा और बाजार गिरने के बाद जल्दी ही तेजी में आ जाएगा। ता. ८ की अमावस्या मन्दीकारक है जबकि पूर्णिमा भी तेजीकारक नहीं बन रही है। फिर भी पूरे बाजार में मन्दी नहीं फैल पाएगी। ता. २० को बुध मार्गी होगा और जिस वस्तु का भाव नीचे में जाना है वह जा चुका रहेगा। इसके बाद भाव का संभलना शुरु हो जाएगा हालांकि मन्दी के झटके रह-रहकर लगते रहेंगे।

बुध अपने वक्रत्व काल में जिस वस्तुओं के भाव अनाप-शनाप बढ़े हों या जिनका भाव फर्जी अथवा धोखे का बनाया गया हो उनको जल्दी ही यह नीचे भी ले आ देता है। मई में जिस वस्तु का दाम जरुरत से अधिक बढ़ गया होगा उनका भाव इस महीने नीचे का बनेगा। ऐसी वस्तु की तेजी में जून में जल्दी-से जल्दी निकल जाना चाहिए।

ता. २ को मंगल-बुध का द्विर्द्वादश योग जल्दी ही मन्दी देगा। एक सप्ताह में अनेक वस्तुओं के भाव दबेंगे। चना, गेहूं, सरसों, मटर, मूंग, मसूर, गुड़-चीनी, में मन्दी का भाव ता. ५-६ तक बन जाएगा। मन्दी का झटका अच्छा लगेगा। इस महीने धीमी गति और एक ही राशि में भ्रमण करने के कारण यह अन्य ग्रहों से बहुत कम योग बना रहा है। इससे जिन वस्तुओं पर इसका प्रभाव पड़ेगा वह थोड़े दिनों के लिए बना

रहेगा। ता. ९ को यह सूर्य से अर्न्तयुति करेगा जिससे एक बार दबकर जल्दी हो ऊँचा होगा। अनाज के भाव तेजी में आ सकते है।

ता. ११ को एक ही दिन में शुक्र के साथ क्रान्तिसाम्य और द्विर्द्वादश योग बना रहा है। ता. १६ को राहु से त्रिकोण योग बन रहा है। सट्टे के बाजार में इन तारीखों के बीच उठा-पटक जमकर होगी। चना, मूंग, मटर, सरसों, काली मिर्च, लाल मिर्च, सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग में गिरावट दर्ज होगी। ता. २० को मार्गी होकर २१ को शुक्र से अर्धकेन्द्र बनाएगा। ता. १८ से २२ के बीच हर्शल से केन्द्र योग की स्थिति में रहेगा। अत: १८ से २३ के बीच में बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बन सकती है। अनाज के अनेक जिन्सों तथा किराना के आइटम का भाव दबेगा। किराना बाजार पर इस महीने इसका विशेष प्रभाव न होने से अधिकतर वस्तुओं के भाव सुस्त पड़े रहेंगे या दबेंगे। ता. १७ के बाद ग्वार में तेजी का रुख बनाएगा और भाव बढ़ते रहेंगे। ता. २८ के बाद तेजी और बढ़ जाएगी। यह भी हो सकता है कि ग्वार का भाव यहां से भड़क जाए और बहुत तेजी से ऊपर उठे। ता. २५ को सूर्य से और ता. २७ को प्लूटो से क्रान्तिसाम्य कर रहा है इससे बाजार दबेगा या कुछ वस्तुओं के भाव सुस्ती में पड़े रहेंगे।

जुलाई महीने में बने ग्रह योगों से लगता है कि यह महीना हाजिर में सुस्त रहने के साथ ही कमोडिटी बाजार में भी विशेष उतार-चढ़ाव का नहीं होगा। फिर भी बुध के अधिकार क्षेत्र के बाहर की वस्तुओं का भाव नही घटेगा और उनमें तेजी बनी रहेगी। सम्पूर्ण बाजार की दृष्टि से देखें तो बाजार में कुछ जिन्सों को छोड़कर सभी वस्तुएं मजबूत और तेज़ी में रहेगी। मानसून पर निगाह रखें। कमजोर मानसून से तेजी बनी रहेगी।

**अगस्त**- रंग और स्वाभाव बदलने में माहिर यह ग्रह पिछली बार वक्री होकर अपना चोला बदल दिया है। इसके अधिकार क्षेत्र की वस्तुएं अब दबी रहेंगी और यदि किसी जिन्स में कभी उछाल आया भी तो वह दूध के उबाल की तरह होगा। जल्दी ही उसका भाव नीचे में आ जाएगा। अतः इसके अधिकार क्षेत्र वाली वस्तुओं में इस महीने काम नहीं करना चाहिए। कमोडिटी बाजार में भी सुस्ती दिखलाई पड़ेगी। अधिकांश वस्तुओं के भाव एक सीमित दायरे में चलेंगे। किसी जिन्स में यदि तेजी का रुख दिखाई भी पड़े तो वह हफ्ता, १० दिन चलने के बाद शान्त हो जाएगा।

महीने के शुरु में इसका कोई प्रमुख योग नहीं बन रहा है। ता. ४ को यह कर्क राशि में प्रवेश कर रहा है। सूर्य पहले से ही इसमें चल रहा है। इसके पीछे मंगल चल रहा है जिससे यह नियन्त्रण में है और बंधा हुआ है। कर्क में प्रवेश करने के साथ ही ता. ५ को चन्द्रमा से युति होगी और मन्दी का तेज धमाका होगा। दलहन के भाव में मन्दी बनेगी। रस-कस पदार्थ सस्ते होंगे। किराने के आइटम भी दबेंगे। सौंफ, काली मिर्च, इलायची, लाल मिर्च, लौंग, जीरा, लहसुन, अदरख, सरसों, हल्दी, के भाव दबेंगे। आगे जल्दी ही अधिकांश वस्तुओं के भाव संभलते दिखाई देंगे लेकिन अधिक नहीं उठ पाएंगे। ता. ११ को शनि से केन्द्र बनेगा इससे दबे हुए भाव उठ नहीं पाएंगे बल्कि कुछ और वस्तुओं के भाव दबेंगे। ता. १४ को राहु से केन्द्र बनेगा और मन्दी का रुख फिर बनेगा। अभी तक यह बाजार में बराबर रुक-रुककर मन्दी का ही रुख अपने अधिकार क्षेत्र की वस्तुओं का करेगा। ता. १५ को हर्शल से त्रिकोण बनाएगा जिससे अनाज के कुछ जिन्स के भावों में सुधार होगा लेकिन अगले दिन भाव फिर दब जाएगा।

ता. २० को मंगल का साथ छोड़कर सिंह में प्रवेश करेगा। यहां यह सूर्य के साथ रहेगा। ग्वार की तेजी बनी रहेगी। इसका भाव तेजी में जाएगा और महीने के अन्त तक तेजी में ही रहेगा। सिंह में प्रवेश करने के बाद एक बार फिर इसका स्वाभाव बदलेगा। बाज़ार की तेजी बढ़ाने में यह अपनी भूमिका निभाएगा। किराने की सभी वस्तुओं में भाव बढ़ाने में सहयोग देगा। अनाज के भाव भी मजबूत होना शुरु हो जाएंगे। गेहूं, जौ, मटर, मूंग, गुड़, चीनी, जड़ी-बूटी, दालचीनी, लौंग, काली मिर्च, के भाव मजबूत होंगे। ता. २४ को सूर्य-बुध युति होगी और इसका बुरा प्रभाव मौसम पर पड़ेगा। बारिश में अवरोध होगा और पहले का कमजोर मानसून और कमजोर हो जाएगा। इसका असर बाजार के वस्तुओं के भाव पर होगा। भाव एक बार फिर मजबूत होना शुरु कर देंगे। ता. २६ को नेपच्यून से प्रतियुति करेगा जिससे ता. २६ को एक मन्दा आने के बाद ता. २८ को बाजार संभलता दिखाई देगा। ता. ३१ को बाजार में हल्की तेजी रहेगी।

महीने के शुरु में मन्दी का माहौल पैदा करके बाजार दबाए रखेगा लेकिन मास मध्य के बाद बांजार को धीमे-धीमे संभालना शुरु कर देगा। महीने के अन्त में बाजार मजबूती में रहेगा। इस महीने शुरु में खरीदकर चलें। N.C.D.E.X. या M.C.X. में ता. २० की कटान के बाद खरीदकर चलना चाहिए और मुनाफे को महीने के अन्त में वसूल लें।

**सितम्बर**- इस महीने भी तेजी का रुख नहीं बन पाएगा। बुध सभी तरह का रुप दिखलाएगा। महीने के शुरु में बाजार को हल्की तेजी देने में समर्थ रहेगा। बाद में यह मन्दी ले आने में सहयोग देगा। महीने के कुछ समय निष्पक्ष रहेगा। न ही तेजी में शामिल होगा और न ही

मन्दी में अधिकतर वस्तुओं के भाव पड़े रहेंगे और यदि बढ़े भी तो कुछ बढ़ने के बाद शान्त हो जाएंगे। रस-कस, गुड़-चीनी, खांड, नमक, मूंग, मोंठ, कुलथी, अलसी, उड़द, सूती व रेशमी वस्त्र, तिल-तिलहन, हैसियन के भाव एक सीमा के बाद रुकना शुरु करेंगे और कुछ के भाव बढ़ेंगे। घी, तेल, तरल पदार्थ के भाव भी घटेंगे। बिगड़ा हुआ मौसम, बारिश की कमी का बाजार पर असर पड़ने से भाव टूटने नहीं पाएगा। मंहगाई से त्रस्त लोग की क्रय शक्ति घटने के कारण बाजार में मांग अधिक नहीं होगी। इसके कारण तेजड़िया-सटोरिया या स्टाकिस्ट तेजी को बढ़ा नहीं सकेंगे। पिछले महीने से स्टाकिस्ट माल रोकना शुरु कर देंगे और इस महीने भी मौसम को देखते हुए कोई भी माल बाहर नहीं निकालना चाहेगा। नतीजा आगे आने वाले त्यौहारी सीजन में दीपावली पर मंहगाई का जोर शबाब पर होगा। मंहगाई से मुद्रा की साख गिरेगी। अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में रुपए की कीमत चिन्ता का विषय होगी।

**सितम्बर**-ता. २ को बुध का मंगल से अर्धकेन्द्र होगा। इससे मूंग, मोंठ, उड़द, मूंगफली, सरसों, तेल के भाव में हल्की कमी आकर जल्दी ही बाजार ऊँचा होगा। इसी समय हल्दी का भाव भी अचानक दबेगा। ता. ४ को गिरा हुआ भाव सुधर जाएगा। ता. ५ को बुध रात में कन्या राशि में प्रवेश करेगा। इससे ता. ६ को अनाज, चावल, उड़द, सरसों, अलसी, मटर, नारियल, रुई, रेशम, के भाव में नरमी बनेगी। सर्राफा बाजार में भी हलचल होगी।

ता. ८ को सट्टे की कुछ जिन्सों में एक उछाल आएगा और इसी दिन शान्त भी हो जाएगा। भाव का बढ़ना तेजी न समझें भले ही तेजी का सर्किट क्यों न लग जाए। धीमे-धीमे चलता बाजार अचानक ता. १४ को सूर्य-बुध क्रान्तिसाम्य और बुध-राहु द्विर्द्वादश से दो दिन

मन्दी दुतर्फा रुख के साथ देखेगा। ता. १६ को यह मीन राशि के हर्शल से प्रतियुति करेगा और अनाजों में दुतर्फा रुख के साथ तेजी देगा। ता. २० को यह गुरु से केन्द्र योग बनाएगा। इस दिन सट्टे के सभी बाजार धराशायी होंगे। अनाज का भाव नीचे जाएगा। उड़द, मटर, मूंग, कपास, रुई, सूत, कपड़ा, हैसियन, जूट, हल्दी, सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग, केशर, पिस्ता के भाव नीचे का रुख करेंगे। ता. २५ को यह चित्रा नक्षत्र से युति करेगा। चित्रा नक्षत्र व्यापार में मन्दी देने वाला है। मक्का, अजवायन, मेथी, पिपरमिन्ट, मेन्था, लौंग, सौंफ में गिरावट दर्ज होगी। चित्रा नक्षत्र से युति करने के बाद ही तुला राशि में प्रवेश कर रहा है। तुला में शनि, राहु, शुक्र, पहले से भ्रमण कर रहे हैं। उनके साथ मिलकर यह धमा-चौकड़ी मचा देगा। फिर भी अधिक उपद्रव नहीं कर सकेगा। ता. २७ से यह नियन्त्रण में हो जाएगा और ता. ३० से बाजार की चाल को सहयोग देने वाला होगा। इस महीने बाजार रुख समझ में न आने वाला रहेगा। व्यापारी आने वाले समय के प्रति संशकित रहेंगे। बाजार की उठा पटक में ट्रेडिंग लगातार करते रहने से अच्छा फायदा मिलेगा।

**अक्टूबर**- इस महीने तुला राशि में विशाखा नक्षत्र में ता. १२ को प्रवेश करके ता. २१ को वक्री होगा। यह इस राशि में शनि और राहु से दो बार युति करेगा। सूर्य से भी दो बार युति होगी। इस सबसे बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति इस महीने बनेगी। ता. ९ को यह सूर्य से सबसे अधिक दूरी पर रहेगा और इसके बाद सूर्य से दूरी घटती जाएगी। बाजार का Turning Point इसी तारीख के आस-पास बनेगा।

महीने की शुरुआत में बाजार पिछली रफ्तार में चलता हुआ कुछ कमजोरी के लक्षण दिखाएगा। ता. ५ को राहु से पहली युति

होगी। इसके आस-पास मन्दी का एक झटका लगेगा। ता. ३ से ६ के बीच एक झटका नीचे का लगना चाहिए। मन्दी ता. ७ को भी जारी रह सकती है। ता. ८ को यह शनि से पहली युति करेगा। अनेक दलहन, उड़द, मूंग, मसूर, मटर, काली मिर्च, अजवायन, मक्का, पिपरमिन्ट, सौंफ़, लौंग, कपड़ा, सूत, कपास, रुई, में भी मन्दी का तेज झटका लगेगा। ता. ७ को चन्द्रमा, राहु, बुध, शनि, तीनो से युति करके अफरा-तफरी की स्थिति पैदा करेगा। इस समय बाजार में अफवाहों का जोर भी बन सकता है और झूठी खबरों से भाव ता. ७ और ८ को अच्छे दब सकते हैं। ता. १२ से २० के बीच अनेक दुर्योग बनेगा। ता. १२ को सूर्य-गुरु केन्द्र से अनाज के कई जिन्सों का भाव दबेगा। ता. १३ को शनि का क्रान्तिसाम्य चन्द्रमा और मंगल से होगा। बाजार की धारणा मजबूत नहीं हो पाएगी। ता. १७ को चन्द्र-हर्शल युति से दिन में गिरा बाजार अगले दिन संभल सकता है। ता. २१ को बुध वक्री होगा। यहां से बाजार की गिरावट रुकेगी। ता. २३ को बुध अस्त होकर बाजार को संभाले रखेगा।

ता. १२ से १८ के बीच बाजार में तेज गिरावट का रुख लग रहा है। इसलिए इस महीने में बहुत सतर्क रहकर काम करना चाहिए। जैसा लिखा जा रहा है यदि वैसा ही घटित होता गया तो इस महीनें अल्प समय में हीं मन्दड़िए बाजार पर हावी होने की कोशिश करेंगे। फिर भी मन्दी की लाइन लम्बी नहीं चल सकेगी लेकिन सट्टे में यदि सौदा नहीं संभाल सके तो घाटा लम्बा हो जाएगा। इस महीने सट्टे में जब भी सौदा करें Stop Loss जरुर लगाएं जिससे सौदा उल्टा होने पर लम्बे नुकसान से बच सकें। ता. २८ को कुछ वस्तुओं के भाव सुधरते हुए दिखाई देंगे। ता. २९ को वक्री बुध स्वाती में प्रवेश कर

जाएगा। यहां से भाव का गिरना रुका रहेगा।

सभी तेल-तिलहन में इस समय अच्छा मन्दा होना चाहिए। सोयाबीन का भाव कम टूटना चाहिए। मूंगफली और इसके तेल पर असर पड़ेगा। सूरजमुखी तेल भी टूटेगा। सरसों और इसका तेल कम दबेगा। एरण्डा बचा रहेगा। गरी-नारियल तेल हल्का दबेगा। अफरा-तफरी का दौर महीने के आरम्भ से शुरु होकर महीने के अन्त तक बना रहेगा। कम पूंजीवालों को इस समय सट्टे के चक्कर में नहीं फंसना चाहिए।

**नवम्बर**- पिछले महीने बुध ने वक्री होकर बाजार में घबड़ाहट और अफरा-तफरी तथा अनिश्चय की स्थिति पैदा करके बाजार को एक हफ्ते, १० दिन के अन्दर मन्दी में ढकेल दिया तो इस महीने मार्गी होकर यह स्थिति को बनाए रखेगा। पिछले महीने यह सूर्य से अधिकतम दूरी पर जाकर बाजार में अनिश्चय पैदा किया तो इस महीने के शुरु में ता. २ को सूर्य से निकटतम होकर अर्न्तयुति करेगा और धीमे-धीमे बाजार की धारणा बदलकर तेजी की दिशा देगा। अगले ही दिन अमावस्या हो रही हैऔर इसी दिन दीपावली हैं। ता. ३ की अमावस्या को खग्रास सूर्य-ग्रहण हो रहा है। यह ग्रहण आगे आने वाले समय के लिए तेजीकारक है। इससे पहले का स्टाक किया माल अगले वर्ष में अच्छा मुनाफा देगा। अगले वर्ष के लिए खरीदकर स्टाक करके चलना चाहिए।

ता. १ को बुध-मंगल त्रिरेकादश से अनाज महंगे होंगे। सोयाबीन, मक्का, सरसों, चना, तेल-तिलहन के भाव सुधरेंगे। ग्वार का भाव भी बढ़ेगा। ता. २ को सूर्य-बुध युति से बाजार में एक मन्दा आकर फिर सुधर जाएगा। ता. ३ को बुध-राहु युति के अतिरिक्त चन्द्रमा भी बुध और राहु दोंनो से युति कर रहा है। शाम को सूर्य-चन्द्र युति हो रही है।

इससे दिन भर जमकर उठा-पटक होती रहेगी। अनेक वस्तुओं के भा तेजी से नीचे-ऊपर होंगे। दीपावली होने के कारण इस दि N.C.D.E.X. और M.C.X. में मुहूर्त कारोबार होगा। इस दिन खरीदक चलना चाहिए। आज का लिया हुआ सौदा जल्दी ही मुनाफा लेक काट दें। ता. ६ को बाजार बन्द होने के समय मन्दा मारने का योग है ता. ७ को बाजार सुधर जाएगा। बुध इस महीने धीमी गति से चलने के कारण अन्य ग्रहों से बहुत कम योग बना रहा है। धीमे-धीमे यह बाजा को ऊपर की ओर ले जाएगा। महीने के शुरु से ही यह ग्वार के भाव मे तेजी ले आएगा और हो सकता है कि इस पूरे महीने यह ग्वार में तेजी बनाए रखे। ता. ९ को नेपच्यून से त्रिकोण होगा। इलेक्ट्रानिक सामान, मोबाइल, जूट, हैसियन में तेजी देगा। पिपरमिन्ट के भाव में एक उछाल इस तारीख के आस-पास सम्भव है। खसखस, दालचीनी, लौंग के अलावा किराने के अनेक आइटम में तेजी बन सकती है। ज्वार-बाजरा, जौ, मोटे अनाज में तेजी देगा। शुक्र से त्रिकोण बनाकर धान्य, दवा, आलू, तिल, खांड, सभी अनाज, दुग्ध उत्पाद, चीनी, कास्मेटिक, मनोरंजन की वस्तुओं के भाव बढ़ाएगा। हर्शल से षडाष्टक योग बनाकर गेहूं, जौ, चना, अनाज में तेजी देगा। ता. २३ को राहु से तीसरी अन्तिम युति करेगा। इस समय यह सभी वस्तुओं में तेजी देगा। भाव धीमे-धीमे बढ़ते जाएंगे। गुड़-खाड़-चना, सरसों, मुनक्का, पीतल, कपड़ा सभी में तेजीकारक रहेगा। ग्वार, अरहर, खेसारी, सौंफ, उड़द, जूट-पाट, रेशम में तेजी देगा। ता. २४ को विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करके ता. २६ को शनि से युति करेगा अतः २४ से ही इसका प्रभाव पड़ना चाहिए। शनि से इसकी तीसरी और महत्वपूर्ण युति हो रही है। इसमें बुध की शनि से बहुत कम दूरी रहेगी। शनि से यह केवल २० कला की दूरी से गुजरेगा।

खगोलीय दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। चूकिं युति का समय दिन का है इसलिए यह दृश्य नहीं होगी। तिलहन-तेल, तिल, तोरिया, काली, उड़द, केशर, पिस्ता, बादाम में भाव सुधरेंगे।

महीने का अन्त सुधरे बाजार से होगा।

**दिसम्बर**- इस महीने ग्रहों का जमघट दूर होना शुरु होगा और वह अपने स्वभाव के अनुसार फ़ल देंगे। बुध लगभग पूरे महीने पिता (सूर्य) और पुत्र (शनि) के बीच फंसा रहेगा और मंगल की राशि वृश्चिक तथा धनु में संचार करेगा। अन्य ग्रहों से कोई विशेष योग नहीं बना रहा है लेकिन अपने आप में एक विशेष योग बना रहा है। अपने नक्षत्र ज्येष्ठा में प्रवेश करने के बाद यह नियन्त्रण से बाहर हो जा रहा है जिससे सभी खाद्य पदार्थ में यह तेजी ले आएगा। गुड़-चीनी, गेहूं, जौ, चना, सोयाबीन, मेन्था, एरण्डा, अलसी में तेजी का रुख बनेगा।

ता. १ को यह वृश्चिक में प्रवेश करके सूर्य का साथ पकड़ रहा है। इससे बाजार में मन्दी का एक तेज झटका लगेगा। अगले दिन बाजार संभलेगा। ता. ३ से मूंग, मटर, गेहूं काली और लाल मिर्च, चना, गेहूं में तेजी का भाव बनाएगा। इस दिन अनेक तेल-तिलहन में भी तेजी का रुख बनेगा। ग्वार में महीने के शुरु में तेजी का भाव चलता रहेगा हालांकि ता. १६ को मन्दी का एक तेज झटका इसमें लग सकता है। मन्दी का झटका अनेक वस्तुओं में लगेगा। ता. २० से बाजार में सुधार का रुख बनेगा। बुध के अधिकार वाली वस्तुएं इस समय कम बढ़ेंगी या उनके भाव रह-रहकर दबेंगे। ता. २९ को बुध अनेक वस्तुओं में मन्दी का तेज झटका देगा। अन्नादि पदार्थो में इस महीने कम ही समय के लिए भाव दबेगा। सभी अनाज के भाव धीमे-धीमे बढ़ते रहेंगे। अत: मन्दी का सौदा इस महीने नहीं करे तो ठीक रहेगा।

सन २०१३ में जनवरी से लेकर दिसम्बर तक अधिकांश समय केवल बुध के विचार से, तेजी का बन रहा है। मन्दी कम समय के लि होगी और बाजार फिर तेजी में चल देगा। अन्य ग्रहों का सहयोग मिल पर तेजी का दौर कुछ अधिक भी हो सकता है और भाव जरुरत अधिक बढ़ सकता है। इसलिए बाजार की तेजी के लिए दूसरी जग भी लिखा हुआ देखिए।

जहां पर भी बुध को नियन्त्रण के बाहर (Out of Control लिखा है वहां पर अधिक ध्यान दीजिए। बाजार में उस समय घटा-बढ़ तेज होगी। ऐसे में यदि आपका सौदा उल्टा पड़ जाए तो बाजार के विपरीत मत जाइए और सौदा तुरन्त काट दीजिए अन्यथा घाटा बढ़त जाएगा। बुध के वक्री समय में सौदा जांचकर करिए। वक्री स्थिति में अक्सर लोग गलत सौदा करेंगे। बुध इस वर्ष २३ फरवरी को कुम्भ राशि में पहली बार वक्री होगा और १७ मार्च को मार्गी होगा।

ता. २६ जून को दूसरी बार अपनी राशि मिथुन में वक्री होग और अगले महीने २० जुलाई को मिथुन में ही मार्गी होगा। तीसरी बा २१ अक्टूबर को तुला राशि में वक्री होगा और १० नवम्बर को तुला में ही मार्गी होगा। तीनों ही बार यह गुरु के नक्षत्र पू. भाद्रपद, पुनर्वसु औ विशाखा में वक्री हो रहा है। पीछे हटकर राहु के नक्षत्र शतभिषा, आर्द्रा और स्वाती में मार्गी हो रहा है। इस सबके विषय में मेरी अलग से भी जिन्स पर तैयार होने वाली रिपोर्ट में विचार होगा।

यदि आप अलग से कोई रिपोर्ट मंगवाना चाहते है तो हमसे सम्पर्क करिए। यह ध्यान रहे कि अगला वर्ष २०१३ तेजी के विचार से बहुत महत्वपूर्ण रहेगा।

## कमोडिटी बाजार, NCDEX, MCX, का सामूहिक व्यापार चक्र

**संक्रान्ति फल-जनवरी-** सूर्य की मकर संक्रान्ति सोमवारी हो गयी है। पिछली संक्रान्ति से वार ३, नक्षत्र ३ और मुहूर्त ४५ पर सूर्यदेव मकर में प्रवेश कर रहे हैं। संक्रान्ति पर मन्दी का एक तेज धमाका होकर जल्दी ही सभी अनाजों में तेजी बन जाएगी। पहले सप्ताह के अन्त में फिर सभी बाजार तेजी में चल पड़ेंगे। गेहूं, चना, मूंगफली, किराने के अनेक आइटम तेजी में आते रहेंगे। मन्दी मारते ही खरीदकर चलें। दूसरे सप्ताह में बाजार फिर तेज हो जाएगा। तेजी की रफ्तार तीसरे-चौथे सप्ताह में कुछ कम होगी। चांदी के साथ सोना भी तेज होगा।

**जनवरी-** वर्ष की शुरुआत में ता. ४ से धनु में चतुर्ग्रही योग बन रहा है और पौषी अमावस्या पर पंचग्रही योग हो जा रहा है। इस पर शनि की पूर्ण तृतीय दृष्टि पड़ रही है। ता. १४ को स्पष्ट राहु तुला में प्रवेश करेगा जहां वह पूरे वर्ष रहेगा। शनि-राहु का साथ पूरे वर्ष ही व्यापार जगत को प्रभावित करेगा। इस महीने मंगल अपनी उच्च राशि मकर में चलता हुआ शनि-राहु से केन्द्र योग में रहेगा। वृष का वक्री गुरु, मंगल से त्रिकोण में और नेपच्यून से केन्द्र में रहेगा। इससे बाजार में बराबर उलट-फेर होगा। ता. १५ तक बुध नियन्त्रण के बाहर रहेगा। यह बाजार को स्थिर नहीं होने देगा और बाजार रुख दुतर्फा बना रहेगा। पिछले महीने के अन्तिम दिनों से ही इस महीने ता. ८ तक बाजार में तेजी से उतार-चढ़ाव बना रहेगा।

इस महीने ता. ४ को शुक्र धनु राशि में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा जिससे बाजार तेजी का हो जाएगा। ता. ५ से कुछ

वस्तुओं के भाव तेजी में जाना शुरु करेंगे। ता. १ को मंगल-हर्शल का त्रिरेकादश होगा। जिससे चना, गुड़, सरसों, गेहूं, मसूर के भाव हल्के तेज होंगे। ता. ३ को जिस वस्तु के भाव बढ़े होंगे वह नीचे का रुख करेंगे। ता. ४ को शुक्र के धनु में प्रवेश के साथ ही मंगल का गुरु से त्रिकोण बनेगा। हल्दी, सरसों, आलू, तिल, रबड़ का भाव बढ़ेगा। सोयाबीन भी मजबूत होगा। खल-बिनौला का भाव बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के चलता रहेगा। तिलहन-तेल-वनस्पति, घी में कुछ तेजी का रुख बनेगा। ता. ७ को मंगल-शनि केन्द्र होगा। इस दिन कुछ विचित्र योग भी बन रहा है। धनु का बुध, मकर का मंगल, तुला का शनि और धनु का प्लूटो एक ही अंश पर है। चारो ग्रह अपनी राशि में १६ वे अंश पर रहेंगे। बुध-प्लूटो तुला के शनि से त्रिरेकादश, और मंगल से द्विर्द्वादश योग बनाकर केन्द्र योग को मजबूत कर रहे हैं। बाजार में इस दिन गिरावट का रुख बन सकता है। चना, सरसों, मूंग, मटर, उड़द, चना, मसूर का भाव दबेगा। इनमें कुछ का भाव अधिक भी गिर सकता है। बुध-प्लूटो युति मन्दीकारक रहेगी। इस महीने ता. १४ को राहु तुला में प्रवेश करके अन्य ग्रहों के सहयोग से बाजार में तेजी देगा। धनु में ता. ४ से चतुर्ग्रही योग बनेगा। सभी बाजारों में उलट-फेर चालू रहेगी। भाव दुतर्फा रुख से हल्की तेजी का रुख बनाएंगे। ता. ११ की अमावस्या पर पंचग्रही योग बन रहा है। ता. ११ से १३ के बीच बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। ता. १३ के चन्द्रदर्शन से बाजार रुख पलटना शुरु होगा। ता. १४ को कुछ वस्तुओं में तेजी तो कुछ में मन्दी का रुख बनेगा। चना अब तक नीचे का भाव देख चुका रहेगा। इस महीने के अन्त या अगले महीने में इसका भाव बढ़ना शुरु हो जाएगा। इसी के बाद ही अन्य वस्तुओं के भाव भी बढ़ेंगे। काली

मिर्च, धनिया, जीरा का भाव भी दब सकता है। एरण्ड में मन्दी का भाव दिखाई देगा। ता. १० या ११ को मन्दा मारकर अगले दिन बाजार फिर संभल जाएगा। N.C.D.E.X और M.C.X. में मन्दा ता. १३ तक रह सकता है।

ता. १४ से बाजार सुधरेगा। ता. १५ को बाजार में तेजी का उछाला बनेगा। सोयाबीन और इसका तेल, मूंगफली, अरहर, उड़द, मूंग दलहन में, अलसी और इसका तेल, रुई तेजी में आएंगे। ता. १७ को एरण्ड, चना, मसूर में भाव अधिक दब सकता है। एरण्ड में यहां से सावधान हो जाना चाहिए। इसका भाव आगे फिर दबेगा। ता. १७ की शुक्र-प्लूटो युति कई बाजारों में मन्दी देगी। ता. १८ को मकर राशि में सूर्य-बुध बहियुर्ति से अनाज के भाव हल्की तेजी देंगे। इस समय मकर राशि में सूर्य-बुध-मंगल का त्रिग्रही योग चल रहा है। बाजार में तेज उतार-चढ़ाव होकर तेजी का रुख बना रहेगा। ता. २१-२२ को अनाज, दलहन, तिलहन, सभी रस-कस, डेयरी उत्पाद में भाव या तो पड़े रहेंगे या हल्का दबेंगे। दबने पर अगले ही दिन तेजी में आ जाएंगे। ता. २५ को मंगल-राहु केन्द्र और बुध-शनि केन्द्र से दलहन-तिलहन-अनाज के भाव तेजी से नीचे जाएंगे। एरण्ड में भी भाव नीचे का रुख करेगा। अरहर, मूंग, मटर, सभी अनाज का भाव दब जाएगा। ता. २५ को मंगल कुम्भ में प्रवेश करके नेपच्यून का साथ पकड़ रहा है। कुम्भ में यह गुरु से केन्द्र योग बनाकर मन्दी देगा। चना, सरसों, काली मिर्च, लाल मिर्च, इलायची, पिपरमिन्ट, में मन्दी देगा। तेल-तिलहन का भाव भी घटेगा। इस महीने की विशेषता है कि सभी ग्रह मार्गी चल रहे हैं और कोई भी अस्त नहीं है। केवल गुरु वक्री चल रहा था लेकिन महीने के अन्त में वह भी मार्गी हो रहा है। ता. ३० को मार्गी होकर बाजार में

यथा-स्थिति बनाए रखेगा। बाजार लगभग पूरे महीने मन्दी का झटका खाने के बावजूद दबेगा नहीं। कुछ वस्तुएं जरुर नीचे का रुख करेंगी। इनमें तेजी का सौदा नहीं करना चाहिए। मटर, मूंग सरसों, चना, एरण्ड का भाव दब सकता है।

**संक्रान्ति फल-फरवरी**- सूर्यदेव कुम्भ में वार २ नक्षत्र ३ एवं मुहूर्त ३० पर प्रवेश कर रहे हैं। सट्टे में अनेक कृषि उत्पादन का भाव घटेगा। अनाज-दलहन-तिलहन, रस-कस की सभी वस्तुओं के भाव में पहले सप्ताह के बाद ही कमी होगी। तेल-घी का भाव भी घटेगा। संक्रान्ति के अन्त में भाव में फिर सुधार होगा। सोना-चांदी पहले सप्ताह में घटकर, दूसरे में तेज होगा। तीसरा सप्ताह भी तेजी में बीतेगा। आखिरी सप्ताह में बढ़े भाव से घटकर चलेगा।

**फरवरी**- महीने के शुरु में मकर में सूर्य-शुक्र साथ चलकर ता. १० की अमावस्या पर त्रिग्रही योग बन रहा है। नेपच्यून के साथ मंगल-बुध चलकर कुम्भ में त्रिग्रही योग बना रहे हैं। यहां तक अधिकांश बाजार में तेजी का रुख रहेगा। इसके बाद विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होगा। ता. २१ को शुक्र के कुम्भ में प्रवेश के बाद तेजी का जोर और बढ़ेगा। महीने का अन्त तेजी में ही होगा। इस महीने एक के बाद दूसरी पांच युतियां आपस में ग्रहों की हो रही है। इससे बाजार में काफी उलट-फेर होगा।

ता. २ को बुध उदय होकर कुम्भ में प्रवेश करेगा और दो दिन बाद ही नेपच्यून से मंगल की युति होगी। ता. ३ से ही बाजार में अपना प्रभाव डालेगा। ता. ३ को अनेक वस्तुओं के भाव में तेजी का संचार होगा। गुड़-चीनी, किशमिश, लौंग, चना, मसूर, मोंठ, सरसों, हल्दी, धनिया, लाल मिर्च, काली मिर्च, चपड़ा, लाख में तेजी का माहौल

बनेगा। ता. ४ को बुध के नेपच्यून से युति के समय बाजार दब सकता है, निश्चित नहीं है। मन्दी आने के बाद जल्दी ही बाजार संभल जाएगा। ता. ६ को बुध-नेपच्यून युति से बाजार तेजी में आएगा। इस दिन अनेक जिन्सों में तेजी का रुख रहेगा। मूंग, मटर, गुड़, हल्दी, इलायची, मेन्था, सरसों, सौंफ, काली मिर्च, लाल मिर्च, धनिया, जीरा में तेजी का रुख रहेगा। भाव में तेजी का मजबूत उछाला आएगा। तेजी का रुख ता. ८ को बुध-मंगल युति से और मजबूत होगा। सूर्य से दोनों ग्रहों की दूरी बहुत कम रहेगी। दोनों ग्रहों की दूरी केवल १५ अंश होने से कुछ वस्तुओं के भाव भड़क भी सकते हैं। बुध की मंगल से इस राशि में यह पहली युति है। बुध की गति यहां से घटती चली जाएगी और ता. २३ को यह वक्री होकर ता. २४ को मंगल से दूसरी युति करेगा। तब तक बाजार में अच्छी तेजी का रुख बना रहेगा। भाव दुतर्फा रुख लेकर चलेंगे। तेजी की प्रतिक्रिया में ता. ९ से १३ के बीच मन्दड़िया वर्ग बिकवाली दबाव बढ़ाकर भाव गिरा देंगे।

ता. ११ को चन्द्र-दर्शन हो रहा है और ता. १२ को सूर्य कुम्भ राशि में पंचग्रही योग में प्रवेश कर रहे हैं। इससे बाजार में तेजी की धारणा बनी रहेगी। भाव धीमे-धीमे बढ़ते रहेंगे। ता. १८ को शनि वक्री हो रहा है और इसी दिन शुक्र का राहु से केन्द्र योग हो रहा है जिससे ता. १८ या १९ को मन्दी का जोरदार झटका लगेगा। तिल, तेल, दलहन, चीनी, अरहर, सरसों में जोरदार तेजी-मन्दी का झटका लगेगा। गेहूं, जौ, चना, गुड़, सभी में तेजी समाप्त होती दिखाई देगी। मंगल-सूर्य की यह शत्रु राशि है अत: इनके कारण मन्दी का जबर्दस्त झटका लगने के बाद बाजार अच्छी मन्दी में जा सकता है। समय के साथ ही इस समय तेजी में से निकल जाना चाहिए। ता. २१ को शुक्र कुम्भ में प्रवेश

करके पंचग्रही योग फिर बना देगा। अपनी वस्तुओं में यह तेजी देगा लेकिन अन्य ग्रहों की अनेक वस्तुओं में शनि के साथ मिलकर मन्दी दे सकता है। कुम्भ में प्रवेश के साथ ही अनेक वस्तुओं में तेजी देगा। गुड़-चीनी, मसाले, मेन्था, पिपरमिन्ट, सोयाबीन में तेजी होगी। ता. २१ को सूर्य-नेपच्यून युति होगी। इस दिन बाजार में सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी होगी। इसके बाद ता. २३ को बुध मार्गी होगा। ता. २६ को मंगल से यह दूसरी बार युति कर रहा है। इससे पहली युति के समय जिन वस्तुओं में तेजी बनी थी, वह सभी वस्तुएं तेजी में रहेंगी। इस समय सूर्य से दोनों ग्रहों की दूरी लगभग १२ अंश रहेगी। इस समय मंगल और शुक्र दोनों अस्त चल रहे है, ता. २६ को बुध भी अस्त हो रहा है। तीनों ग्रहों का एक ही राशि में अस्त होना जबर्दस्त तेजी का सूचक है।

ता. २८ को शुक्र और नेपच्यून की युति भी तेजीकारक रहेगी। इस समय कुछ दिनों के लिए सतर्कता बहुत जरुरी रहेगी कुछ वस्तुओं के भाव अपनी तेजी पर पहुंच रहे होंगे और उनमें मन्दी का चान्स बनेगा। इस महीने कुछ अन्य चान्स भी बन रहे है जो तेजी में सहायक रहेंगे। लगभग पूरे महीने गुरु और हर्शल त्रिरेकादश योग में रहेंगे जिससे सभी खाद्यान्न और किराने के कुछ आइटम तेजी में आ जाएंगे। इसी तरह शनि और प्लूटो मन्दी में सहायक रहेंगे। शनि और प्लूटो भी त्रिरेकादश योग में बने रहेंगे जिससे भाव को बढ़ने से समय-समय पर रोककर मन्दी का झटका देते रहेंगे। फिर भी महीने में भरपूर तेजी बनी रहनी चाहिए।

**संक्रान्ति फल-मार्च-** सूर्यदेव मीन में वार ३, नक्षत्र ४ एवं मुहूर्त ३० पर प्रवेश कर रहे हैं। सट्टे के बाजार में अनाज के कुछ जिन्सों

में वातावरण नीरस रहेगा। विशेष घटा-बढ़ी नहीं होगी। घटे-भाव प्रतिक्रिया में बढ़ेंगे और बाद में फिर नीचे का भाव होगा। अधिकतर बाजारों में रुख दुतर्फा रहेगा। घटे-भाव पर खरीदकर चलें और जल्दी ही तेजी का मुनाफा लेकर निकल जाएं। धातु बाजार दुतर्फा रुख के साथ तेज होगा लेकिन भाव अधिक नहीं बढ़ेगा।

**मार्च**- फाल्गुनी अमावस्या सोमवारी है जिससे यह शुभ हो गयी है और ता. १३ का चन्द्र-दर्शन मन्दीकारक है। बाजार में ता. १३ के आस-पास रस-कस, दूध, अखरोट, धनिया, जीरा, मेन्था, पिपरमिन्ट, मूंगफली का भाव दबेगा। अमावस्या के समय कुम्भ में पंचग्रही योग बन रहा है। बाजार तेजी में ही बना रहेगा। मीन संक्रान्ति पर यह योग कमजोर होता जाता है और त्रिग्रही में बदल जाता है इस समय मन्दी का एक झटका लगकर बाजार संभल जाएगा। ता. १८ को विशेष योग बन रहा है इस दिन चन्द्रमा गुरु से युति कर रहा है साथ ही गुरु रोहिणी नक्षत्र से युति कर रहा है। दोनों घटनाएं एक साथ ही हो रही हैं। इस दिन बाजार में लगभग सभी वस्तुओं के भाव गिरेंगे। इसी दिन सूर्य और मंगल का क्रान्तिसाम्य मन्दी में सहयोगी रहेगा। ता. २८ की चन्द्र की चित्रा नक्षत्र से युति मन्दीकारक रहेगी। महीना तेजी का शुरु में होते हुए बाद में मन्दी देख सकता है, फिर भी बाजार अभी मन्दी में जाता हुआ नहीं समझ में आ रहा है। तेजी की प्रतिक्रिया में मन्दी का झटका खाता रहेगा। अधिकतर वस्तुओं के भाव ऊपर के बन चुके होंगे।

कुम्भ में बुध के साथ के सभी सहयोगी ग्रह ता. १७ तक उसका साथ छोड़कर मीन में प्रवेश कर जाएंगे। इससे अधिकतर वस्तुओं के भाव सुस्त होंगे।

ता. १ को सूर्य-शनि त्रिकोण से बाजार सुस्त होना शुरु हो

जाएगा। ता. ४ को सूर्य-बुध युति से बाजार हल्का मन्दा देख सकता है। गेहूं, जौ, चना, मक्का, सोयाबीन, मेन्था, मटर, मूंग, मोंठ के भाव दबकर जल्दी ही ऊपर आ जाएंगे। रस-कस, गुड़-चीनी का भाव एक स्तर पर चलता रहेगा। ता. ४ को मंगल मीन राशि में प्रवेश करके रुई का भाव चढ़ाना शुरु करेगा। पिछले कुछ दिनों से रुई का दबा भाव धीमे-धीमे सुधरना शुरु होगा। अखरोट, काली मिर्च, लाल मिर्च, धनिया, जीरा, लहसुन, अदरख का भाव या तो ठहरा रहेगा या धीमे-धीमे ऊपर का रुख करेगा। यहां से बाजार एक दायरे में घूमता हुआ चलेगा। ता. १४ को सूर्य और ता. १७ को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करेगा। इस दिन पिछला तेजी का योग टूटने से ता. १८ को या इसी दिन मन्दी का झटका लगेगा। अरहर, अलसी, मक्का, चावल, मेन्था, रस-कस, गुड़-चीनी सभी में मन्दी देगा। इसी दिन बुध भी मार्गी हो रहा है और मार्गी होने के बाद अगले दिन मन्दी में सहयोग देकर बाजार दबाए रखेगा। ता. २० से बाजार सुधरेगा और कुछ ऊपर उठेगा। यहां से नीचे-ऊपर होता बाजार ता. ३० या ३१ को फिर एक बार दबेगा।

**संक्रान्ति फल-अप्रैल**-सूर्यदेव मेष राशि में वार ३, नक्षत्र ३ और मु. ३० पर प्रवेश कर रहे हैं। सभी अन्नादि पदार्थ में मजबूती का भाव बना रहेगा। जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, भाव और बढ़ेगा। गेहूं, चना, मसूर, काली मिर्च, लाल मिर्च, जीरा, दालचीनी, लौंग, हल्दी का भाव तेजी में रहेगा। सभी दलहन-तिलहन में तेजी रहेगी। पहला सप्ताह तेजी का भाव बना कर चलेंगे। दूसरे सप्ताह में तेजी का जोर और बढ़ेगा। तीसरे सप्ताह में कुछ नई वस्तुएं भी तेजी की दौड़ में शामिल हो जाएंगी। शाक-सब्जी सभी का भाव बढ़ जाएगा। रस-कस तथा दुग्ध उत्पादन सभी का भाव तेजी का बन जाएगा। अगली

संक्रान्ति के पहले चौथे सप्ताह में ही भाव दबते डबल बेचें और तेजी का मुनाफा वसूल लें। बुलियन बाजार में तेजी नहीं बन सकेगी। भाव जब भी बढेंगे घट-कर नीचे आते रहेंगे। तेजी का उछाला अच्छा बनेगा। चांदी धीमे-धीमे बढ़ती रहेगी। तांबा-अल्मूनियम भी बढ़ेगा। सभी बाजारों में तेज घटा बढ़ी होगी।

**अप्रैल**- इस महीने में सभी ग्रह तेजी में सहयोग देने वाले हैं। कोई भी ग्रह मन्दीकारक नहीं है। यदि किसी दिन ग्रहयोग से भाव घटा भी तो अगले दिन या जल्दी ही ऊपर आ जाएगा। मीन में रहते हुए शुक्र-मंगल, सूर्य विशेष तेजी नहीं दे पाएंगे। कारण धनु का प्लूटो इनसे केन्द्र बना रहा है। फिर भी बाजार रुख तेजी का रहेगा। सट्टा यही से जमना शुरु हो जाएगा और बाजार में अधिकांश वस्तुएं तेजी में आती जाएंगी। सरकार का देश की अर्थव्यवस्था पर कोई भी नियन्त्रण नहीं रहेगा। जिससे महंगाई की रफ्तार बढ़ेगी। ता. १० की अमावस्या तेजीकारक हो रही है। ता. २५ की पूर्णिमा भी तेजी में सहायक है। इससे पूरा महीना ही तेजी में निकल जाएगां।

ता. ७ को मंगल-शुक्र युति से खाने की अनेक वस्तुओं में मन्दी होगी। मंगल-शुक्र की बहुत करीबी युति होगी जिसमें दोनों की दूरी केवल ४२ कला होगी और वह सूर्य से लगभग तीन अंश दूर रहेंगे। जल्दी ही यह मन्दी दूर हो जाएगी और अगले दिन से बाजार संभलना शुरु कर देगा। ता. ८ से बाजार सुधरेगा और ता. १० को शुक्र मेष में प्रवेश कर जाएगा।

ता. १२ को मंगल मेष में प्रवेश कर रहा है। यहां सबसे पहले उसका साथ शुक्र से हो रहा है। बाजार यहीं से तेजी में चल पड़ेगा। गेहूं, जौ, चना, सरसों और गुड़, चीनी, सौंफ, काली मिर्च, दालचीनी,

लौंग, धनिया, जायफल का रुख तेजी का बन जाएगा। दलहन-तिलहन का भाव भी बढ़ेगा।

ता. १४ को सूर्य मेष में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा। सट्टे के सभी बाजार तेजी में आना शुरु कर देंगे। यहां से सभी वस्तुओं का भाव तेजी का रुख पकड़ेगा। इस दिन एकाध दलहन, हल्दी का भाव दब सकता है। कुछ ही वस्तुओं के भाव प्रतिक्रिया में घटेंगे। ता. १८ को सूर्य-मंगल युति से बाजार भाव और ऊँचा होगा। N.C.D.E.X और M.C.X में कुछ में ऊपर का सर्किट भी लग सकता है। रुई, हैसियन, जूट, पाट सभी का भाव ऊपर होना शुरु होगा। महीने के अन्त तक रुई-कपास का भाव काफी ऊपर जा सकता है। जनवरी से ही मन्दी का रुख दूर होना शुरु होकर इस महीने काफी ऊपर जा सकता है। गेहूं, जौ, चना, सभी अन्नादि की तेजी इस समय बनेगी। दलहन-तिलहन का भाव भी बढ़ेगा।

ता. २० को बुध की युति हर्शल से होगी। यह भी तेजी में सहयोग देगा। जो भी अनाज तेजी में चल रहे हैं वह और तेजी में आ जाएंगे। कई नई वस्तुएं भी तेजी की दौड़ में शामिल हो जाएंगी। ता. २८ को बुध मेष में प्रवेश करके पंचग्रही योग कायम करेगा। इस समय शनि-राहु से यह सभी ग्रह प्रतियुति की स्थिति में रहेंगे। शनि वक्री चल रहा है। इससे सट्टा पूरी तरह जम जाएगा। बाजार में तेजी इकतरफा कुछ दिनों के लिए चलेगी। ता. ३० को मंगल भरणी नक्षत्र में दो दिन के लिए शुक्र का साथ पकड़ेगा। यह दो दिन तेजी के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे। भाव तेजी से आगे बढ़ेंगे।

इस महीने सभी ग्रह तेजी के बन जाने से बाजार में अच्छी तेजी बनेगी। तेजी का भरपूर मुनाफा इस महीने लेना चाहिए।

**संक्रान्ति फल-मई-** सूर्यदेव वृष राशि में वार ४ नक्षत्र ५ एवं ४५ मुहूर्त में प्रवेश कर रहे हैं। सट्टे के कुछ जिन्सों में अचानक मन्दी का एक झटका आकर आगे बाजार संभल जाएगा। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, चना, लाल मिर्च, लहसुन, प्याज, आलू में जोरदार भाव घटकर बाद में फिर सुधर जाएंगे। तेजड़ियों-मन्दड़ियों की प्रतिस्पर्धा में तेजड़ियों की जीत होगी। रस-कस, दूध, चीनी, गुड़, में तेजी का दौर चलेगा। पहले सप्ताह के अन्त से ही बाजार तेजी में चल पड़ेंगे। दूसरा सप्ताह तेजी और मजबूती का रहेगा। मूंग-मटर का भाव गिरकर तेज हो जाएगा। सभी दलहन-तिलहन तेजी में रहेंगे। तीसरे सप्ताह में भाव दबेगा लेकिन आखिरी सप्ताह में बाजार फिर मजबूत हो जाएगा। सोने-चांदी का भाव दबने का चान्स है। अन्य धातुओं का भाव दुतर्फा रुख के साथ कुछ नीचे होगा। दूसरे सप्ताह में धातु बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी।

**मई-** इस महीने भी बाजार की शुरुआत तेजी से होगी और यह तेजी आगे भी जारी रहेगी। ता. १ को मंगल-शनि प्रतियुति होगी जिससे बाजार की तेजी बनी रहेगी। मेष में पंचग्रही योग बना रहेगा जिससे बाजार भी इकतरफा तेजी में रहेगा। ता. ४ को शुक्र वृष में प्रवेश करके सभी का साथ छोड़कर गुरु का साथ पकड़ेगा। बाजार अभी भी तेजी में बना रहेगा। ता. ५ को बाजार में तेजी का एक उछाला फिर आएगा। अनाज, डेयरी पदार्थ, रेशमी वस्त्र, रुई, प्रसाधन सामग्रियां, सोयाबीन, मक्का, जौ, धनिया, सरसों के भाव बढ़ेंगे। आलू, प्याज, अदरख, रबड़, तम्बाकू भी तेजी में रहेंगे। शाक-सब्जी सभी तेजी में रहेंगे। कपास, सूत, जूट, हैसियन भी ऊपर का रुख करेंगे। ता. ७ को बुध-मंगल की युति तीसरी बार होगी। इससे बाजार में हल्की तेजी बनेगी। अनाज और

किराने के कई आइटम के भाव बढ़ेंगे। ता. १० की अमावस्या को सूर्य ग्रहण होगा हालांकि यह भारत में यह दृश्य नहीं होगा लेकिन ग्रहण से जौ, मसूर, गेहूं, चना सभी धान्य पदार्थ पर असर होगा और भाव बढ़ेगा। पशुओं का चारा भी महंगा होगा। खल-बिनौला, तिलहन, दलहन सभी में तेजी का दौर रहेगा। गुवार भी इस महीने तेजी में रहेगा। काली मिर्च, लाल मिर्च, जीरा, लौंग, दालचीनी, सौंफ का भाव बढ़ जाएगा। ग्रहण बाद ही मेष का पंचग्रही योग टूटने से तथा ता. ११ को सूर्य-बुध युति से बाजार अचानक दबेगा। ता. १३ को बुध वृष में प्रवेश करेगा इससे मेष का चतुर्ग्रही भी टूट जाएगा और बाजार की तेजी कमजोर होगी। इस दिन मंगल की राहु से प्रतियुति बाजार को संभाले रखेगी और कुछ वस्तुओं के दाम बढ़ेंगे। ता. १४ को रात में सूर्य वृष में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग फिर से बना रहे हैं। वृष में प्रवेश के बाद ही ता. १५ को अनेक वस्तुएं नीचे का रुख करेंगी; भाव काफी तेजी से नीचे जाएगा। अन्त में ता. २३ को मंगल वृष में प्रवेश करके पंचग्रही योग फिर से बना रहा है। मंगल तुरन्त फल देता है और अपने इसी स्वभाव के कारण इसी दिन तेजी का एक उछाला देखने को मिलेगा। मंहगाई चरम सीमा पर इस वर्ष पहुंचेगी। लोगों की क्रय शक्ति जवाब देने लगेगी। सरकार केवल दिखावे का काम करेगी और मंहगाई कम करना उसके वश की बात नहीं होगी। नेता लोग केवल संसद में बैठकर उत्तेजनात्मक भाषण करेंगे और एक दूसरे पर दोषारोपण करेंगे। इनका निकम्मापन पूरी दुनिया देखेगी। तेजी की प्रतिक्रिया में ता. २४ को मन्दी का वातावरण बनेगा लेकिन आगे बाजार फिर कमजोर हो जाएगा। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**संक्रान्ति फल-जून-** सूर्य की मिथुन संक्रान्ति वार ४ नक्षत्र ४ और ३० मुहूर्ती हो रही है। पिछली संक्रान्ति में जिन वस्तुओं के भाव दबे थे वह इसमें सुधरेंगे। पहले हफ्ते में सभी बाजारों में कोई खास उतार-चढ़ाव नहीं होगा। दूसरे सप्ताह में बाजार में घटा-बढ़ी अच्छी होगी। कपास-सूत वस्त्रों के भाव में दुतर्फा रुख से तेजी होगी। प्लास्टिक बाजार तेजी में रहेगा। मेन्था, सोयाबीन, मक्का, में तेजी का रुख बनेगा। गेहूं, जौ, चना, गुड़, सरसों, मक्का का भाव नीचे का रुख करेगा। दूसरे सप्ताह में दलहन- सोयाबीन का भाव दबेगा। तीसरे सप्ताह में भी दुतर्फा रुख कायम रहेगा और आखिरी सप्ताह में मन्दी का रुख बनेगा। सोना-चांदी बाजार में दुतर्फा रुख के साथ दोनों धातुओं का भाव घटेगा। अन्य धातुएं घटा-बढ़ी में चलती रहेंगी।

**जून-** एक तो कड़वा ऊपर से नीम चढ़ा कहावत इस महीने चरितार्थ होगी। मंहगाई की मार से जनता पिस रही होगी और ऊपर से जहां तक मेरी गणना के अनुसार मानसून धोखा देगा। पिछले महीने के सूर्य ग्रहण के बाद ही मानसून का दुश्मन अलनीनो सक्रिय हो जाएगा और मानसून कमजोर हो जाएगा। इस महीने उत्तर भारत के अनेक प्रदेश मानसून की बेरुखी से बादल का इन्तजार करते रहेंगे। एक बार मानसून फिर अटक जाएगा और देश की अर्थव्यवस्था भटक जाएगी। कृषि के साथ ही उद्योग जगत का विकास रुकेगा। कमोडिटी बाजार में केवल मानसून के कारण बाजार तेजी में बना रहेगा। इस महीने ता. १ से ७ के बीच हर्शल-प्लूटो केन्द्र दुतर्फा रुख के साथ बाजार में तेजी बनाए रखेगा।

ता. ६ और ७ को कई ग्रह योग बन रहे हैं जिससे इन तारीखों में बाजार अचानक घटेगा। ता. ८ को बाजार संभलेगा और ११ को कई

वस्तुओं का भाव ऊपर का रुख करेगा। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करके गुरु और शुक्र का साथ पकड़ेगा इससे बाजार की तेजी की रफ्तार कुछ कम होगी और आगे दुतर्फा रुख कायम हो जाएगा। ता. १३ के बाद बुध नियन्त्रण में आ जाएगा। यह पिछले महीने की ता. २० मई से सभी के नियन्त्रण के बाहर होकर बाजार को इकतरफा लिए जा रहा था। ता. २४ मई से शुक्र भी नियन्त्रण से बाहर होकर ता. १९ जून से नियन्त्रण में आ जाएगा। इसके बाद मंहगाई एक्सप्रेस की रफ्तार धीमी होती जाएगी। ता. २२ जून को शुक्र कर्क में प्रवेश करेगा और ता. २३ को बाजार में तेजी का एक उछाला देगा। चीनी-गुड़-अरहर, मक्का, सोयाबीन, दालचीनी, इलायची, लौंग, जीरा, जायफल में तेजी देगा। हल्दी का भाव भी बढ़ सकता है। ता. २५ को मंगल अपने नक्षत्र मृगशीर्ष में प्रवेश कर रहा है इससे अनेक खाद्य पदार्थ और किराना में मन्दी का धमाका होगा। भाव अचानक नीचे आएगा। मन्दी अगले दिन भी जारी रहेगी। ता. २६ को बुध वक्री होगा। बाजार ता. २९ से संभल जाएगा।

महीने के अन्त में तेजी की रफ्तार कम होना शुरु होगी। सभी वस्तुओं के भाव अब तक ऊँचाई पर पहुंच रहे होंगे। कमजोर मानसून के कारण भाव अगले महीने भी कायम रह सकते हैं लेकिन तेजी की धारणा में से अब निकल जाना चाहिए।

**संक्रान्ति फल-जुलाई**- सूर्य की कर्क संक्रान्ति वार ५ नक्षत्र ५ एवं ३० मुहूर्ती है। पिछली संक्रान्ति की अपेक्षा यह कुछ मजबूत संक्रान्ति है। सट्टे के अधिकांश जिन्सों के भाव या तो मजबूत होंगे या ठहरे रहेंगे। सभी बाजार मजबूत होकर चलते रहेंगे। तिलहन-तेल में कभी-कदा भाव दबेंगे। अनाज के भाव मजबूती में रहेंगे जबकि दलहन

में भाव बढ़ जाएगा। सोना-चांदी का बाजार इस संक्रान्ति में तेजी में रहेगा। शुरुआती कमजोरी के बाद महीने के अन्त में तेजी में रहेगा। अन्य धातुएं भी साथ-साथ बढ़ेगी। प्लेटिनम-निकल का भाव अन्य धातुओं की अपेक्षा अधिक तेजी में रहेगा।

**जुलाई**- महीने के शुरु में शुक्र कर्क राशि में चलता हुआ पुष्य नक्षत्र में भ्रमण करेगा। ता. ३ को रात में यह पुष्य नक्षत्र से युति करके ता. ४ को बाजार में गिरावट देगा। ता. ४ को मंगल मिथुन में प्रवेश करके ता. ५ को मन्दी का धमाका करेगा। इस राशि में यह गुरु से युति करेगा जिससे अनेक वस्तुओं में मन्दी बन जाएगी। कर्क में तेजी से संचार करते हुए ता. १७ को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करके नेपच्यून से प्रतियुति बनाएगा। बाजार की स्थिति पहले से ठीक होगी। ता. २० को बुध मार्गी होकर महीने के अन्त तक बाजार को संभाले रखेगा। इस महीने सट्टा कमजोर होने से तेजी की रफ्तार अधिकतर जिन्सों में कम हो जाएगी और कुछ ही दिनों के लिए उनमें तेजी का रुख रहेगा। पिछले महीने ता. २९ जून से मंगल सभी ग्रह के नियन्त्रण से बाहर हो रहा है। ता. ३ अगस्त तक यह इसी स्थिति में रहेगा। मंगल जब नियन्त्रण से बाहर होता है तो वह इकतरफा लाइन कुछ दिनों के लिए बना देता है। इस समय यह बाजार को मन्दी की लाइन देगा। अनेक वस्तुएं मन्दी का भाव देखेगी। तेजी का सट्टा उखड़ जाने से मन्दड़िए हावी होने की कोशिश करेंगे।

ता. ४-५ से जारी मन्दी आगे भी बनी रहेगी। ज्वार, बाजरा, मोंठ, मूंगफली, तिलहन, ग्वार पर असर होगा। इलेक्ट्रानिक और मोबाइल सस्ते होंगे। रुई-कपास महीने के अन्त तक हल्की तेजी पकड़ लेंगे। सभी रस-कस, चना, गुड़-चीनी धीमे-धीमे तेज होंगे। गुड़ शुरु में

मन्दी में रहेगा। बादाम, सौंफ, इलायची, दालचीनी, लौंग, किराने के आइटम शुरु में मन्दा मारकर बाद में तेज होंगे। इस सभी वस्तुओं में ता. १५ तक मन्दी का रुख बना रहने के बाद ही सुधार होगा। ता. १८ को तेजी का एक उछाला आएगा जो ता. १९ को भी बना रहेगा। ता. २० से मंगल मिथुन में गुरु से युति की स्थिति में पहुंच रहा होगा इससे २३ या २४ तक बाजार अफरी-तफरी की स्थिति में पहुंचेगा। कई वस्तुओं में अधिक मन्दा हो सकता है। ता. १८ से ही गुरु का शनि और नेपच्यून से त्रिकोण योग बन रहा है ता. १९ को शनि का नेपच्यून से त्रिकोण बन रहा है। ता. २१ को मंगल का शनि और नेपच्यून से त्रिकोण योग काम करेगा। ता. २२ को मंगल गुरु युति हो रही है। इस सबसे बाजार की तेजी की चाल मन्दी में बदल सकती है। ता. २३ को बुध-राहु त्रिकोण होगा। इस समय ग्रहों की आपस में बन रहे योग किसी अनहोनी को बता रहा है। कोई बाजार क्रैश कर सकता है। मानसून फेल हो सकता है। वायुयान दुर्घटना से लेकर ज्वालामुखी विस्फोट, विश्व में प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि; भूकम्प से किसी स्थान में तबाही, भूस्खलन, बादल का फटना, भंयकर अग्निकांड सभी हो सकता हैं। अभी यह भविष्य के गर्भ में छिपा है। इस पर अपनी दैनिक रिपोर्ट में लिखूंगा। इतना तय है कि कुछ घटित होने जा रहा है। इसलिए इस महीने ता. १७ से ता. २४ तक का समय महत्वपूर्ण रहेगा।

इस महीने रुई-कपास, चीनी, गुड़, अरहर, चावल, काली मिर्च, जीरा, लौंग, गेहूं, सरसों, खसखस, काजू में तेजी का भाव बनेगा।

इस महीने यह भी सम्भव है कि बाजार में माल की सप्लाई जरुरत से अधिक हो जाए और सभी बिकवाल हो जाए और बाजार मन्दी में चला जाए।

**संक्रान्ति फल-अगस्त**- सूर्य स्वराशि सिंह में वार ४, नक्षत्र ६ एवं ३० मुहूर्त पर प्रवेश कर रहे हैं। सट्टे के बाजार में अधिकांश वस्तुओं का भाव ठहरा सा रहकर दूसरे सप्ताह के अन्त और तीसरे सप्ताह के शुरु में अचानक बढ़ेगा। पहले सप्ताह में घटे में खरीदकर दूसरे सप्ताह या तीसरे सप्ताह में बढ़ने पर बेचकर मुनाफा वसूल लें और अल्पलाभ से सन्तुष्ट रहें। तीसरे सप्ताह में सोयाबीन, मेन्था, या अन्य वस्तुओं में जिनका भाव दब रहा हो लम्बे समय के लिए बेचें। सोना-चांदी में सटोरिया लोगों के रुचि न लेने से भाव तेजी का नहीं बन सकेगा। धातु बाजार कमजोरी दिखलाएगा। अधिकांश धातुओं के भाव में विशेष उतार-चढ़ाव न होकर पिछली संक्रान्ति से भाव नीचे का बना रहेगा।

**अगस्त**- ता. ३ को मंगल नियन्त्रण में आ जाएगा। यह २९ जून को नियन्त्रण के बाहर चला गया था। जुलाई में उपद्रव मचाने और बाजार को गिराने के बाद ता. ४ से बाजार को धीमे-धीमे संभालेगा। बाजार का अब तक बहुत खराब हाल हो चुका रहेगा। जल्दी सुधार होना संभव नहीं है। बहुत दिनों के बाद मन्दड़ियों की गिरफ्त में बाजार आया है, अतः जब भी भाव चढ़ेगा बिकवाली दबाव से नीचे आ जाएगा।

ता. १ को मन्दा झेलने के बाद ता. ४ को जैसे ही कुछ सुधरेगा नीचे आ जाएगा। ता. ५ को सूर्य-राहु केन्द्र से सभी अनाज, रस-कस, मूंग, मटर, दलहन, आदि फिर दब जाएगा। ता. ७ को संभलता बाजार गुरु-प्लूटो प्रतियुति से फिर दबेगा। हल्दी, अजवायन, जीरा, शाक-सब्जी, रुई-कपास का भाव दब जाएगा। धातुओं में भी मन्दा रहेगा। ता. १६ को गुरु-राहु त्रिकोण के बाद ही कुछ वस्तुओं में सुधार होगा।

ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंगफली, तिलहन, ग्वार, हल्दी, हैसियन, के भाव में हल्का सुधार होगा। बाजार में काम-काज अब काफी घट जाएगा। अधिकतर वस्तुओं के भाव नीचे में रहेंगे और व्यापारी वर्ग निराश होगा। ता. २२ या २३ को बुध-गुरु केन्द्र से अनाज के व्यापर में कमजोरी दिखाई देगी और ता. २४ को शुक्र-प्लूटो केन्द्र और सूर्य-बुध युति के कारण एक बार बाजार दबकर फिर नीचे जाएगा। **इस महीने जिनके पास भी माल रह गया होगा उनको काफी नुकसान उठाना पड़ेगा। अत: पिछले महीने ही स्टाक को खाली कर लेना चाहिए।**

ता. २७ से बाजार धीमे-धीमे सुधरना शुरु होगा। महीने के अन्त में ता. ३१ को कुछ वस्तुओं के भाव सुधर जाएंगे लेकिन अधिक की आशा नहीं है।

**संक्रान्ति फल-सितम्बर**- सूर्य कन्या राशि में वार ४ नक्षत्र ५ एवं मुहूर्त ३० पर प्रवेश कर रहे हैं। अनाज के कई जिन्सों में जोरदार घटा-बढ़ी होगी। तेजड़िया वर्ग मजबूत होने के बावजूद भाव अधिक नहीं बढ़ा पाएंगे। पहले और दूसरे सप्ताह में मन्दी के झटके लगकर बाजार संभलता रहेगा। कुछ का भाव काफी नीचे जाएगा। मक्का, उड़द, मूंग, दलहन का भाव अचानक दबेगा। मेन्था, पिपरमिन्ट, सौंफ, लौंग, जायफल, अजवायन, तथा किराने के अनेक आइटम नीचे का रुख करेंगे। धातुबाना बाजार में रुचि घटी रहने तथा सावधान रहने की प्रवृत्ति बनेगी। जिससे बाजार में तेजी का रुख नहीं बनेगा।

**सितम्बर**- इस महीने सटोरिया वर्ग तेजी को ले आने की कोशिश करेंगे लेकिन अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाएंगे। भाव जब भी बढ़ेगा कुछ दिन बाद ही नीचे आएगा। ता. १ को गुरु अपने नक्षत्र पुनर्वसु में प्रवेश करेगा। इसी दिन सूर्य-प्लूटो का त्रिकोण योग भी हो

रहा है। गुरु इसमें सहयोगी होकर सभी अनाज, किराने, रस-कस, गुड़, गेहूं में मन्दी देगा। ता. ३ को मंगल-नेपच्यून षडाष्टक तेजीकारक है। N.C.D.E.X. में कुछ वस्तुओं के भाव बढ़ेगे। क्रूड आयल मजबूत होगा।

ता. ६ को शुक्र तुला में प्रवेश करके शनि-राहु का साथ पकड़ेगा। यहीं से बाजार में संकट फिर बढ़ेगा। तुला में शुक्र के प्रवेश के साथ ही बाजार दबेगा। क्रूड आयल का भाव भी दबेगा। दलहन-तिलहन का भाव भी दब जाएगा। बाजार में रुपये की कमी पड़ सकती है और कुछ लोग देनदारी से मुकर सकते है। लम्बा सट्टा खेलने वाली एकाध पार्टियां इस महीने शुक्र-राहु-शनि युति से फेल हो सकती हैं। ता. ६ की शुक्र की चित्रा नक्षत्र से युति कारोबार में रुपये की कमी पैदा करके ता. १७ को शनि-राहु युति, ता. १८ को एक ही दिन में शुक्र राहु-युति और शुक्र-शनि युति से बाजार में आर्थिक संकट फैलेगा। ता. २५ को बुध भी चित्रा नक्षत्र से युति करेगा और बाद में तुला में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा। इसी दिन चन्द्रमा वृष में रोहिणी नक्षत्र से युति कर रहा है। यह सभी मन्दी को बढ़ाने वाले है। ता. २५ को मन्दी का जोरदार झटका लगेगा। बाजार में महीने के शुरु से ही घबड़ाहट, आशंका, अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी जो ता. १७ से बढ़ती जाएगी। ता. २६ से या इसके बाद सुधार की स्थिति बनेगी। कुछ वस्तुओं के भाव में सुधार होगा। शनि-राहु ९० साल की साइकिल पूरी कर रहे हैं। इसंसे बाजार में काफी उतार-चढ़ाव होगा। शनि जब तक राहु से युति नहीं कर रहा था तेजी में सहयोगी था लेकिन युति के बाद ही मन्दी में बाजार कर देगा। दलहन-तिलहन-तेल सभी का भाव गिरेगा।

**नोट**- यदि ऐसा नहीं हुआ तो अच्छी तेजी बन जाएगी हालांकि

यह केवल संभावना है।

**संक्रान्ति फल-अक्टूबर**- सूर्यदेव अपनी नीच की संक्रान्ति तुला में वार ४ नक्षत्र ४ और मु. ४५ पर प्रवेश कर रहे हैं। संक्रान्ति लगते ही मन्दी का धमाका होगा। गेहूं , चना, हल्दी, सरसों, औषधि के बाजारों में मन्दी होगी। सट्टे में अनेक वस्तुओं और अनाज के अलावा दलहन-तिलहन का भाव भी अचानक दबेगा। पहला हफ्ता मन्दी में जाएगा। दूसरे सप्ताह में मन्दी का रुकना शुरु होगा। तीसरे सप्ताह में हल्का सुधार होगा और कुछ अनाज दलहन-तिलहन-तेल का भाव बढ़ेगा। तीसरे सप्ताह भी सट्टे में अनेक वस्तुओं और खाद्य पदार्थों में सुधार होकर आखिरी सप्ताह में भाव ठहरा रहेगा। अगली संक्रान्ति के पहले ही मन्दी में से निकल जाना चाहिए। धातु-बाजार में जमकर घटा बढ़ी होगी। सट्टे में सभी धातुओं सोना-चांदी-ब्रान्ज, निकल, प्लेटिनम, तांबा में तेजी बनेगी। आखिरी सप्ताह में तेजी मन्दी में बदल जाएगी।

**अक्टूबर**- बाजार का संकट इस महीने भी पूरी तरह दूर नहीं होगा। इस महीने बुध वक्री होकर तुला में ही रह जाएगा और इस राशि में रहते हुए शनि और राहु से तीन बार युति करेगा। ता. १७ को सूर्य भी तुला में प्रवेश करेगा तथा शनि-राहु से युति करके मन्दी बनाए रखेगा। ता. १० अक्टूबर से शुक्र अनियन्त्रित होकर बाजार में दुतर्फा रुख बना देगा। इस स्थिति में वह ७ दिसम्बर तक रहेगा।

ता. १ को बुध-नेपच्यून त्रिकोण से बाजार संभलेगा। ता. २ को सूर्य प्लूटो केन्द्र से बाजार हल्का दबकर फिर अपनी जगह वापस आ

जाएगा। ता. ३ को हल्की तेजी का रुख रहेगा। अनाजों में भाव कुछ बढ़ेंगे। घी, तेल, वनस्पति के भाव एक दायरे में चलेंगे। मक्का, सोयाबीन, अरहर, चना, गेहूं, गुड़, चीनी, मसूर, मूंग, मोंठ, मटर सभी के भाव पड़े से रहेंगे। विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होगा। किराने की भी अधिकतर वस्तुएं कम घटा-बढ़ी में चलेंगी। ता. १३ या १४ से ता. २०-२१ तक गिरावट का रुख कुछ वस्तुओं में बनेगा। ता. १७ को सभी अनाज-दलहन-तिलहन-तेल में मन्दी का जोर बढ़ेगा। इस महीने पहला तेज उतार-चढ़ाव ता. ५ से ८ के बीच बनेगा। तेल-तिलहन का बाजार इस महीने अधिक दबेगा। दूसरा तेज मन्दी का झटका ता. १७ को लगेगा। अन्त में २९ या ३० से मन्दी का झटका लगने के बाद अगले महीने की ता. ३ तक बाजार नीचे में रहेगा। फिर भी ता. १७ के बाद कुछ रिकवरी भी अनेक जिन्सों में हल्की-फुल्की कर लेगा। मन्दी के इन दिनों में ता. २० के आस-पास से बिकवाली दबाव कम होगा। नीचे के भाव पर कोई भी बेचने को तैयार नहीं होगा जिससे बाजार धीमे-धीमे कुछ जिन्सों में सुधार के लिए चल देगा। ता. २१ को बुध वक्री होगा तब तक नीचे का भाव अधिकतर बाजार में बन चुका रहेगा। इसी समय से बाजार में पहला **टर्निंग पाइंट** बनेगा। बाजार अब ऊपर का रुख धीमे-धीमे करेगा। ता. २१ को शनि और २३ को बुध एक ही दिशा में अस्त हो रहे हैं। अगले महीने दोनों उदय होंगे और तब तक बाजार की मन्दी दूर हो जाएगी।

**संक्रान्ति फल-नवम्बर**- सूर्यदेव गत संक्रान्ति से वार ३ नक्षत्र ४ और मुहूर्त १५ पर प्रवेश कर रहे हैं। संक्रान्ति बाद ही सट्टे की

सभी जिन्सों में मजबूती बनना शुरु हो जाएगा। अनाज के भाव तेजी में आएंगे। मूंग, मटर, चना, गेहूं तथा अन्य कई जिन्स का भाव बढ़ेगा। दूसरा सप्ताह भी तेजी का रहेगा। लेकिन भाव रुक-रुककर बढ़ेंगे। तीसरे सप्ताह में मोटे अनाजों में मन्दी का तेज झटका लगेगा। आखिरी सप्ताह में भाव नीचे-ऊपर होते रहेंगे। भाव घटने नहीं पाएगा। अगली संक्रान्ति के पहले ही दबे हुए भाव के जिन्सों की खरीदारी करके चलना चाहिए। सोना-चांदी का भाव नीचे की ओर रहेगा। चांदी का भाव दबने के कारण सोना भी दबेगा। प्लेटिनम, निकल भी नीचे जाएगा। आखिरी सप्ताह में भाव में सुधार होगा।

**नवम्बर**- इस महीने बाजार का संकट बहुत कुछ दूर होकर धीमे-धीमे तेजी का संचार हो जाएगा। महीने के शुरु से ही संभला हुआ बाजार ता. ६ को सूर्य-शनि युति के बाद कुछ रफ्तार पकड़ेगा। अनाज, शाक-सब्जी, दुग्ध पदार्थ, तेल-तिलहन में भाव बढ़ना शुरु हो जाएगा।

ता. ८ को बुध-शुक्र त्रिरेकादश से मूल्यों में कुछ फिर सुधार होगा। अरहर, मूंग, मटर, चीनी, घी, वनस्पति में तेजी का रुख बनेगा। मूल्यों में सुधार ता. १२ तक होता रहेगा। इसके बाद प्रतिक्रिया में शुक्र-राहु त्रिरेकादश से अनेक वस्तुओं का भाव दबेगा। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश कर शनि-राहु का साथ छोड़ देगा। बाजार का संकट अब दूर होना शुरु हो जाएगा। मंगल-सूर्य का केन्द्र तेजी देगा। अन्नादि पदार्थ में तेजी का रुख धीमे-धीमे बढ़ेगा। आगे जाड़े की

फसल में कीड़ा लगने का भय है। फसल कमजोर होने की आशंका है। इसके कारण अभी लोग इन्तजार करके अगले महीने स्थिति साफ होने पर तेजी में आ जाएंगे। ता. १९ को बुध तीसरी बार राहु से युति करके बाजार दबाएगा लेकिन मंगल-गुरु त्रिरेकादश दबने नहीं देगा। भाव फिर ऊपर आ जाएगा। ता. २० से बाजार संभलता हुआ ता. २४ को सूर्य-नेपच्यून केन्द्र से तेज होगा। ता. २६ को बुध की शनि से तीसरी युति आगे तेजी देगी। महीने का अन्त संभले बाजार से होगा। सभी वस्तुओं में महीने के शुरु के भाव इस समय कुछ ऊँचे दिखलाई देंगे। अनाजों के साथ दलहन-तिलहन, वनस्पति, घी, किराना के अनेक आइटम के भाव बढ़ेंगे।

**संक्रान्ति फल-दिसम्बर**- सूर्य की धनु संक्रान्ति वार २, नक्षत्र ३, मुहूर्त ४५ पर हो रही है। संक्रान्ति तेजीकारक रहेगी। संक्रान्ति लगने के साथ ही मन्दी का तेज झटका कुछ बाजारों में लगेगा। पहले सप्ताह में सट्टे के कुछ जिन्स दब जाएंगे। दूसरे सप्ताह में भी मन्दी के झटके लगने के बाद बाजार ऊंचा होता रहेगा। तीसरे सप्ताह तेल-तिलहन बाजारों में तेजी का अच्छा उछाला आएगा। अनाज-रस-कस- दलहन की कुछ जिन्सों का भाव घटेगा। आखिरी सप्ताह दुतर्फा रुख के साथ तेज रहेगा। धातु बाजार में सोना-चांदी और अन्य धातुओं में मन्दी से शुरुआत होगी। भाव बढ़ने के साथ ही जल्दी नीचे आएगा। संक्रान्ति के अन्त में रुख हल्की तेजी का रहेगा।

**दिसम्बर**- ता. १ को बुध वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहा है। यह शनि और सूर्य के बीच संचार करेगा। दोनों के बीच फंसा होने से

यह मन्दीकारक हो रहा है। इसी दिन प्लूटो से इसका अर्ध केन्द्र योग बनेगा। इस दिन यह कई वस्तुओं में मन्दा देगा। ज्वार, बाजरा, गेहूं, मटर, ग्वार, सौंफ, हरी उड़द, हैसियन में मन्दा देगा। ता. ३ को बुध-मंगल त्रिरेकादश से बाजार कुछ सुधर जाएगा। सोयाबीन, खल-बिनौला, रुई, कपास का दाम बढ़ेगा। तेल-तिलहन, घी, वनस्पति, रस-कस भी तेज होगा। ता. ५ से ७ के बीच N.C.D.E.X और M.C.X में Index बढ़ता रहेगा। अनेक वस्तुएं तेजी में रहेंगी। धातु बाजार में तेजी धीमे-धीमे बढ़ेगी। ता. १५ को मंगल-शनि अर्घकेन्द्र से बाजार दबेगा। चना, गेहूं, गुड़, चीनी, लाल मिर्च, काली मिर्च, बादाम, पिस्ता, दालचीनी, केशर, इलायची, तिल, पिपरमिन्ट का भाव दबेगा। ता. १७ को दबा हुआ भाव तेजी से ऊपर आना शुरु होगा। ता. १७ को हर्शल मार्गी होकर तेजी को बनाए रखेगा। अनाज के भाव आगे तेजी में आते जाएंगे।

ता. २० को बुध धनु में प्रवेश करके हर्शल से केन्द्र और गुरु से प्रतियोग करेगा। ता. २१ को मकर का शुक्र वक्री होगा। वक्री शुक्र बाजार के लिए तेजीकारक है। बुध इस समय नियन्त्रण के बाहर चल रहा है। यह सभी योग बाजार में अच्छी तेजी ले आने में समर्थ है। सन २०१४ चुनाव का वर्ष है और सरकार का बाजार पर नियन्त्रण समाप्त होने से इकतरफा तेजी का वातावरण बन जाएगा। डेयरी उत्पादन, शाक-सब्जी, गेहूं, चावल और कई अनाजों का भाव बढ़ता जाएगा। ता. २९ से तेजी की प्रतिक्रिया में कई वस्तुओं के भाव दबेंगे लेकिन बाजार की तेजी खतम नहीं होगी।

## सन २०१३ ई. में शेयर मार्केट

**जनवरी**- महीने की शुरुआत धनु राशि में त्रिग्रही योग से होगी। बाजार में संशय की स्थिति रहेगी। ता. १४ को राहु तुला में प्रवेश करके शनि का साथ पकड़ेगा। यह बहुत महत्वपूर्ण योग रहेगा और सन २०१३ में इसका असर अधिक होगा। मंगल-शनि ता. ७ को केन्द्र योग बना रहे हैं। नेपच्यून और गुरु केन्द्रीय राशियों में हैं। इन सबसे बाजार में घबड़ाहट और संशय की स्थिति बनेगी और बाजार नीचे में जाएगा। भाव जब भी बढ़ेगा जल्दी ही घटकर नीचे चला जाएगा। स्टील, सीमेन्ट, भवन निर्माण, रबर, टायर उद्योग के शेयर्स, मैन्युफैक्चरिंग, कागज कम्पनियों के शेयर्स पर असर पड़ेगा। बैन्क और फाइनेन्स कम्पनियों के शेयर्स दबेंगे। हर घटा-बढ़ी में अन्य शेयर्स के भाव नीचे जाएंगे। ता. १८ के आस-पास बाजार अपने निचले स्तर के आस-पास हो सकता है। मन्दी आगे भी जारी रहेगी। सभी शेयरों के भाव नीचे ही रहेंगे। तुला के शनि-राहु मन्दी से बाहर निकलने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं लेकिन इस राशि का स्वभाव समय-समय पर संकट खड़ा करके चेतावनी देता रहता है। यदि विश्व के नेताओं को सद्बुद्धि आई तब सफलता प्राप्त होगी और वह हीरो बन जाएंगे। हर्शल से शनि-राहु का षडाष्टक योग के कारण एक बार यह फिर समय को नष्ट करते दिखाई दे रहे हैं।

इस महीने अन्य योगों के साथ दो महत्वपूर्ण युतियां हो रही हैं जिसका विश्व के सभी बाजारों पर असर होगा। ता. ६ को बुध-प्लूटो युति पहली महत्वपूर्ण युति है। बुध इस समय अस्त चल रहा है और युति के समय सूर्य से उसकी दूरी केवल ७ अंश के लगभग है। इसी समय मंगल-शनि केन्द्र भी ता. ८ को हो रहा है। मंगल बाद में राहु से

भी केन्द्र योग बनाएगा। ता. १० के बाद मन्दी का जोर और बढ़ेगा। दूसरी महत्वपूर्ण युति ता. १६ जनवरी को शुक्र की प्लूटो के साथ हो रही है। इस समय सूर्य से दोनों १७ अंश की दूरी पर हैं। यह युति भी मन्दीकारक है। बुध और शुक्र की यह दो युतियां उपद्रवकारी हो सकती हैं। इसमें उच्च का मंगल और उच्च का शनि सहायक की भूमिका निभाएगा। विश्व में मन्दी का साया फैलेगा और पहले से मजबूत होगा। आर्थिक सुधार के नाम पर देश की अर्थव्यवस्था चौपट की जा रही है। विदेशी रुपया अनुमान से काफी कम आएगा। भारत से दूर रहने में ही यह अपनी भलाई समझेंगे। भारत की रेटिंग अब तक गिर चुकी रहेगी। रुपये की साख धूल में मिलेगी। जाने-माने अर्थशास्त्री देश के लिए अनर्थशास्त्री साबित होंगे। इस महीने ता. १६ से ता. २३ के बीच बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी।

लगभग पूरे महीने ही शनि और प्लूटो त्रिरेकादश की स्थिति में बने रहेंगे। बाजार में मन्दी की धारणा पूरे महीने ही बनी रहेगी। बहुत सीमित दायरे में बाजार घूमता रहेगा। बहुत अधिक गिरावट की आशा नहीं है।

**फरवरी**- कुम्भ में मंगल-बुध-नेपच्यून की त्रिग्रही वृष के गुरु के साथ केन्द्र योग बना रही है। सभी ग्रह अपने शत्रु राशि में हैं या कुछ भी न कर सकने की स्थिति में हैं। ता. १८ को शनि वक्री और ता. २३ को बुध वक्री हो रहा है। गुरु और शुक्र त्रिकोण राशि में हैं और यह कुछ क्षेत्र या शेयर को बिगड़ने से बचाए रखेंगे। बजटीय महीना होने के कारण बाजार में लोगों की रुचि जागेगी। लेकिन सतर्कता जरुरत से ज्यादा होने के कारण बाजार का कारोबार बहुत अधिक नहीं बढ़ेगा। मौका मिलते ही

मुनाफावसूली होने के कारण इन्डेक्स अधिक नहीं बढ़ सकेगा। इस महीने में बुध-शनि दोनों के वक्री होने के कारण धोखा-धड़ी और झूठे सौदे होंगे। तेजी धोखे की ही बनेगी। कुम्भ संक्रान्ति के समय पंचग्रही योग बन रहा है जिससे बाजार को कुछ मजबूती मिलेगी। लेकिन बुध के वक्री होने के बाद गिरावट शुरु हो जाएगी। विदेशी प्रेम और उनकी उन्नति के लिए सर झुकाए महाराजा की मुद्रा में खड़ी सरकार का बजट उनको यहां बुलाने के लिए कई छद्मद्वार खोलेगा। देश की जनता को इस वर्ष कठोर बजट का तोहफा मिलेगा। बाजार के लिए यह बजट निराशा का होगा। बजट के समय मंगल-बुध-शुक्र अस्त चल रहे होंगे। नाकारा बजट होते हुए भी बगैर विरोध के बजट पास हो जाएगा।

इस महीने कई महत्वपूर्ण युतियां हो रही है जिसके असर में बाजार रहेगा। पहली युति ता. ४ को मंगल और नेपच्यून की होगी। यह बहुत करीबी युति होगी जिसमें दोनों ग्रह की दूरी केवल २६ कला है और सूर्य से इन दोनों ग्रहों की दूरी केवल १६ अंश की है। बाजार मन्दी की चपेट में रहेगा। तेल, गैस, कम्पनियों के शेयर मन्दी में जाएंगे। इसके साथ ही सीमेन्ट, स्टील, साफ्टवेयर, मशीनरी, विद्युत कम्पनियों के शेयर भी नीचे का रास्ता देखेंगे। Aviation Share भी नीचे का रुख करेंगे। गृह निर्माण, खान से सम्बन्धित कम्पनियों के शेयर का भी भाव गिरेगा। ता. ६ को बुध-नेपच्यून की युति भी बहुत करीबी हो रही है जिसमें दोनों ग्रह की दूरी २८ कला है और सूर्य से दूरी १४ अंश की रह जाती है। पेपर कम्पनियों और मीडिया के शेयर दबेंगे। ता. ३ से शुरु हुआ अफरा-तफरी का दौर ता. ८ फरवरी के बुध-मंगल युति से और बढ़ जाएगा। बुध-मंगल की यह युति पहली बार हो रही है। बाजार इस

समय मन्दी की गिरफ्त में रहेगा। ता. २३ को बुध वक्री होकर ता. २४ को मंगल से दूसरी युति करेगा। अब तक बाजार में जो भी सुधार हुआ होगा तो वह गायब हो जाएगा। ता. ३ से १० तक के बीच बाजार में अफरा-तफरी बनी रहेगी। ता. २८ को बजट पेशी के दिन शुक्र और नेपच्यून युति बहुत महत्वपूर्ण होगी। इसमें शुक्र की नेपच्यून से दूरी केवल ४६ कला रह जा रही है। सूर्य से दूरी भी घट कर केवल ७ अंश की रह जा रही है। इससे राजकोषीय घाटा चिन्ता का विषय बनेगा। देश के आर्थिक सुधार के नाम पर नए टैक्सभार को जनता पर थोपा जाएगा। इस महीने भारत की क्रेडिट रेटिंग घटने की संभावना है। ता. २२ फरवरी से ११ मार्च के अन्दर ऋण भार की समस्या भी सामने आ सकती है। इस महीने बैन्क एवं वित्तीय कम्पनियों के शेयर भी दबेंगे। रुपया का भाव नीचे का रुख बनाए रखेगा।

**मार्च**- इस वर्ष बजट में ऐसा कुछ नहीं होगा जिससे बाजार में तेजी बन सके। बजट पेश होने के समय शुक्र-नेपच्यून युति कर रहे हैं। निराशाजनक बजट के कारण बाजार मन्दी में जाएगा। बुध वक्री चल रहा है। यह ता. १७ को मार्गी होगा। मार्गी होने के बाद मन्दी और बढ़ेगी। इस महीने तेजी के योग कम बन रहे है और मन्दी के अधिक जिससे बाजार अधिकतर समय मन्दी का ही रहेगा।

ता. १ को शुक्र-नेपच्यून युति से वित्तीय संस्थाओं, इलेक्ट्रानिक कम्पनियों, तेल, गैस के शेयर कमजोर होंगे। F.M.C.G., कपड़ा उद्योग के शेयर दबे रहेंगे। बैन्किंग क्षेत्र के शेयर भी दबेंगे। Software, Media, मनोरंजन के शेयर मजबूत रहेंगे। ता. ४ को सूर्य-बुध युति के बाद शेयर बाजार में अच्छी गिरावट होगी। सभी शेयरों के भाव नीचे आएंगे।

ता. ४ को अमेरिकन बाजार दबेगा। ता. ७ को बुध-शुक्र युति से बाजार ऊपर का रुख कर सकता है। इसी दिन मंगल-हर्शल क्रान्तिसाम्य से बाजार दब जाएगा।

ता. १० को बुध-गुरु केन्द्र से बाजार में गिरावट दर्ज होगी। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश कर रहा है, मंगल-हर्शल पहले से वहां भ्रमण कर रहे है। ता. १७ को शुक्र मीन में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा। मीन शुक्र की उच्च राशि है और सूर्य-मंगल के मित्र गुरु की राशि है। इससे बाजार में कुछ तेजी का रुख कम समय के लिए बनेगा। ता. १८ को गुरु रोहिणी नक्षत्र से युति कर रहा है और इसी समय चन्द्रमा गुरु से युति कर रहा है। इससे एक मन्दा मारने के बाद जल्दी ही बाजार फिर अपनी जगह वापस आ जाएगा। इस समय से बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। इस समय मन्दी-तेजी दोनों के योग बन रहे हैं लेकिन बाजार का झुकाव मन्दी की ओर ही रहेगा। बैन्किंग, वित्तीय संस्थाओं, म्यूचुअल फंड, पावर, तेल एवं गैस सभी शेयरों के भाव नीचे होंगे। ता. २६ के बाद ही नीचे के भाव पर विदेशी खरीदारी में रुचि दिखलाएंगें। इस महीने के अन्त के बाद ता. ६ अप्रैल तक तेज घटा-बढ़ी का माहौल रहेगा। गिरते हुए बैन्क शेयर को महीने के शुरु और अन्त में भी संभालने की कोशिश होगी। सरकारी बांड-प्रतिभूतियों का भाव घटेगा। २३ फरवरी से १२ मार्च के अन्दर देश की ऋणभार समस्या भी सामने आ सकती है। बजटीय घाटा, चालू घाटा, सरकारी ऋण इस सब समस्याओं का सामना करना होगा। ता. २३ फरवरी से १३ मार्च के बीच कोई गम्भीर संकट या नई समस्या सामने आ सकती है। बुध और शनि का वक्री होना किसी नए घोटाले को जन्म दे सकता है जिससे अर्थव्यवस्था संकट में फंस सकती है। महीने का अन्त मन्दी

और निराशा में होगा।

**अप्रैल**- महीने की शुरुआत से ही अफरा-तफरी की स्थिति बनना शुरु हो जाएगी। मीन में मंगल, शुक्र, सूर्य, हर्शल का चतुर्ग्रही योग चल रहा है। मंगल और शुक्र अस्त चल रहे हैं। ता. २२ को शुक्र उदय होकर तेजी में सहयोग करेगा। ता. ७ को शुक्र-मंगल युति से अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। यह महीने के अन्त तक बढ़ती जाएगी।

ता. १ को सूर्य-प्लूटो केन्द्र से बाजार एक बार दबेगा। ता. ३ को कुछ सुधर कर चलना शुरु होगा। ता. ६ को मन्दा मारेगा जो ता. ७ को भी जारी रहेगा। यहां से बाजार जब भी ऊपर का रुख करेगा जल्दी ही टूटकर नीचे आ जाएगा। ता. १५ को शुक्र-गुरु अर्धकेन्द्र होगा जिससे उपभोक्ता वस्तुओं के शेयर, धातु सम्बन्धित शेयर, आटोमोबाइल, बीमा कम्पनियों के शेयर, सीमेन्ट, लोहा एवं स्टील के शेयर्स मन्दी का रुख करेंगे। बैन्किंग क्षेत्र भी नरम होगा। ता. १८ को सूर्य-मंगल युति भी मन्दीकारक है। ता.१९ को प्रतिक्रिया में कुछ सुधार होगा।

ता. १४ को सूर्य मेष राशि में प्रवेश कर रहा है। शुक्र-मंगल पहले से ही यहां भ्रमण कर रहे हैं। सूर्य का मेष में प्रवेश त्रिग्रही योग बनाएगा और सभी ग्रह तुला के शनि-राहु से प्रतियुति करेंगे। शनि-राहु अपने नब्बे वर्ष की साइकिल पूरी कर रहे है। यह सभी योग बाजार में मन्दी बढ़ाने वाले हैं। यदि दो-चार दिन बाजार तेजी में रहे तो वह प्रतिक्रिया में सुधरेगा और फिर जल्दी मन्दी में चला जाएगा। इस समय तेजी का सौदा धोखा देगा।

ता. १४ को सूर्य के मेष में प्रवेश के बाद अफरा-तफरी की स्थिति फिर बनेगी। यह स्थिति कम से कम ता. २२ तक शुक्र-शनि

प्रतियुति के समय तक बनी रहेगी। बाजार लगातार मन्दी में बना रहेगा। इसके बाद भी स्थिति में बदलाव नहीं होगा। आगे सूर्य-शनि और मंगल-शनि प्रतियुति भी होगी जिससे मन्दी से छुटकारा जल्दी नहीं होगा। इस महीने रीयल इस्टेट संकट नए सिरे से खड़ा होगा। भूमि-भवन का क्षेत्र इस संकट का कारण होगा। बैन्किंग दुर्व्यवस्था, ऋण का मायाजाल, सरकारों के बजट-बांड को संकट से अभी मुक्ति मिलने वाली नहीं है। निवेशकों का Confidence Index अभी और घटेगा। इस वर्ष का पहला प्रमुख योग मेष राशि में सूर्य-मंगल शुक्र का शनि-राहु से प्रतियुति की स्थिति बनाना है। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पूंजी की कमी होगी जिसको नेताओं ने भ्रष्टाचार में समाप्त कर दिया। हर्शल और प्लूटो इस वर्ष का पहला केन्द्र योग बनाने जा रहे हैं। सन २०१२ के जून से चला केन्द्र योग तीसरी बार अगले महीने होने जा रहा है। इन सभी दुर्योगों से शेयर बाजार, कमोडिटी मार्केट, धातु बाजार सभी में आगे-पीछे मन्दी का जोर रहेगा। कुछ कम्पनियां या बैन्क समाप्त हो सकते हैं या उनका विलय दूसरी कम्पनियों या बैन्क में हो जाए। I.P.O. बाजार कमजोर तो रहेगा ही और यदि कोई शेयर आया भी तो फेल होगा। इस समय कम्पनियों के वार्षिक परिणाम भी घोषित होंगे जो आशा के अनुरुप नहीं होंगे। मन्दी के सभी कारण इस महीने मिल जाएंगे और हो सकता है कि इस अप्रैल की मन्दी पहले की मन्दी से बहुत अधिक हो।

**मई**- भरणी नक्षत्र में ता. ५ से सूर्य-मंगल-बुध तीनों एक साथ भ्रमण करेंगे। ता. ११ तक यह स्थिति बनी रहेगी कि तीनों एक साथ भरणी में भ्रमण कर रहे होंगे। इससे ८ से ११ तक अफरा-तफरी

मची रहेगी। बाजार मन्दी में बना रहेगा। १४ को सूर्य वृष राशि में पहुंचकर चतुर्ग्रही योग बनाएगा। यहां से बाजार सुधरकर चलेगा। बैन्क क्षेत्र को सुधारने के लिए प्रयास किए जाएंगे। इनके लिए कई आर्थिक प्रावधान घोषित होंगे। बीमा और स्वास्थ्य क्षेत्र पर ध्यान दिया जाएगा। समाज कल्याणकारी योजनाएं बनायी जाएंगी। पहले से अधिक रोजगार के अवसर बनाएं जाएंगे लेकिन इनका कार्यान्वयन भ्रष्ट तरीके से होने से सारी योजनाएं धरी रह जाएंगी तथा संकट बना रहेगा। ता. २१ मई को हर्शल-प्लूटो केन्द्र तीसरी बार होगा। इससे वैश्विक विचार से बेरोजगारी बढ़ेगी। बैन्क पहले से अधिक बेल आउट पाएंगे। सरकार नोट छापकर भरपाई करती रहेगी। अनेक देशों की मुद्राओं का पतन होगा। शनि प्रभाव के उद्योग अपनी पूरी क्षमता नहीं दिखा सकेंगे। कपड़ा, ज्वेलरी, कास्मेटिक उद्योग का उत्पादन क्षमता से कम होगा। बाद में सुरक्षा, बीमा, बैन्क उद्योग का विकास होगा। राहु से शनि की युति के बाद ही इनमें सुधार होगा। शनि का प्लूटो से त्रिरेकादश ऋण की समस्या से विश्व में संकट की स्थिति पैदा करेगा।

इस महीने बाजार में यदि सुधार हुआ भी तो वह ता. ११ के बाद होगा। ता. २१ से बुध नियन्त्रण के बाहर चला जाएगा और ता. २४ से शुक्र नियन्त्रण के बाहर हो जाएगा। अतः यदि तेजी ता. २१ के बाद भी बनी रहती है तो वह धोखे की होगी। ता. २५ को बुध-शुक्र युति, ता. २७ को बुध-गुरु युति और ता. २८ को शुक्र-गुरु युति होगी। बाजार के लिए यह तीन युतियां महत्वपूर्ण होंगी। युति के बाद तीनों ग्रह राशि बदल रहे हैं। बाजार की लाइन एकाएक बदलेगी। बाजार मन्दी में जाने का चान्स बन रहा है।

इसके अलावा महीने के अन्त में शनि-नेपच्यून ता. २२ से क्रान्तिसाम्य की स्थिति में रहेंगे जिससे ता. २२ से ता. ३१ तक मन्दी में ही बाजार रहेगा। सभी शेयरों के भाव में गिरावट होगी। अतः खरीदारी से दूर ही रहना चाहिए। ता. २७ को बुध, ता. २९ को शुक्र और अन्त में ता. ३१ को गुरु मिथुन में प्रवेश करेंगे। यह सभी मन्दी की लाइन लाए रखेंगे।

**जून**- महीने के शुरु में गुरु-शुक्र, बुध तुला के शनि-राहु और कुम्भ के नेपच्यून से त्रिकोण की स्थिति में रहकर बाजार संभालने का प्रयास करेंगे। बाजार रुख दुतर्फा रहेगा। इस महीने बुध की गति धीमी होती जाएगी और ता. २६ को यह वक्री हो जाएगा। ता. २३ से ही बाज़ार में उतार-चढ़ाव बढ़ जाएगा जो महीने के अन्त तक बना रहेगा। ता. २२ को शुक्र कर्क में प्रवेश करने के बाद बाजार संभालेगा। इस महीने मानसून कमजोर आने का योग बन रहा है जिससे महीने के अन्त में बाजार पर उल्टा असर होगा। विदेशी पूंजी के सहयोग से ही बाजार गिरने से बच सकता है अन्यथा मन्दी में चला जाएगा। इस महीने मंगल नियन्त्रण के बाहर हो रहा है। ता. २९ जून से यह नियन्त्रण के बाहर हो जाएगा। इस कारण अगले महीने बाजार में मन्दी का जोर बढ़ जाएगा।

गुरु के मिथुन राशि के संचार के समय सूचना, संचार, नई तकनीक के शेयर, कम्पयूटर, सेलफोन, ट्रान्सपोर्ट, एविएशन के शेयर लाभ प्राप्त करेंगे। ता. ३१ मई के पहले जिस शेयर के भाव अच्छे चल रहे हों तो गुरु के मिथुन में जाने से पहले उनको बेचकर इन शेयरों को खरीदें, आगे अच्छा लाभ होगा। ता. ११ जून २०१२ से २६ जून २०१३ तक इन शेयरों में अच्छा लाभ हो सकता है। इस अवधि में सरकार कई

नए कानून बनाएगी। भूमि-भवन सम्बन्धी कानून मुख्य हो सकते हैं। बैन्किंग और बीमा क्षेत्र के लिए तथा कारपोरेट सेक्टर के लिए कानून पास होंगे। मिथुन राशि में संचार के कार्यकाल में गुरु सम्बन्धी क्षेत्र में सुधार और लाभ होगा।

ता. १ से ७ के बीच में हल्का सुधार होगा। ता. ७ को दुतर्फा रुख बनेगा। शेयरों के भाव तेजी से ऊपर नीचे होंगे। ता. ८ या ९ को भाव में अचानक गिरावट होगी और कई प्रमुख शेयर लुढ़क जाएंगे। यहां से बाजार में घबड़ाहट फैलेगी। ता. १० भी मन्दी में जाएगा। बाजार में अफवाह या खबर से गिरावट जारी रहेगी। आगे अच्छे योग के साथ खराब योग भी बन रहे है। रोज का उतार-चढ़ाव बढ़ा हुआ रहेगा। बैन्किंग शेयरों के भाव दबेंगे। इसका असर अन्य शेयरों पर भी पड़ेगा। ता. २१ को बुध-शुक्र युति मन्दी देने के बाद बाजार संभालेगी। ता. २३ से अफवाह या किसी कारण से बाजार की स्थिति हमेशा बदलती रहेगी। ता. २५ को बुध-प्लूटो क्रान्तिसाम्य मन्दी देगा। अधिकतर शेयरों के भाव नीचे में रहेंगे। ता. २६ को बुध वक्री होकर गिरते बाजार को संभालेगा। महीने के अन्त तक बाजार रुका रहेगा। विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होगा। निवेशकों का विश्वास इस महीने बाजार पर काफी कम होगा।

**जुलाई**- ता. ४ जुलाई को मंगल का मिथुन में प्रवेश मन्दीकारक होगा। गुरु के साथ यह १७ अगस्त तक रहेगा। तब तक यह बाजार में मन्दी का वातावरण बनाएगा। ता. १६ को सूर्य कर्क में प्रवेश करेगा और ता. १७ को शुक्र सिंह में प्रवेश करेगा। इस महीने बाजार में कुछ नए किस्म का संकट या समस्या बनेगी। मंगल इस महीने नियन्त्रण के बाहर

हो रहा है और बहुत संभावना है कि मंगल-गुरु के साथ मिलकर पूरे महीने मन्दी दे। मानसून की कमी से यह समस्या पैदा हो सकती है। इस महीने अधिकतर देशों में मौसम बिगड़ा रहेगा। ता. ४ को शनि मार्गी हो रहा है। नेपच्यून,प्लूटो वक्री चल रहे हैं जबकि हर्शल ता. १७ को वक्री हो रहा है। इससे मौसम में उपद्रव होगा। भू-स्खलन, तूफान, चक्रवात, सूखा-बाढ़, भूकम्पादि का प्रकोप होगा। कुछ देशों की आर्थिक स्थिति प्राकृतिक प्रकोप से भी प्रभावित होगी।

महीने के शुरु में ही ता. १ को शुक्र-शनि केन्द्र से कई सेक्टर के शेयर प्रभावित होंगे। यहां से बनी मन्दी ता. ५ तक चल सकती है। इसके बाद ही स्थिति में सुधार होगा। सुधरा हुआ बाजार ता. ९ या १० को सूर्य-बुध युति के बाद फिर गड़बड़ाएगा। ता. ११ से बाजार में सुधार जारी होगा लेकिन दो दिन बाद ही फिर दब जाएगा। बाजार अब तक अपने निचले स्तर के आस-पास पहुंच रहा होगा। ता. १६ के आस-पास से सुधार चालू होगा। ता. २० को बुध मार्गी होगा। बाजार धीमे-धीमे ऊपर की रफ्तार पकड़ना शुरु करेगा। ता. २७ को चन्द्रमा का गुरु-मंगल और प्लूटो से केन्द्र, और हर्शल से युति तथा अगले दिन मंगल-प्लूटो प्रतियुति और सूर्य-शनि केन्द्र बाजार के सेन्टिमेन्ट को बिगाड़ देंगे जिससे इस तारीख के आस-पास गिरावट होगी।

इस बात का ध्यान रहे कि इस महीने में कभी कोई घटना अचानक हो सकती है ज़िसका बाजार पर असर पड़ सकता है। मानसून ता. ९ जुलाई के बाद पिछले दिनों की अपेक्षा अधिक वर्षा देगा। इससे बाजार की धारणा पर असर पड़ेगा।

**अगस्त**- ता. १६ को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा और ता.

२० को बुध सिंह में प्रवेश करेगा। पिछले महीने कुछ क्षेत्रों में मानसूनी बरसात होने के बाद राहत महसूस कर रहे लोग ता. २४ के बाद निराश होंगे। मानसून पूरी तरह यहां धोखा देगा। ता. २४ के बाद देश में वर्षा अवरोध प्रारम्भ हो जाएगा। अलनीनो इस वर्ष मानसून फेल कर देगा। भारतीय कृषि का विकास रुक जाएगा। प्रधानमन्त्री से लेकर सम्पूर्ण यू.पी.ए. और सुप्रीमो कोई चाहे कुछ भी कहे देश की अर्थव्यवस्था अब पूरी तरह पटरी से उतर जाएगी। ता. ११ को शुक्र का कन्या में प्रवेश पहला झटका देगा और बाद में लगातार हर महीने झटके के बाद झटका लगता रहेगा। अगर पांच प्रतिशत के हिसाब से विकास दर हासिल हो जाए तो बहुत रहेगा। ता. १६ को सूर्य और बाद में बुध का सिंह में प्रवेश, हर्शल से षडाष्टक योग बनाएगा। देश की आर्थिक स्थिति और कमजोर होगी। गुरु का हर्शल से केन्द्र योग इस महीने पहली बार होगा। गुरु इसके बाद दो बार हर्शल से केन्द्र योग बनाएगा। उससे देश की आर्थिक स्थिति और कमजोर होगी।

ता. १ को मंगल-हर्शल केन्द्र से बाजार कमजोर होगा। यहां से संभलता गिरता बाजार ता. ७ से १.० के बीच गुरु-प्लूटो प्रतियुति से दबेगा। बैन्क, वित्तीय संस्थाओं के शेयर दबेंगे। आटोमोबाइल, सीमेन्ट, आइरन ऐन्ड स्टील, तेल एवं गैस, Cotton & Textile, सभी के शेयर घटेंगे। आई.टी. साफ्टवेयर कुछ बढ़ेंगे या कम घटेंगे। Media, Aviation शेयर्स भी घटेंगे। ता. १३ से १७ के बीच शेयर्स में सुधार होगा।

ता. २१ को पूर्णिमा के दिन गुरु-हर्शल केन्द्र हो रहा है। इससे बाजार में अचानक कभी भी तेज गिरावट हो सकती है। यह योग एक सप्ताह पहले से लेकर एक सप्ताह बाद तक काम करता है। अतः

सावधान रहकर काम करें। ता. २४ को रात में सूर्य-बुध युति होगी। अब तक जिन शेयरों में ऊँचे का भाव बनना है वह बन चुका रहेगा। यहां से बाजार का Turning Point शुरु होगा। इसके बाद बाजार को कोई संभाल नही सकेगा। विदेशी पूंजी भी नहीं। ता. २५ को बुध-नेपच्यून प्रतियुति होगी। इससे मन्दी और बढ़ेगी। ता. २८ तक मन्दी का जोर बना रहेगा। ता. २९ से प्रतिक्रिया में कुछ सुधार होगा। ता. ३१ तक कुछ सुधार की संभावना लगती है।

इस महीने ता. १ से ३० तक शनि और नेपच्यून क्रान्तिसाम्य की स्थिति में रहेंगे जिससे बाजार मन्दी में ही बना रहेगा। बहुत से शेयर एक दायरे में घूमते नजर आएंगे।

इन योगों की एक विशेषता यह भी रहेगी कि अभी तक देश की जनता को नेता लोग गुमराह करते रहे लेकिन अब यह खुद गुमराह होंगे। इनका बुद्धि-विवेक सभी समाप्त हो जाएगा। अनर्गल भाषण और विवेकहीन कर्म करेंगे। देश-विदेश में अपनी छवि गंवा चुके नेता अब बचा हुआ भी गंवा देंगे। इस रक्षाबन्धन से इनका बन्धन शुरु होगा और जब यह पूर्ण होगा तब इनको होश आएगा। देश को सबसे बड़ा धोखा संसद और संविधान से भी ऊपर अपने आपको समझने वाले जनता के चुने हुए नेता देंगे। देश की कठिन स्थिति बनना अब शुरु होगा।

**सितम्बर**- ता. ५ को बुध कन्या में प्रवेश करकें हर्शल से प्रतियुति करेगा। सूर्य भी कन्या में प्रवेश करके इस योग को और मजबूत करेगा। पिछले महीने ११ अगस्त को शुक्र का कन्या में प्रवेश से मिथुन का गुरु, कन्या का शुक्र, धनु में प्लूटो और मीन के हर्शल का आपसी केन्द्र योग और प्रतियुति योग प्रारम्भ हुआ था। यह इस महीने

भी कायम रहकर अगले महीनें की तुला संक्रान्ति तक बना रहे लेकिन २६ नवम्बर को मंगल के कन्या प्रवेश से फिर कायम हो जाए और २०१४ के जनवरी महीने तक चलेगा। मंगल के वक्रत्व में कु दिनों को छोड़कर २५ मार्च से फिर कायम हो जाएगा। इस केन्द्रीय यो में भारत की अर्थव्यवस्था का काफी नुकसान होगा।

ता. १ से ८ के बीच बाजार गिर-गिरकर संभलता रहेगा पेट्रोल, तेल, गैस के शेयर दबेंगे। इनसे निर्मित अन्य उत्पादों के शेय नीचे का रुख करेंगे। Reliance तथा अन्य शेयरों के भाव दबेंगे। इ समय मंगल नीच राशि में और शनि अपनी उच्च राशि में चल रहा है मंगल कर्क राशि में चलता हुआ ता. ९ को शनि से केन्द्र योग बनाएगा दोनों की एक-दूसरे पर दृष्टि भी है जिससे इस समय तेज गिरावट होगी गिरावट ता. ११ तक जारी रहेगी। आगे बाजार दुतर्फा रुख लेकर चलेग लेकिन रुख गिरावट का ही रहेगा। बाजार में मन्दी की धारणा ब जाएगी। भय-आशंका का माहौल बनेगा।

ता. १६ को बाजार मन्दी में रहेगा और अगले दिन ता. १७ क शनि-राहु की युति होगी। शनि-राहु इस समय अपने नब्बे वर्षीय साइकि को पूरा कर रहे है। बाजार में बिकवाली दबाव बन जाएगा और अग दिन ता. १८ को शुक्र की शनि राहु से युति होगी। बाजार मन्दी की चपे में रहेगा। यदि आगे किसी दिन बाजार में सुधार हुआ भी तो वह फि मन्दी में चला जाएगा। महीने का अन्त मन्दी में ही होगा।

**अक्टूबर**- ता. २ को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश करके गुरु से षडाष्टक सम्बन्ध बनाएगा। महीने के शुरु में बैन्क शेयर अपने भाव प मजबूत दिखलाई देंगे। ता. ५ को मंगल सिंह में प्रवेश करके हर्शल से

षडाष्टक योग बनाकर उस पर पूर्ण अष्टम दृष्टि रखेगा। Infrastructure, Steel & Iron मजबूत होगा। मंगल का शुक्र से केन्द्र योग मन्दी बनाने में सहयोग देगा। बैन्किंग शेयर संभल-संभलकर गिरते रहेंगे। मंगल का नेपच्यून से प्रतियोग भी मन्दीकारक है। Electronic, Media, Mobile, उद्योग के शेयर दबेंगे। ता. २१ को वक्री बुध बाजार की मन्दी और बढ़ाएगा। इस महीने तुला राशि में बना चतुर्ग्रही योग बाजार में मन्दी को बढ़ाएगा। महीने के अन्त में ता. २९ से तुला राशि के स्वाती नक्षत्र में यह सभी चारो ग्रह इकट्ठा हो जाएंगे। मन्दी का बाजार इस समय अपने नीचे के स्त्तर पर पहुंचेगा। इस महीने दो प्रमुख योग बन रहे है जिससे बाजार का संकट और बढ़ेगा। ता. ११ से ता.३१ तक शनि-राहु क्रान्तिसाम्य की स्थिति में रहेंगे तथा ता. १३ से ३० तक हर्शल-प्लूटो केन्द्र की स्थिति में रहेंगे जिससे बाजार लगातार मन्दी की चपेट में रहेगा।

ता. २ से ही बाजार का दबना शुरु हो जाएगा। ता. ३ को सूर्य-हर्शल युति से बाजार हल्का संभल सकता है। ता. ५ को बुध की राहु से पहली युति होगी। बाजार यहां से मन्दी की ओर जाएगा। बैन्क के शेयर कमजोर होंगे। इसके साथ ही अन्य शेयर कमजोर होंगे। ता. ६ या ७ को प्रतिक्रिया में बाजार संभल सकता है। ता. ९ को बुध की शनि से युति पहली बार होगी। ता. ९-१० को बाजार कुछ अधिक ही गिर सकता है। बैन्क के शेयर लगातार कमजोर होते रहेंगे। इस महीने गिरावट चौतरफा होगी। सभी सेक्टर के शेयर नीचे का रुख करेंगे। यहां से बाजार लगातार कमजोर होगा। शेयर के भाव और Index दोनों नीचे जाएंगे। यदि Index बचाने के लिए कवायद नहीं की गयी तो १४०००

टूटने के बाद Sensex १२००० भी हो सकता है।

ता. २९ को वक्री बुध से शनि की दूसरी युति होगी। ता. ३०-३१ बाजार मन्दी में ही रहेगा। यह महीना निराशाजनक रहेगा औ बाजार में निवेशक नहीं रहेंगे। पूरा महीना अफरा-तफरी का माहौल रहेगा।

**नवम्बर**-इस महीने केवल सूर्य और मंगल राशि बदल रहे हैं ता. १६ को सूर्य राशि बदलकर वृश्चिक में प्रवेश कर रहा है और ता २६ को मंगल कन्या राशि में प्रवेश कर हर्शल और गुरु से केन्द्र यो बनाएगा। महीने में बनने वाले ग्रह योगों से बाजार में मन्दी बनी रहेगी बीच-बीच में रिकवरी होते रहने से हो सकता है कि मन्दी-तेजी बराब की हो जाए। ता. ७ को गुरु वक्री होकर बाजार की रिकवरी में सहयो देगा।

ता. १ को हर्शल-प्लूटो केन्द्र से बाजार में मन्दी बनी रहेगी ता. ३ को दीपावली हो रही है। इसी दिन खग्रास सूर्यग्रहण हो रहा है इसी दिन बुध की राहु से तीसरी युति हो रही है। ग्रहण के समय सूर्य के तीन अंश पीछे बुध और तीन अंश आगे शनि रहेगा। ६ अंश के अन्द ही सभी ग्रह रहेंगे। इससे शेयर बाजार का मुहूर्त कारोबार मन्दी में ही होगा।

ता. ६ को सूर्य-शनि युति भी मन्दीकारक है। मन्दी ता. ८ तक बनी रह सकती है। ता. ९ से १३ तक रिकवरी का समय हो सकता है जिससे इस महीने जितनी गिरावट अब तक हुई है वह दूर हो जाए।

ता. १५ से गिरावट का रुख फिर बनेगा। ता. १९ को बुध-राहु की तीसरी युति के बाद गिरावट रुक सकती है। ता. २० से सुधार क

दौर चालू होकर ता. २१ को भी बना रहेगा। ता. २२ या २३ तक जो भी सुधार होना है वह होकर आगे मन्दा फिर मार देगा। इस महीने मन्दी कमजोर होते हुए भी बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी।

**दिसम्बर**- महीने के शुरु में बुध एवं सूर्य वृश्चिक में चलेंगे। मंगल से दोनों का त्रिरेकादश बनने से मन्दी का जोर कम होगा। ता. १५ को सूर्य और ता. २० को बुध धनु में प्रवेश करके केन्द्रात्मक योग मजबूत करेंगे। जिससे उतार-चढ़ाव के बावजूद बाजार एक स्तर पर टिका रह सकता है। ता. ७ को शुक्र नियन्त्रण में आ जाएगा। इससे इसके अधिकार के शेयर में गिरावट रुकेगी। ता. १७ दिसम्बर से बुध Out Of Control होगा। इससे Media, I.T., Software, के शेयर कमजोर होंगे। जिस शेयर में गिरावट होगी तेज होगी।

महीने की पहली तारीख को गिरावट का रुख रहेगा। ता. ३ को सुधार होकर आगे कुछ दिनों के लिए रुख दुतर्फा और अनिश्चित रहेगा। एक दिन तेज तो दूसरे दिन मन्दा या दो दिन तेज, दो दिन मन्दा इस तरह का बाजार चलता रहेगा। गुरु-शनि का त्रिकोण बन रहा है जो ता. १३ को पूरा होगा। यह योग मन्दीकारक रहेगा। एक सप्ताह तक यह कभी भी अपना प्रभाव डाल सकता है। इसकी दी हुई मन्दी कष्टकारक रहेगी। यह सभी शेयरों पर अपना प्रभाव डालेगा और भाव नीचा होगा। मन्दी ता. १९ तक बनी रहेगी। ता. १६ से २६ के बीच मन्दी के माहौल में भी Turn Over बढ़ा रहेगा। ता. २९ को सूर्य-बुध युति मन्दीकारक रहेगी। महीने का अन्त मन्दी में होगा।

मन्दी के पिछले वर्षो की अपेक्षा यह वर्ष कष्टकारी रहेगा। यदि कुछ महीने को ध्यान न दें तो पूरा वर्ष मन्दड़ियों का रहेगा।

# सोना-चांदी-२०१३

सन २०१२ में सोने में नीचे का भाव १६ मई को बना जब सोना १५५० डालर के नीचे बन्द हुआ था। ता. १५ मई को शुक्र वक्री हुआ था। और १६ मई को वक्री स्थिति में शनि कन्या में प्रवेश किया। उसके बाद अगला नीचे का भाव ३० मई को बना जो १५४० डालर था। ता. २७ जून को शुक्र के मार्गी होने पर सोना १५७४ डालर पर बन्द हुआ जो वक्री होने के पहले के भाव से ऊँचा था। वक्री होने के पहले १५ मई को इसका भाव १५५७ डालर था। शुक्र जब भी वक्री होता है नीचे-ऊपर दोनों कां भाव दिखा देता है। अब १५४० डालर के भाव पर पहुंचने में समय लगेगा या यह भी हो सकता है कि अब इस भाव पर कभी न पहुंचे। इसलिए १६०० डालर के नीचे या इसके आस-पास के भाव पर निवेश करने से आप हमेशा लाभ की स्थिति में रहेंगे।

दूसरा प्रमुख ग्रह योग हर्शल-प्लूटो केन्द्र का २४ जून को बना और अगले दिन ता. २५ जून को गुरु-नेपच्यून केन्द्र बना। इसके विषय में पिछले कई वर्षो से कहा जा रहा था कि यह कई देशों की अर्थव्यवस्था ध्वस्त कर देगा और दिवालियापन पर ले आ देगा। विश्वव्यापी मन्दी और बढ़ेगी तथा औद्योगिक उत्पादन घटेगा। बेरोजगारी तथा महंगाई बढ़ेगी। यही सब घटित हो रहा है। प्लूटो का सम्बन्ध मुद्रा से नहीं है लेकिन ऋण से पूरी तरह है। यह ऋण भार बढ़ाकर उससे भी अधिक कष्ट देने में समर्थ हो जाता है। इसका यह पहला केन्द्र हर्शल से बना जिसमें गुरु-नेपच्यून ने सहयोग देकर मुद्रा संकट बढ़ा दिया। जून का महीना भारत में मानसून और वर्षा का रहता है, मानसून कमजोर करके कृषि उत्पादन पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। जब सोने का अधिकतम

भाव १९०० डालर का हुआ, रुपए में इसका भाव आज के भाव से कम था। इस समय १६०० डालर के आस-पास सोना चल रहा है लेकिन डालर का भाव रुपए में उस समय के भाव से भी ऊपर चल रहा है। डालर-रुपया की तुलना में यदि हम उस समय १६०० डालर के स्तर पर सोने में निवेश करते तो ३०० डालर का मुनाफा होता। रुपए का पतन ३०० डालर का निवेशकों को फायदा दिया।

पिछले वर्ष हमने अपनी पुस्तक वायदा-हाजिर भविष्यफल में लिखा था कि अप्रैल में तेजी ता. २९ तक बनेगी और मई का महीना अनिश्चय, अफरा-तफरी का रहेगा। जून में धातु बाजार में संकट की स्थिति रहेगी। ऐसा ही उस समय हुआ था।

हर्शल-प्लूटो केन्द्र से बाजार में चलते भाव से घटा लेकिन १५४० डालर को नहीं छुआ। अब आगे १९ सितम्बर २०१२ में १९ सितम्बर को फिर हर्शल-प्लूटो केन्द्र होगा। इस समय यह मन्दी का अपना प्रभाव देगा। अगले वर्ष सन २०१३ में हर्शल-प्लूटो केन्द्र की कड़ी में पहला केन्द्र २१ मई को और दूसरा केन्द्र १ नवम्बर को होगा। दूसरा केन्द्र अधिक महत्वपूर्ण रहेगा। ता. १ को ही सूर्य बुध युति भी होगी और ता. ३ नवम्बर की अमावस्या को दीपावली और सूर्य ग्रहण भी हो रहा है। ग्रहण के समय शनि भी करीब में है और ता. ६ को सूर्य-शनि युति होगी। इन सबसे फिर कोई नया संकट विश्व अर्थव्यवस्था में खड़ा होगा। सन २०१३ में २१ मई के आस-पास भी अफरा-तफरी मचेगी।

३१ मई को गुरु मिथुन राशि में बुध और शुक्र के साथ-साथ चलेगा। यहाँ से यह शनि और नेपच्यून के साथ Grand Trine बनाएगा। ता. १७-१८ जुलाई को इन तीन बड़े ग्रहों का Grand Trine बन रहा

है। ता. २० को मंगल भी शनि और नेपच्यून सेGrand Trine बना रहा है। इस महीने विश्व के सभी बाजारों में जमकर उतार-चढ़ाव होगा। यदि इस महीने आप सौदा कर रहे हों तो Stop Loss जरुर लगांए। यदि सौदा विपरीत हो जाए तो उसको तुरन्त काट दें और घाटा बुक करें।

इस वर्ष अनेकों ग्रह योग बन रहे हैं जो इसके पहले नहीं बने। उदाहरण के लिए ऊपर गुरु का शनि-नेपच्यून और मंगल का गुरु युति के साथ ही शनि-नेपच्यून से Grand Trine । इसी के साथ ही राहु-शनि का एक साथ संचार भी हो रहा है। राहु-शनि अपनी ९० वर्षीय Cycle पूरी कर रहे हैं। सोने-चांदी की तेजी-मन्दी के लिए आप हमसे सम्पर्क करें और फायदा उठाएं। सन २०१२ में चांदी की रफ्तार अलग रही। यह सोने की तेजी-मन्दी के साथ नहीं चली शुक्र के वृष में प्रवेश के समय मन्दी या तेजी का कोई भाव नहीं बना। कारण वृष में कई ग्रहों का जमावड़ा चल रहा था। इस समय के बीच केवल ३ डालर के बीच दुतर्फा रुख लेकर चली। इसका जुलाई तक का नीचे का भाव २६.६७ डालर चल रहा है। यदि आने वाले समय में इसने ऊपर का रुख किया तो जब तक ३१ या ३२ डालर के ऊपर नहीं जाती तब तेजी का अच्छा रुख नहीं बनेगा। नीचे में यदि २६ डालर तोड़ दे तो २४ डालर और उसको भी तोड़ दे तो २२ डालर तक नीचे का भाव बन सकता हैं,हांलाकि यह केवल संभावना है।

आर्थिक अनिश्चितता की स्थिति में या जब अर्थव्यवस्था में मन्दी का समय चल रहा हो, सोने का भाव बढ़ जाता है। उसी तरह महंगाई-मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ रही हो तब भी सोने का भाव बढ़ जाता है। दुर्भाग्य से अगले वर्ष भी ग्रहयोगों के प्रभाव से आर्थिक अनिश्चय की स्थिति खतम होने वाली नहीं है। अभी अगले कई वर्ष

यही स्थिति बनी रहेगी। हो सकता है इस स्थिति के बीतने तक यह दशक समाप्त हो जाए।

सोने के भाव पर सन २०१३ के लिए विचार करें तो पहले १९ सितम्बर २०१२ को हर्शल-प्लूटो केन्द्र बीतने के बाद निर्णय लेना होगा। अगर २०१३ की शुरुआत १७०० डालर के आस-पास से होती है तो आगे इस वर्ष १९०० डालर के पास पहुंच सकता है।

सन २०११ में यदि हम दो गिरावट को हटा दें जो सितम्बर और नवम्बर में हुई तो पूरे वर्ष सोना १२ प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ा सन २०१२ की शुरुआत १६०० डालर से हुई और १९ जून को इसके लिखने के समय १६२० डालर के आस-पास था। घटा-बढ़ी बहुत तेज हुई। ऊँचे का भाव होने और मांग घटने से तथा डालर की मजबूती से इसका भाव रुका हुआ है। भारत में आभूषण बनाने वालों तथा घरेलू खरीदारी भी घटने से भाव एक स्तर पर रुका हुआ है। ग्रह योग ठीक होने से इसकी मांग में फिर बढ़ोतरी होगी। चालू खाता और बजटीय घाटे के कारण सरकारी नीति से इसका भाव जरुरत से अधिक होगा। सोने की तेजी अभी आगे कई साल बनी रहेगी।

हमारा पड़ोसी चीन विश्व नेतृत्व करने के लिए तैयारी में लगा है। यह केवल सोना ही नहीं संग्रह कर रहा है बल्कि सोने की खान भी खरीद रहा है। इसके लिए यह खासकर अफ्रीकी देशों में खान खरीद रहा है जिससे भविष्य में सोने के बाजार के साथ ही इसके भाव को भी अपने नियन्त्रण में रख सके। वर्तमान में यह इरान पर अमेरिकन आर्थिक बन्दिश के विरुद्ध तेल के बदले में सोना देने की पेशकश की है। चीन का सोने का आयात पहले बहुत अधिक हो चुका है। अब आगे सोने की खरीद से कितना भाव बढ़ेगा भविष्य में पता चलेगा। इस स्थिति में सोना

२०१३ के लिए भाव का जो अनुमान लिखे है वह और बढ़ जाएगा और २००० डालर के आस-पास पहुंच सकता है।

**जनवरी**- ता. १ से ७ या ८ तक बाजार तेजी से ऊपर-नीचे होगा। अब तक बाजार में भाव तेजी का बना रहेगा। ता. ३ को बढ़ा हुआ बाजार रात में अमेरिका में बुध-हर्शल केन्द्र से ऊँचे के भाव से दबकर बन्द होगा। ता. ४ को भी तेजी बनी रहेगी। ता. ६ को बुध-प्लूटो युति तेजीकारक है। ता. ७ को मंगल-शनि केन्द्र से अमेरिका बाजार दबेगा। ता. १० को बाजार मन्दी में ही रहेगा। ता. ११ को अमावस्या धनु में हो रही है जिससे अगले दिन मन्दा होगा। ता. १४ जनवरी की मकर संक्रान्ति के बाद जेनरल लाइन मन्दी की होगी। ता. २० तक बाजार लगातार दबेगा। इसके बाद महीने का अन्त कमजोरी के साथ होगा।

**फरवरी**- पिछले महीने से जारी अफरा-तफरी इस महीने ता. ४ से ८ के बीच भी रहेगी। ता. ४ को दुतर्फा रुख बाजार में रहना चाहिए। ता. ८ के बाद तेजी की स्थिति बनेगी। ता. २७ को मंगल-बुध युति के बाद अगले दिन बाजार गिरेगा। महीने के अन्त में बाजार दुतर्फा रुख में रहेगा।

**नोट**- ता. १२ फरवरी के बाद चांदी में मन्दी का चान्स बन रहा है। यदि ऐसा हुआ तो चांदी दबती जाएगी और उसके साथ अन्य धातुएं भी दबेगी। इस स्थिति में मार्च तक मन्दा रह सकता है।

**मार्च**- ता. ४ को सूर्य-बुध युति के बाद बाजार एक मन्दा मारकर दुतर्फा रुख देगा। ता. ७ को बुध-शुक्र युति तेजीकारक हो सकती है। इस महीने पांच ग्रह नेपच्यून-शुक्र-सूर्य-बुध-मंगल बहुत करीब रहकर चलेंगे। महीने के अन्त में मन्दी का कई झटका लगने के

बाद बाजार तेजी में आ जाएगा।

**अप्रैल**- महीने की शुरुआत अफरा-तफरी से होगी। मीन में हर्शल-सूर्य-शुक्र, मंगल और बाद में बुध का साथ होना अच्छी तेजी को बना रहा है। बाजार तेज घटा-बढ़ी और अफरा-तफरी में ता. १० तक फंसा रहेगा। बाजार में रह-रहकर मन्दी का झटका भी लगेगा। नीचे-ऊपर के भाव में काफी अन्तर रहने से सभी Stop Loss गायब होता रहेगा। ता. १० के बाद सूर्य-मंगल की युति की स्थिति बनी रहेगी। ता. २० के आस-पास एक अच्छा मन्दा मारेगा। शुक्र इस समय शनि से प्रतियुति की स्थिति में है और इनकी युति २२ को हो रही है, यह दो दिन आगे या दो दिन बाद तक असर दिखा जा सकता है। ता. १५ से २३ के बीच फिर अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। चांदी का भाव अधिक तेजी से बढ़ सकता है। महीने के अन्त में तेजी का सट्टा जमा रहेगा।

**मई**- मई के शुरु में बुध-मंगल-सूर्य-केतु-शुक्र पंचग्रही योग बना रहे हैं। सभी ग्रह शनि-राहु से प्रतियुति भी करेंगे। बाजार में उन्माद का जोर बढ़ जाएगा। ता. १ को मंगल-शनि प्रतियुति होगी, बाजार एक बार मन्दी का झटका देकर बाद में संभल जाएगा। बाजार अचानक पलटा खाएगा। ता. ११ को सूर्य-बुध युति से बाजार नीचे-ऊपर होता हुआ तेज ही रहेगा। दो दिन बाद ही बाजार की तेजी बढ़ना शुरु हो जाएगी। मन्दी का झटका खाकर बाजार ऊपर आता रहेगा। महीना तेजी प्रधान ही रहेगा।

**जून**- यह महीना तेजड़ियों-मन्दड़ियों के बीच उठापटक का रहेगा जिसमें महीने के अन्त में तेजड़ियों की जीत होगी। बुध वक्री होकर तेजी को और बढ़ा देगा। ता. ८ से ११ के बीच मन्दी की

संभावना है। यदि तेजी बनी तो तेजी बनी हुई रहेगी। मन्दा मारने प खरीदकर चलें। ता. १७ से २१ के बीच हर घटा भाव तेजी पकड़त रहेगा। वक्री-बुध की शुक्र से युति के बाद महीने के अन्त तक तेज बनी रहेगी।

**जुलाई**- ता. ८ को एक मन्दा मार सकता है इसके बाद बाजा जल्दी ही तेजी पकड़ लेगा। इस महीने मंगल-गुरु युति बाजार में अच्छं तेजी बना सकती है। महीने का अन्त तेजी में होगा। चांदी में अच्छी तेज बननी चाहिए।

**अगस्त**- इस महीने तेजी की रफ्तार कम होगी। ता. ४-५ क मन्दी का झटका लग सकता है। इसके बाद बाजार में तेजी होगी। सिंह संक्रान्ति पर मन्दी का एक झटका फिर लग सकता है। इसके बा संभलता हुआ बाजार ता. २४-२५ को सूर्य-बुध युति से एक बार फि दबेगा। महीने का अन्त तेजी में होगा। शनि-नेपच्यून का क्रान्तिसाम्य भाव अधिक नहीं बढ़ने देगा।

**सितम्बर**- इस महीने तेजी में से जल्दी से जल्दी निकल जान चाहिए। बाजार धीमे-धीमे मन्दी में जाएगा। यदि ऊँचे का भाव दिखा दे तो सतर्क हो जाना चाहिए। ता. १७ को शुक्र-शनि और राहु तीनों क युति होगी जिससे बाजार दुतर्फा रुख से मन्दी में जाएगा। इसी दि चन्द्र-नेपच्यून युति भी हो रही है, यह भी मन्दी में सहयोग देगा। मही का अन्त मन्दी में होने का चान्स बन रहा है। चांदी का भाव अधिक दबेंगा।

**अक्टूबर**- ता. ६ को बुध-राहु युति होगी। बुध इस मही शनि से युति दो बार कर रहा है। पहली युति मार्गी गति से ता. ९ क और दूसरी युति ता. ३० को वक्री होकर करेगा। सौदा करने में उलझन

परेशानी होगी। तेजी-मन्दी समझ में नहीं आएगी। फिर भी महीने का अन्त तेजी में होगा।

**नवम्बर**- बुध इस महीने राहु से ता. ३ को तथा ता. १९ को राहु से दूसरी बार युति करेगा। इसके बाद ता. २६ को शनि से युति करेगा। शनि से यह इसकी तीसरी युति होगी। ता. ६ को सूर्य-शनि युति मन्दीकारक रहेगी। ता.१५-१६-१७ को शुक्र-शनि युति से बाजार मन्दी ही देखेगा। महीने में भाव जब भी बढ़ेगा, जल्दी ही नीचे भी आ जाएगा।

**दिसम्बर**- महीना मन्दी प्रधान ही रहना चाहिए। ता. १ से ६ के बीच मन्दी का वातावरण रहेगा। आगे भी जब बाजार बढ़ेगा, अधिक ऊँचा नहीं हो पाएगा। इस महीने के अन्त में सूर्य-बुध की युति मन्दीकारक रहेगी। महीने का अन्त मन्दी में ही होगा।

## क्रूड आयल (Crude Oil)

इस समय क्रूड का भाव ९०-९५ डालर के आस-पास चल रहा है। गुंरु-नेपच्यून के केन्द्र योग के कारण क्रूड का भाव ऊपर न जाकर बंधा हुआ चल रहा है। एक दायरे में भाव बहुत दिनों से चल रहा है। जैसा कि पिछले वर्ष लिखा गया था कि विकसित देशों की अर्थव्यवस्था बिगड़ने से इसके उत्पादन और मूल्य पर असर पड़ेगा। इसका उत्पादन कम बढ़ने से भाव इस स्तर पर टिका हुआ है और भाव बढ़ नही पा रहा है। अगले वर्ष गुरु राशि बदलने पर प्लूटो से प्रतियुति करेगा। हर्शल का प्लूटो से केन्द्र योग बना रहेगा जो जून में बहुत महत्वपूर्ण रहेगा। गुरु का शनि और नेपच्यून से Grand Trine होगा जो जुलाई में अपनी पूर्णता पर पहुंचेगा। नेपच्यून के इस समय वक्री रहने से भाव अपनी जगह से नीचे होंगे। जुलाई में ही शुक्र की नेपच्यून से

प्रतियुति होगी। अगस्त में सूर्य-बुध से प्रतियुति होगी। सितम्बर से मंगल से अष्टम दृष्ट होगा और अक्टूबर से मंगल से प्रतियुति बनना शुरू हो जाएगा। इन सब ग्रहयोगों से इसका भाव धीमे-धीमे घटने की ओर रहेगा। अगले वर्ष यह अस्सी डालर के नीचे जा सकता है।

तेल उत्पादक मध्य पूर्व के देशों में भी विकास दर घटेगी जिससे तेल का उत्पादन अधिक नहीं बढ़ सकेगा। उसी तरह तेल का आयात करने वालों देशों में मांग एक सीमा के अन्दर ही बढ़ेगी। यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्था इतनी जल्दी सुधरने वाली नहीं है जिससे क्रूड का भाव दबा हुआ रहेगा। इसके रोज के भाव पर ध्यान न देकर लम्बे समय के भाव पर ध्यान दीजिए, कम से कम तीन महीने के भाव के आधार पर सौदा करना चाहिए। अपने ऊँचे भाव से यह अब तक चालीस प्रतिशत नीचे आ चुका है। अब अधिक से अधिक पांच प्रतिशत और नीचे जा सकता है।

सन २०१३ में विश्व अर्थव्यवस्था के गड़बड़ाने के नए सिरे से योग बन रहे है। नई समस्याएं उभड़ेगी और ऐसा होने पर ही इसका भाव और नीचे जा सकता है। यदि रुपए में विचार करें तो घटती हुई रुपए की कीमत और साख के कारण भारत इसका फायदा नहीं उठा पाएगा और रुपए में इसका भाव या तो वर्तमान स्तर पर बना रहे या बहुत कम बढ़ेगा।

हर्शल-प्लूटो केन्द्र के कारण यूरोप की अर्थव्यवस्था अगले वर्ष सन २०१३ में भी और बिगड़ेगी। बेरोजगारी मुद्रास्फीति बढ़ेगी। महंगाई भी बढ़ेगी। इसमें अमेरिका, जापान, सभी शामिल रहेंगे। बैन्कों के लिए बेल आउट अभी और दिया जाएगा। इन सबसे तेल की मांग में कमी होगी और इसका भाव बढ़ नहीं सकेगा, इतना तय है। अगले

वर्ष इसका एवरेज भाव ८५ से ९० डालर होना चाहिए। भाव का उतार-चढ़ाव होने से नीचे का भाव ८० और ऊपर का भाव ११० डालर बनना चाहिए। सन २०१३ में जनवरी में शनि-नेपच्यून क्रान्तिसाम्य की स्थिति में रहेंगे। इसका प्रभाव ता. १ से ८ तक रहेगा। भाव महीने के अन्त तक घटता रहेगा। इस महीने मंगल-नेपच्यून युति होगी। इससे २० से २७ के बीच में मन्दा अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक होगा। वैसे भी जेनरल लाइन मन्दी की रहेगी। भाव घटकर ९० डालर पर होना चाहिए। इससे कम भी हो सकता है।

फरवरी में महीने के शुरु में स्थिति गड़बड़ होगी। इस महीने ता. २ से गुरु-हर्शल त्रिरेकादश की स्थिति में रहेंगे। शनि-प्लूटो का सम्बन्ध त्रिरेकादश का रहेगा। इससे बाजार की स्थिति में सुधार होगा। भाव कुछ समय के लिए बढ़ जाएंगे। सूर्य-नेपच्यून युति से भाव दबकर फिर ऊँचा हो जाएगा।

मार्च के कुम्भ में पंचग्रही योग बन रहा है। सभी ग्रह बहुत करीब होकर चल रहे है। क्रूड तेजी में रहेगा लेकिन महीने के अन्त में मन्दी का कई झटका लगने से भाव नीचे का रुख करेगा। अप्रैल में शुरुआत से ही बाजार तेज घटा-बढ़ी में चलेगा। बाजार में रह-रहकर मन्दी का झटका लगेगा। ता. १० तक तेज घटा-बढ़ी होगी। मंगल का नेपच्यून से त्रिरेकादश योग बनने से बाजार मजबूती में बना रहेगा। इसी महीने में सूर्य के साथ शनि और राहु की प्रतियुति होगी। जिससे तेजी-मन्दी दोनों चलती रहेगी। इस महीने भाव टूटने नहीं पाएगा।

मई में मंगल की शनि और राहु प्रतियुति होगी जिससे मई की शुरुआत में ही भाव घटेगा। आगे बुध की प्रतियुति शनि और राहु से होगी। ता. ५ को शुक्र वृष में प्रवेश करके गुरु का साथ पकड़ेगा और

नेपच्यून से केन्द्र योग बनाएगा। यहां से अच्छी घटा-बढ़ी का माहौल बनेगा। यह घटा-बढ़ी ता. ९-१० से और बढ़ जाएगी। ता. २२ से महीने के अन्त तक शनि-नेपच्यून क्रान्तिसाम्य बनाए रखेंगे जिससे क्रूड का भाव गिरेगा। महीने का अन्त मन्दी से ही होगा। जून में ता. १ से ता. ७ तक हर्शल-प्लूटो केन्द्र की स्थिति में रहेंगे। इससे अनेक नई समस्याएं सामने आएंगी। उनके कारण क्रूड का भाव नीचे का बना रहेगा। ता. ७ के बाद धीमे-धीमे बाजार सुधरेगा। हर घटा हुआ भाव बढ़कर ऊँचा होता रहेगा। ता. १७ से २१ के बीच तेजी और मजबूत होगी।

जुलाई में ता. ८ के आस-पास एक मन्दा बाजार में आएगा। वक्री नेपच्यून से बाजार मजबूत होगा लेकिन ता. ८ को ही शनि मार्गी हो जाएगा जिससे बाजार अधिक नहीं उठने पाएगा। ता. १७ को गुरु-शनि और १८ को गुरु-नेपच्यून Grand Trine होगा। ता. २० को बुध मार्गी होगा और मंगल का शनि और नेपच्यून से Grand Trine होगा। इस समय बहुत तेज घटा-बढ़ी होगी। भाव तेजी से बढ़ेंगे भी और घटेंगे भी। ता. २२ को मंगल की गुरु से युति और ता. २६ को शुक्र की नेपच्यून से प्रतियुति तेजीकारक है। आगे ता. २८ को मन्दी का झटका लगकर महीने का अन्त होगा। अगस्त में ता. १ से ही तेजी रुकना शुरु हो जाएगी और धीमे-धीमे बाजार मन्दी में जाना शुरु होगा। भाव जब भी बढ़ेगा नीचे आएगा। ता. ११ को बुध-शनि केन्द्र और इसी दिन शुक्र का कन्या में प्रवेश मन्दीकारक रहेगा। ता. १६ को सूर्य का सिंह में प्रवेश गिरते बाजार को संभालने की कोशिश करेगा। ता. २० को बुध भी सिंह में प्रवेश करके बाजार संभालेगा। ता. २७ को दुतर्फा रुख रहेगा। इसके बाद क्रूड का भाव नीचे का रुख करेगा। महीने में भाव

बढ़ने नहीं पाएगा। सितम्बर में बाजार धीमे-धीमे दबेगा। ता. ५ को बुध के कन्या में प्रवेश के बाद भाव घटना शुरु होगा। ता. १८ को शुक्र-शनि-राहु की तुला में युति एक ही दिन हो रही है। इससे बाजार मन्दी में जाएगा। ता. २० को गुरु-बुध केन्द्र से भी बाजार दबेगा। आगे भी बाजार दबा हुआ दिखाई देगा। भाव जब भी बढ़ेंगे घटकर नीचे आएंगे।

अक्टूबर में बाजार मन्दा और अनिश्चित रहेगा। बुध इस महीने शनि से दो बार युति कर रहा है। पहली युति ता. ९ को मार्गी गति से और दूसरी युति ता. ३० को वक्री गति से कर रहा है। इस समय सौदा करना मुश्किल रहेगा। तेजी-मन्दी समझ में नहीं आएगी। ता. ११ से महीने के अन्त तक बाजार मन्दी में ही फंसा रहेगा। इस समय तक नीचे का भाव बन जाएगा।

नवम्बर में ता. ७ तक भाव दबा रहने के बाद धीमे-धीमे सुधरना शुरु करेगा। महीने के अन्त में बाजार सुधरा हुआ रहेगा। मन्दी के झटके खाकर भी बाजार संभलता रहेगा। दिसम्बर का महीना अधिकतर दिनों में मन्दा झेलेगा। ता. ६ तक मन्दी का वातावरण रहने के बाद आगे बाजार जब भी बढ़ेगा अधिक ऊँचा नहीं जा सकेगा। महीने का अन्त मन्दी में होगा।

तेजी-मन्दी और तेज उतार- चढ़ाव में काम को सर्तक होकर करना चाहिए।

## तांबा (Copper)

ग्रह योगों के कारण सन २०१३ में भी विश्व की आर्थिक स्थिति बिगड़ी हुई। इसका प्रमुख उपभोक्ता चीन में स्थिति बिगड़ती जा रही है। औद्योगिक विकास की गति धीमी होने के साथ मंहगाई बढ़ रही है और साथ में बेरोजगारी भी बढ़ रही है। सन २०१३ में इसकी

स्थिति पहले से अधिक बिगड़ सकती है और तांबा की मांग घटने से इसका असर इसके भाव पर पड़ेगा। सन २०१२ में इसके विषय में जो लिखा गया वह एकदम सही रहा। जो भी इसका भाव दिया गया था उसी में यह घूमता रहा। जनवरी २०१३ में इसका भाव नीचे के स्तर पर रहेगा। कारण विश्व में मांग धीमे-धीमे बढ़गी लेकिन पूर्ति आवश्यकता से अधिक होगी जिससे भाव नीचे के स्तर के आस-पास घूमता रहेगा। नवम्बर २०१२ में इसका भाव घटना शुरु होकर ता. ९ दिसम्बर के आस-पास नीचे के स्तर पर पहुंच जाएगा। नीचे का स्तर ३८५ के आस-पास होना चाहिए। जनवरी में सूर्य-बुध युति तक जो १८ जनवरी को होगी, इसके बाद भाव सुधरने की तरफ चलेंगे। **फरवरी के शुरु में सभी धातुओं में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी।** भाव बहुत तेजी से ऊपर नीचे होंगे। तांबा का भाव भी ऊपर का रुख करेगा। मार्च में मंगल-गुरु का केन्द्र योग बनेगा जिससे भाव बढ़ता रहेगा। मीन राशि में इस महीने से चतुर्ग्रही योग भाव को धीमे-धीमे बढ़ाता रहेगा। समय-समय पर मन्दी का झटका भी लगेगा। १७ मार्च के बाद मांग भी बढ़ना शुरु हो जाएगी लेकिन पूर्ति न हो पाने से भाव अब तेजी से बढ़ेगा। हर मन्दी के झटके के बाद भाव ऊपर की ओर चलेगा। अप्रैल में भी भाव बढ़ने की ओर रहेगा। पूर्ति लगातार कम होने से इसका बढ़ने की ओर रहेगा।

इस वर्ष १४ जनवरी २०१३ को राहु तुला में प्रवेश करके शनि का साथ पकड़ेगा। जिससे पूर्ति में कमी होगी और भाव का बढ़ना जारी रहेगा लेकिन इन दोनों से गुरु का त्रिकोण भाव को अधिक नहीं बढ़ने देगा। गुरु का त्रिकोण जून २०१३ से शुरु होगा। सौदे में इस सब बात का ध्यान रहे।

अप्रैल मासारम्भ में मीन राशि में हर्शल, सूर्य, शुक्र, मंगल का चतुर्ग्रही योग बन रहा है, सभी ग्रह छः अंश के अन्दर चल रहे है। ता. १२ तक सूर्य-शुक्र-मंगल एक दूसरे से युति की स्थिति में रहेंगे। इससे बाजार में इकतरफा रुख तेजी का बनेगा। धमा-चौकड़ी बनी रहेगी। मन्दी का झटका भी एकाध दिन जोर का लगेगा। ता. १० को बुध-मीन में प्रवेश करेगा। इसी दिन शुक्र मेष में प्रवेश करके मन्दी का तेज झटका देगा। ता. १२ को मंगल और अगले दिन सूर्य मेष में प्रवेश करके मेष में केतु के साथ चतुर्ग्रही योग बनाएंगे। मेष में सभी की प्रतियुति तुला के शनि राहु से होगी। इससे बाजार तेजी में लगभग पूरे महीने बना रहेगा। ता. ४ को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करके गुरु का साथ पकड़ेगा। यहां पर नेपच्यून से केन्द्र योग बनेगा जिससे भाव बढ़ने की रफ्तार कम हो जाएगी। २३ मई से मंगल के वृष में प्रवेश से पंचग्रही योग ता. २७ तक बना रहेगा। ता. २४ मई को शुक्र सभी के नियन्त्रण के बाहर हो जाएगा। ता. २४ को बुध-शुक्र युति के बाद ता. २५ को एक अच्छा मन्दा मारेगा। शुक्र १९ जून तक अनियन्त्रित रहेगा। तेजी यदि कायम रही तो १९ जून तक रहेगी। ता. २२ को मंगल उदय होगा। बाजार यहां से कमजोर होगा। ता. २७ को बुध अस्त होगा और ता. २९ जून गुरु के आर्द्रा में प्रवेश के बाद मन्दी का रुख शुरु हो सकता है। भाव ऊपर के स्तर के आस-पास पहुंच सकता है। इस महीने इतने ग्रह योग बन रहे है कि ता. २४ मई के बाद २१-२२ जून तक कभी भी बाजार मुड़ सकता है। वक्री बुध भी बाजार में तेज मन्दा दे सकता है। ऊँचे का भाव ४६५ पार करने पर ४८० तक जा सकता है।

जुलाई में सोने-चांदी में तेजी बने रहने के कारण यह भी तेज हो सकता है इस स्थिति में यह पूरे महीने तेज रहेगा। मन्दी का झटका

लगकर भी तेज होता रहेगा। अगस्त में धातु बाजार में अनिश्चय की स्थिति बन जाएगी। तांबा पूरे महीने दबता रहेगा। भाव जब भी गिरेगा तेजी से नीचे जाएगा। मंगल का राहु-शनि से केन्द्र, मन्दी बनाएगा। ऊँचे के भाव पर मांग कम होने से और पूर्ति पूरी होने से भाव दबता चला जाएगा। यह स्थिति १० अगस्त के आस-पास बन जाएगी। सितम्बर में शुक्र तुला राशि में ता. ६ को प्रवेश करेगा। यहां पर यह शनि-राहु के साथ होकर गुरु की दृष्टि में रहेगा। बाजार मन्दी की ओर जाएगा। ता..१७ से २० तक यह शनि-राहु से युति करेगा। इन सभी का मंगल से केन्द्र योग भी बन रहा है जिससे बाजार यहां से लगातार नीचे जाएगा। सट्टे में भाव गिरेगा।

ता. ५ को मंगल सिंह में प्रवेश करके बाजार संभालने की कोशिश करेगा। शनि-राहु और गुरु से त्रिरेकादश सम्बन्ध बनेगा। शुक्र से केन्द्र योग बनने के कारण हो सकता है कि भाव बहुत कम बढ़े। ता. २० को नेपच्यून से प्रतियुति मन्दीकारक रहेगी। ता. १० अक्टूबर से बाजार इकतरफा मन्दी भी देख सकता है। नवम्बर में ता. ७ को गुरु वक्री होगा और इसके बाद ९ या १० से बाजार संभलना शुरु हो सकता है। ता. १५ या १६ नवम्बर तक नीचे का रुख एक बार फिर बनाएगा। यहां से मन्दी का रुख बना रहकर ७ दिसम्बर से भाव में हल्का सुधार होगा। महीने के अन्त में भाव कुछ सुधरा हुआ हो सकता है।

जनवरी के बाद फरवरी में सुधरना शुरु होकर जून-जुलाई तक ऊँचे का भाव बन जाएगा उसके बाद दिसम्बर के अन्त तक धीमे-धीमे मन्दा देगा। तांबे में इस वर्ष अच्छा फायदा हो सकता है। यदि आप मार्गदर्शन चाहते है तो हमसे सम्पर्क करें।

## निकल (Nickle)

निकल का बाजार मुख्यतया चीन के स्टेनलेस स्टील उत्पादन और निर्यात पर चलता है। औद्योगिक उत्पादन में कमी के कारण इसका भाव संकट में रहेगा। Base Metal पर प्रभाव डालने वाले ग्रहों का जैसे अन्य धातुओं पर मन्दी का प्रभाव पड़ रहा है उसी तरह इसके ऊपर भी पड़ेगा। इसके भाव में १० प्रतिशत से अधिक की भी गिरावट हो सकती है या सन २०१२ के एवरेज भाव को किसी तरह बचाए रखे।

## अल्यूमिनम (Aluminum)

इस वर्ष रुस राहु-शनि और मंगल के प्रभाव से तेजी से विकसित हो रहे देशों में शुमार होने वाला यह देश भी मन्दी की गिरफ्त में आ जाएगा। विश्व में सबसे अधिक अल्युमिनम पैदा करने वाला है। शनि के तुला में प्रवेश से अल्यूमिनम का भाव गिर रहा है जिससे बाध्य होकर इसको उत्पादन घटाना होगा। इस समय अल्यूमिनम का भाव गिरावट की ओर है। इससे अल्यूमिनम उद्योग मन्दी में आ जाएगा।

पिछले वर्ष के अन्त में अल्यूमिनम भाव पिछले १८ महीने के सबसे नीचे के भाव पर था। मन्दी से बचने के लिए उत्पादन में कटौती ही एक उपाय है। जून २०१२ में वक्री शुक्र महीने के अन्त में इसका निम्न स्तर दिखा दिया। इसके बाद यह धीमे-धीमे सुधरेगा या नीचे के स्तर के आस-पास घूमता रहेगा। सभी उपाय करने के बावजूद जून २०१३ तक इसमें इकतरफा मन्दी समझ में आ रही है। इसके बाद ही भाव संभलना शुरु होगा। नवम्बर २०१३ से भाव में सुधार होना शुरु होगा। इस समय तक गुरु का शनि से और नेपच्यून से त्रिकोण मन्दी बनाए रखेगा।

## जिन्क (Zink)

वैश्विक मन्दी के विचार से और ग्रह योगों से इसका भाव भी मन्दी का रहेगा। अल्यूमिनम के ऊपर जिन ग्रह योगों का प्रभाव होता है उन्ही का प्रभाव इस पर भी पड़ता है। इस समय सभी ग्रह मन्दी देने वाले हैं। सन २००८ से ही बाजार में अत्यधिक पूर्ति की समस्या बनी हुई है और इस वर्ष भी पूर्ति अधिक होगी। जैसा कि जिन्क के बारे में लिखा गया है कि मन्दी में चल रहा बाजार जून २०१३ तक ऐसा ही चलता रहेगा। मन्दी के भाव से तभी छुटकारा मिलेगा जब यूरोप और चीन में इसकी मांग बढ़े। स्थिति देखते हुए अभी ऐसा नहीं लगता। सभी देश मन्दी की समस्या से जूझ रहे है। अतः नवम्बर २०१३ तक इसके भाव में ऐसी ही स्थिति बनी रहेगी। यह सभी-धातुएं अधिक पूर्ति और कम मांग की समस्या से ग्रस्त रहेंगी।

## रीयल इस्टेट (Real Estate)

विश्व को मन्दी में ढकेलने वाला यह क्षेत्र जैसा कि पिछले वर्ष लिखा गया था कि हर्शल-प्लूटो केन्द्र के कारण सन २०१५ तक समस्या से ग्रस्त रहेगा सच साबित हो रहा है। यदि और पीछे जांए तो २००७ में ही यह कहा गया था कि रीयल इस्टेट में भंयकर मन्दी आ रही है और यह कई वर्षो तक जारी रहेगी। सन २०१३ में इस क्षेत्र में ब्याज की समस्या फिर आएगी और यह क्षेत्र फिर से बढ़ी हुई नई समस्याओं का सामना करेगा। मन्दी अभी कम से कम आगे तीन वर्ष बनी रहेगी।

## रुई-कपास

इस वर्ष ता. १४ जनवरी को राहु तुला राशि में प्रवेश करके शनि का साथ पकड़ रहा है। तुला राशि का रुई के उत्पादन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इस राशि में दो पाप ग्रहों के संचार से रुई का उत्पादन घटना चाहिए, या तो रुई की फसल कमजोर होगी या किसी अन्य कारण से पिछले वर्ष की अपेक्षा फसल इस साल कम होगी। इस कारण से पिछले वर्ष के स्टाक का सहारा लेना पड़ेगा। कीमत को नियन्त्रण में करने के लिए निर्यात रोकना होगा। शनि-राहु के कारण रुई-कपास की गुणवत्ता में भी कमी आएगी। नेपच्यून का शनि-राहु से त्रिकोण भाव बढ़ने नहीं देगा। सटोरिया वर्ग अपने तरह से समय-समय पर भाव बढ़ाता रहेगा। दिसम्बर में भाव हल्का दबेगा।

**जनवरी**- पिछले महीने का बना हुआ ट्रेण्ड इस महीने के शुरु में जारी रहेगा। भाव लगातार एक ही दायरे में चलते हुए कुछ मजबूत होंगे। ता. १५ के आस-पास भाव में नीचे ऊपर दोनों का उछाला आएगा। पहले भाव बढ़कर बाद में जल्दी ही दब जाएगा। इसके बाद भाव एक सीमित दायरे में चलते हुए ता. १६ के आस-पास दबेगा। ता. २८ को शुक्र अपने मित्र शनि की राशि मकर में प्रवेश करके इस तारीख के आस-पास भाव तेज करेगा। महीने के अन्त तक रुई-कपास का बाजार सुधरता रहेगा।

**फरवरी**- फरवरी के शुरु में रुई में तेजी बनी रहेगी। इस महीने बुध और मंगल की दो बार युति होगी। पहली ता. ८ को और दूसरी युति ता. २६ को। यह दोनों युतियां कुम्भ राशि में हो रही हैं और रुई-कपास के अलावा अन्य कई बाजार में भी तेजी का संचार होगा। इस महीने कुम्भ राशि में अनेक महत्वपूर्ण योग बन रहे हैं। इनके प्रभाव से रुई-

कपास का भाव बढ़ेगा। मिलों में अचानक मांग बढ़ेगी। जिससे भाव तेजी के बन जाएंगे। हो सकता है यहां से तेजी शुरु होकर अप्रैल तक अच्छा भाव बढ़ जाए।

**मार्च**- मार्च की शुरुआत तेजी से होगी। भाव बहुत तेजी से नहीं बढ़ेंगे। यदि तेजड़िया वर्ग ने बाजार को कब्जे में कर लिया तो भाव बढ़ते देर नहीं लगेगी। इस स्थिति में भाव तेजी से और अचानक बढ़ेगा। महीने के बीच में मन्दी के झटके लगते रहने के बावजूद संभलकर तेजी में आता रहेगा। मीन में संचार कर रहे ग्रहों का शनि-राहु से षडाष्टक और गुरु से त्रिरेकादश सम्बन्ध अच्छी तेजी दे सकता है। ता. ३१ के आस-पास भाव दबेगा।

**अप्रैल**- अप्रैल के शुरु से ही बाजार में मजबूती बढ़ना शुरु हो जाएगी। ता. ७ को मंगल-शुक्र युति होगी। मीन में हर्शल-सूर्य भी साथ चल रहे है। भाव का बढ़ना जारी हो जाएगा। यहां से कुछ दिनों के लिए इकतरफा तेजी पकड़ सकती है। ता. १० को शुक्र और बुध दोनों एक साथ मेष तथा मीन में प्रवेश कर रहे हैं। ता. १२ को मंगल भी मेष में प्रवेश कर रहा है। ता. १४ को सूर्य और जल्दी ही बुध भी मेष में प्रवेश करके आपस में युति और सामने राहु-शनि से प्रतियुति कर रहे हैं इससे रुई में जोरदार तेजी बनेगी।

**मई**- इस महीने के शुरु से महीने के अन्त तक लगातार महत्वपूर्ण योग बन रहे हैं जो रुई के बाजार में अच्छी घट-बढ़ करेंगे। ता. ४ को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करके गुरु का साथ पकड़ेगा। ता. ९ को हर्शल ऐसा बड़ा ग्रह रेवती नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है जिसमें यह दो वर्ष तक रहेगा। बुध-सूर्य के बाद ता. २३ को मंगल भी वृष में प्रवेश करके ता. २७ तक पंचग्रही योग बना रहा है। इन सभी योगों से रुई-कपास के भाव एकाएक काफी चढ़ेंगे। भाव बढ़ने की चाल लगभग पूरे

महीने बनी रहेगी।

**जून**- ता. ३१ मई को गुरु वृष राशि छोड़कर मिथुन में प्रवेश करके शुक्र के साथ चलेगा। इस समय यह तुला के शनि-राहु और कुम्भ के नेपच्यून से Grand Trine बनाएगा जिससे तेजी रुकती दिखाई देगी। हो सकता है कि यहां भाव अपनी ऊँचाई पर पहुंच चुके हों जिससे बाजार में बिकवाली दबाव बने। इस तारीख के आस-पास बाजार में Turning Point बनेगा भाव एक बार तेजी से नीचे आएंगे। ता. ६-७ को जमकर घटा-बढ़ी होगी और ता. १३ को शुक्र-हर्शल केन्द्र से भाव दबेगा। बाजार में कमजोरी यहां दिखाई देने लगेगी। तेजड़िया अब भाव को ज्यादा ऊँचा नहीं उठा पाएंगे। एक ही भाव के आस-पास चलता बाजार ता. २५ या २६ को मन्दा मार देगा।

**जुलाई**- जुलाई महीने में रुई-कपास के बाजारों में कमजोरी आना शुरु हो जाएगी। तेजी के ग्रहयोग कम होते जा रहे हैं जिससे सटोरिया वर्ग भी अब भाव बढ़ाते-बढ़ाते थक जाएगा। भाव अचानक इस महीने कम नहीं होगा लेकिन ता. १० के आस-पास अपने सबसे ऊँचे भाव तक पहुंच चुका होगा। गिरते हुए भाव को ता. १७-१८ के करीब सर्पोट मिलेगा लेकिन बाजार मजबूत नहीं होगा। ता. १७ को हर्शल वक्री हो रहा है और २० को बुध मार्गी हो रहा है दोनों मिलकर मन्दी देने वाले हैं। केवल रुई के बाजार में ही नहीं अन्य बाजारों में भी अच्छा Reversal होगा।

**अगस्त**- तेजी के सभी ग्रह इस महीने शान्त हो जाएंगे। अनेक बाजार में शंका की स्थिति बनेगी। शुक्र सिंह राशि में चलता हुआ शनि-राहु से त्रिरेकादश और गुरु-मंगल से भी त्रिरेकादश बना रहा है और नेपच्यून से प्रतियुति कर रहा है। शनि लगभग पूरे महीने नेपच्यून से

क्रान्तिसाम्य की स्थिति बनाए रखेगा जिससे भाव का बढ़ना रुककर बाजार मन्दी की ओर चलेगा। धीमे-धीमे बाजार अफरा-तफरी की स्थिति में पहुंचेगा। ता. ११ से १६ के बीच यह स्थिति बन जाएगी। भाव का गिरना शुरु होगा। सभी बिकवाली को तैयार होंगे ता. १६ के बाद खरीदार गायब हो जाएंगे। भाव का गिरना लगातार जारी रहेगा। कभी-क़दा प्रतिक्रिया में भाव का गिरना रुकेगा और भाव कुछ सुधर सकते हैं।

**नोट**- इस वर्ष मानसून पिछले वर्ष की अपेक्षा कमजोर आने का चान्स बन रहा है जिससे जून में तेजी को बल मिलेगा। ता. ९ जुलाई के बाद और २५ अगस्त तक मानसूनी वर्षा अच्छी हो सकती है जिससे जुलाई में बेचना शुरुकर अगस्त में सभी बिकवाली पर आ सकते है। मन्दी के लिए मानसून अकेला ही काफी रहेगा। इसलिए शुरु में कमजोर मानसून होने पर भी जुलाई से लगातार ध्यान रखिएगा। मानसून पर ध्यान न देने से धोखा खा सकते हैं।

**सितम्बर**- महीना मन्दी में ही शुरु होकर मन्दी में समाप्त होगा। पिछले महीने की मन्दी जारी रहेगी और ता. ६ को शुक्र अपनी राशि तुला में प्रवेश करके शनि-तथा राहु का साथ पकड़ेगा। राहु-शनि भी इस महीने आपस ता. १७ को युति करेंगे। महीने के अन्त में ता. २५ को बुध तुला में चतुर्ग्रही योग बना देगा। गुरु की इस पर पूर्ण पांचवी दृष्टि होगी। यह सभी योग बाजार को मन्दी में पूरी तरह ढकेल देंगे। यह भी संभावना बन रही है कि मन्दी का बाजार अपने पिछले नीचे के भाव पर फिर वापस आ जाए। अतः तेजी के मनोवृत्ति वाले व्यापारियों को इस बाजार से जुलाई में ही हट जाना चाहिए। मन्दड़िए इस समय अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। लम्बे सौदे में अच्छा लाभ होगा।

ता. ६ को मन्दा मारने के बाद भाव नीचे आता रहेगा। ता. ९ को मंगल-शनि केन्द्र से भाव फिर दबेगा। ता. ११ जुलाई दुतर्फा रुख के

साथ भाव नीचे का रुख करेगा। ता. १४ को शुक्र-नेपच्यून त्रिकोण से रुख दुतर्फा होकर भाव नीचे होगा। हर बढ़ा भाव नीचे जाएगा। ता. १७ से लेकर ता. २० तक का समय विशेष हो सकता है कि सभी बिकवाल हो जांए। ता. १७ को शनि-राहु की युति होगी। ता. १८ को एक ही दिन में शुक्र की शनि और राहु दोनों से युति होगी। ता. २० को बुध-गुरु केन्द्र होगा। इन सब योगों से बाजार काफी टूटेगा। ता. २५ को बुध तुला में प्रवेश करके स्थिति और खराब करेगा। पूरा महीना कष्टकारी बना रहेगा। बाजार लगातार गिरेगा।

**अक्टूबर**- शुक्र सभी ग्रहों से युति करके आगे बढ़ने पर बाजार की दशा और खराब होने से बचाएगा। इसमें उसको बुध और गुरु का सहयोग मिलेगा। भाव का गिरना कुछ समय के लिए रुक सकता है या बहुत कम घटे। ता. ५ को बुध की राहु से और ८ को शनि से युति होगी। यह दोनों युतियां बाजार को बढ़ने नहीं देगी। बुध दोनों ग्रहों से तीन बार युति कर रहा है जिससे बाजार में सुधार की आशा नहीं बन रही है। ता. १७ को सूर्य तुला राशि में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बना रहा है, यह भी बाजार में मन्दी में सहयोग करेगा। भाव दबकर चलते रहेंगे। कमोडिटी बाजार ता. १२ से १८ के बीच मन्दी में ही रहेगा। इसका असर रुई-कपास के ऊपर मन्दी का ही रहेगा। ता. २१ को बुध वक्री होकर मन्दी में ही फंसाए रखेगा। महीने के अन्त में मन्दा रहेगा।

**नवम्बर**- ता. ३ को खग्रास सूर्य ग्रहण होगा। ग्रहण के समय तुला राशि में पंचग्रही योग रहेगा। इसी दिन बुध-राहु की युति दूसरी बार होगी। ग्रहण मन्दीकारक रहेगा। ता. ६ को सूर्य-शनि युति से बाजार बाद में हल्का बढ़ सकता है या गिरने न पाए। ता. १० को बुध मार्गी होकर बाजार का गिरना रोकेगा लेकिन ता. १३ को एक बार फिर दबेगा

जो ता. १५ तक दबा रहेगा। इसी समय नीचे का भाव बनेगा। जनवरी के आस-पास से चला बाजार अपने पुराने भाव को एक बार फिर देख सकता है। इस महीने शुक्र-गुरु से प्रतियुति की स्थिति में रहने से महीने के अन्त में बाजार संभलने चल पड़ेगा। मन्दी के सौदे में से ता. १३ के बाद हटने को सोचना चाहिए।

**दिसम्बर**- पिछले महीने ता. १७ के बाद बाजार का गिरना रुकेगा और इस महीने ता. ७ के बाद भाव एक स्थान पर रुकेंगे। ता. ५ को शुक्र मकर में प्रवेश कर रहा है। यहां पर यह शनि-राहु से केन्द्र की स्थिति में रहेगा। इसलिए भाव में तेजी नहीं बन पाएगी। भाव एक जगह मजबूत होने की कोशिश करेंगे और महीने के अन्त तक ऊँचा उठ सकते हैं। पुनर्वसु का वक्री गुरु तेजी को रोकेगा। ता. १७ को हर्शल मार्गी होकर भाव को ऊँचा उठने से रोकेगा। ता. २२ को शुक्र वक्री होगा जिससे भाव में हल्का सुधार होगा। तेजी की आशा नहीं करें। शुक्र मकर राशि में वक्री होकर धनु राशि में अगले महीने ता. ६ जनवरी को पुनः धनु राशि में प्रवेश करेगा। यहां पर जो ग्रह योग बनेंगे वह काफी उलट-फेर करेंगे। इसको अगले वर्ष लिखा जाएगा।

रुई-कपास-जूट में इस वर्ष काफी उलट-फेर होगा। फरवरी में भाव बढ़ना शुरु हो जाएगा। मई तक तेजी देखकर ता. ३१ के आस-पास बाजार में Reversal या Turning Point बनेगा। जून में भाव का दबना शुरु होगा और जुलाई में मन्दा छा जाएगा। मन्दा फिर लगातार बना रहेगा और दिसम्बर का अन्त मन्दी में होगा। यदि लिखा हुआ सब ठीक गया तो तेजी में भाव ड्योढ़े से ऊपर हो सकते हैं। उसी तरह मन्दी में तेजी का सभी भाव गायब होकर पुराने भाव या उससे भी नीचे नवम्बर में जा सकता है।

# मूंगफली 2013

तेल-तिलहन बाजार में मूंगफली का सबसे अधिक महत्व है। इसके बीज-तेल तथा खल के व्यवसाय में भाव तेजी से ऊपर नीचे होते हैं। इसके भाव में बदलाव होने पर इसका असर अन्य तिलहन बाजारों पर भी पड़ता है। इसके भाव गिरने के साथ ही अन्य तेल-तिलहन का भाव भी गिरता है और बढ़ने पर तिलहन बाजारों में तेजी आ जाती है। सन २०१३ में इसके भाव में काफी घटा-बढ़ी की संभावना लग रही है। भाव बढ़ने पर तेजी का नया भाव भी बना सकता है। इस वर्ष जब भी तेजी का रुख बन जाए आप सभी को मन्दी का सौदा भूलकर भी नहीं करना चाहिए। वर्ष के प्रथम छः महीनो में हमको जोरदार तेजी लग रही है। इस समय मूंगफली, बीज, तेल खल सभी के भाव लगातार तेजी में रहेंगे। मंहगाई की रफ्तार देश में बढ़ती जाएगी और सरकार चाहे यह हो या कोई दूसरी मंहगाई को नियन्त्रण में नहीं रख सकेगी। स्टाक करने वाले मन्दी में स्टाक करके लम्बे समय के लिए रखें, अच्छा लाभ होगा।

दिसम्बर २०१२ में ता. १० के बाद बाजार में नरमी दिखाई देगी। जनवरी के शुरु में धनु राशि में सूर्य-बुध-शुक्र ता. १३ तक साथ-साथ चलेंगे। इनके ऊपर शनि की तीसरी पूर्ण दृष्टि पड़ रही है। इससे भाव दुतर्फा रुख लेकर एक दायरे के इर्द-गिर्द घूमते रहेंगे। विशेष घटा-बढ़ी नहीं होगी। ता. १४ को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करके मंगल का साथ पकड़ेगा। बुध ता. १५ को नियन्त्रित होने के बाद मकर में प्रवेश करके त्रिग्रही योग बनाएगा। इस दिन अचानक भाव में उछाला आएगा। यहां का बना भाव मजबूत होने की कोशिश करेगा। यदि भाव कभी दबा भी तो जल्दी ही ऊपर उठ जाएगा। ता. २८ को शुक्र मकर राशि में प्रवेश करके त्रिग्रही योग फिर बनाएगा। मकर में तीनों ग्रह शनि-राहु से केन्द्र योग में रहेंगे, अतः महीने के अन्त में ता. २८ को भाव अचानक बढ़ेगा। बाजार

इस समय आगे की तेजी की तैयारी में रहेगा।

फरवरी के शुरु में त्रिग्रही योग बना रहेगा। इससे बाजार मजबूत बना रहेगा। भाव कभी-कदा बढ़ते रहेंगे। बना हुआ भाव नीचे नहीं जाएगा। ता. १२ को सूर्य कुम्भ में प्रवेश करके त्रिग्रही योग तोड़कर कुम्भ में नेपच्यून का साथ देगा। इससे बाजार में यथास्थिति बनी रहेगी। ता. १९ को दुतर्फा रुख के साथ ता. २० को एक बार दबेगा। ता. २३ को बुध वक्री होगा और १० अप्रैल तक इसी राशि में रहेगा। इस राशि में रहते हुए यह भरपूर तेजी देगा। भाव लगातार बढ़ने की ओर चलेगा। ता. २१ को शुक्र कुम्भ में प्रवेश करके पंचग्रही योग बनाएगा। इस समय तेजी का रुख बन जाएगा। महीने के अन्त तक भाव बढ़ने का सिलसिला जारी हो जाएगा। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**मार्च-** महीने का रुख मुख्यतया तेजी प्रधान ही रहेगा। हालांकि बीच-बीच में मन्दी का झटका भी जोर से लगेगा। कमोडिटी बाजार में सट्टा पूरी तरह से जमेगा। ता. ४ को मंगल मीन में जाकर पंचग्रही योग को भंग कर देता है। ता. १४ को सूर्य और ता. १७ को शुक्र मीन में जाकर हर्शल से मिलकर चतुर्ग्रही योग बना रहा है। ग्रहों के राशि परिवर्तन के बीच अफरा-तफरी का दौर रहेगा। यह अफरा-तफरी १० मार्च से शुरु होकर ता. २८ तक जारी रह सकती है। सभी तेल-तिलहन बाजारों में आपा-धापी होकर भाव बढ़ने की ओर रहेगा। महीना तेजी का रहेगा।

**अप्रैल-** महीने के शुरु में आपा-धापी मची रहेगी। यह स्थिति ता. २१ तक बनी रहेगी और हो सकता है कि महीने के अन्त तक बनी रहे। ता. १० को शुक्र मेष में जाकर केतु के नियन्त्रण में आ जाएगा। यहां से यह शनि-राहु से प्रतियुति की स्थिति में आ जाएगा। दो दिन बाद ता. १२ को मंगल मेष में प्रवेश करके शुक्र का साथ देगा और और तेजी को सर्पोट देगा। ता. १३ की मकर संक्रान्ति से सूर्य चतुर्ग्रही और बुध ता. २८ को मेष

में जाकर पंचग्रही योग बना देगा। सभी ग्रह इस समय बहुत करीब हो गए हैं। महीने के अन्त में भाव ऊंचाई पर होगा। इस महीने की विशेषता यह रहेगी कि भाव दबेंगे नहीं। बना भाव कुछ दिन रुक सकता है लेकिन घटेगा नहीं। रुक-रुककर लगातार तेज होगा।

**मई**- इस महीने रह-रहकर मन्दी का झटका लगेगा जिससे भाव नीचे आता रहेगा। अन्य तेलों में भाव दबने पर मूंगफली और इसके तेल पर दबाव बनेगा। दूसरी बात इस महीने सरकार अपनी नीतियों में बदलाव करके भाव नीचे ले आ सकती है। हो सकता है कि सरकारी प्रयास क्रूड आयल पर चला जाए और वह क्रूड आयल और गैस का भाव घटा दे और खाने वाले तेलों का भाव न घटे। ता. ४ के आस-पास एक बार भाव बढ़ेगा। ता. ९ को हर्शल नक्षत्र बदलकर रेवती में जा रहा है यह बहुत तेजीकारक हो रहा है। सभी तेलों का भाव बढ़ाएगा और दूसरे ग्रहों की तेजी को भी बढ़ाने में सहयोग देगा। ता. ११ को इसका भाव दबेगा। ता. १५ को एक मन्दा फिर आ सकता है। ता. २३ या २४ को भाव फिर बढ़ेगा। ता. २६ से ३१ के बीच अफरा-तफरी का माहौल बनेगा। भाव तेजी में रहेगा। इस महीने बाजार में तेजी रहते हुए भी व्यवसायी वर्ग संशय की स्थिति में रहेंगे। बाजार में भय का वातावरण पनपेगा। ता. ३१ को गुरु राशि बदलकर मिथुन में प्रवेश कर रहा है। बाजार पर इसका प्रभाव ठीक ही रहेगा, बदलाव नहीं होगा।

**जून**- महीने की शुरुआत में गुरु-शुक्र मिथुन में संचार करते हुए भाव को एक स्तर पर मजबूत बनाए रखेंगे। गुरु की शनि पर पांचवी दृष्टि बाजार को कमजोर करना शुरु करेगी। ता. ६ को कुछ तिलहन-तेल में मन्दा दिखलाई देगा। इसका असर इस पर हल्का पड़ सकता है। ता. १४ से भाव अपने स्तर पर मजबूत होंगे। ता. २५-२६ को मन्दी का जोर बनेगा। इस समय सभी बिकवाल दिखाई देंगे। ता. १७ से अफरा-तफरी की

स्थिति बनेगी। यह स्थिति ता. २३ तक बनी रह सकती है। बिकवाली ता.१७ से भी चालू हो सकती है। महीने के अन्त में बाजार की धारणा कुछ कमजोर होगी।

**जुलाई**- कुछ तेल-तिलहन बाजार में मन्दी का झटका लगते रहने से इसका भाव महीने के शुरु में थमा रहेगा। बढ़ने नहीं पाएगा। ता. ७ जुलाई से बना भाव धीमे-धीमे एक स्तर बनाकर उसी के आस-पास घूमता रहेगा। ता. १७ को सिंह राशि में शुक्र प्रवेश करके शनि और गुरु के साथ त्रिरेकादश योग बनाएगा। नेपच्यून से इसकी प्रतियुति होगी। इससे एक बार इसमें फिर तेजी बन जाएगी। अब तक इसमे ऊँचे का भाव बन जाएगा। महीने का अन्त होते इसका भाव ठहरना शुरु हो जाएगा। इस महीने के अन्त का भाव अगले महीने भी चलता रहेगा।

**नोट**- जून में मानसून कमजोरी दिखलाएगा। ता. ९ जुलाई से ता. २३ अगस्त के बीच मानसूनी वर्षा होने से भाव का बढ़ना रुककर दब भी सकता है।

**अगस्त**- अगस्त में पिछले महीने का ही भाव चलता रहेगा। दब भी सकता है। बाजार में तेजी-मन्दी का कोई रुख न रहने से नीरस हो जाएगा। सभी ग्रह तेजी का योग नहीं बना रहे हैं। शुक्र सिंह से चलता हुआ ता. ११ को कन्या में प्रवेश करेगा। गुरु से यह केन्द्र योग बनाएगा जिससे तेजी का रुख नहीं बनेगा। हर्शल से प्रतियुति के कारण भाव दुतर्फा रुख लिए रहेंगे लेकिन एक दायरे में घूमेंगे। कर्क का मंगल ता. १८ को होने पर शनि से केन्द्र योग बनाएगा इससे तेल-तिलहन बाजार कमजोर होना शुरु होगा। तेल-तिलहन बाजार में रह-रहकर मन्दी का झटका लगेगा। अतः तेजी में से अब कमोडिटी बाजार में निकलना चाहिए। महीना तेजी-मन्दी के विचार से महत्वपूर्ण नहीं है।

**सितम्बर**- ता. १ को गुरु अपने नक्षत्र पुनर्वसु में जाकर कमजोर हो रहा है। इससे अनेक बाजारों में एक सप्ताह में गिरावट अचानक होगी। ता. ६ को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करके मन्दीकारक हो जाएगा। तुला में यह शनि और राहु से युति करेगा। साथ ही उसी समय शनि-राहु भी आपस में युति करेंगे। मन्दी के झटके के लिए यह महत्वपूर्ण योग है। बाजार ता. ६ से इकतरफा मन्दी में जा सकता है। मन्दी का रुख ता. २२ या २३ तक जारी रहना चाहिए। ता. १७ को शनि-राहु युति होगी और ता. १८ को शुक्र-शनि और शुक्र-राहु युति होगी। ता. २० को बुध-गुरु केन्द्र इसमें अच्छा मन्दा देगा। ता. २४ से भाव में ठहराव शुरु होकर बाजार संभलेगा। ता. १७ से २० के बीच अफरा-तफरी की स्थिति बाजार में रहेगी। महीने के अन्त में सभी मुश्किलों को झेलकर संभला हुआ भाव रहेगा।

**अक्टूबर**- ता. १ को बाजार में जो भाव बनेगा वह आगे भी चलता रहेगा। बाजार का झुकावं भाव दबने की ओर रहेगा। तुला संक्रान्ति मन्दीकारक है। तुला में सूर्य का साथ शनि और राहु से होगा। इस राशि में इसको ग्रहण भी लगेगा। इससे सभी बाजार का झुकाव मन्दी की ओर होगा। जिसका असर मूंगफली और इसके तेल पर होगा। ता. १२ से १७ के बीच सभी बाजार मन्दी में रहेंगे जिससे इस समय भाव काफी घटने की आशा है। भाव अब नीचे के स्तर की ओर बढ़ेंगे। ता. ५ से १० के बीच अफरा-तफरी भी मचेगी। महीने के अन्त तक इसी स्थिति में बना रहेगा। कोई नई सरकारी नीति से भी ता. १७ से मन्दा हो सकता है। इस स्थिति में बाजार काफी गिरेगा।

**नवम्बर**- पिछले महीने ता. १० से शुक्र नियन्त्रण से बाहर होकर इस महीने की ७ तारीख तक नियन्त्रण से बाहर रहेगा। इस कारण भी बाजार मन्दी में चलेगा। हर संभलता या चढ़ता भाव जल्दी ही नीचे जाएगा और नीचे का स्तर पकड़ेगा। धनु का शुक्र और मिथुन का गुरु भी

प्रतियुति करने के कारण बाजार को मन्दी में ढकेल देगा। धनु में ता. १३ को अपने नक्षत्र में प्रवेश करके कमजोर हो जाएगा। इससे ता. १३ को ही मन्दी का एक झटका लगेगा। ता. १६ की वृश्चिक संक्रान्ति बाजार में हल्की तेजी देगी। भाव का गिरना रुक जाएगा। इस समय तक बाजार अपने निचले स्तर पर पहुंच चुका रहेगा। महीने का अन्त ठहरे हुए बाजार से होगा।

**दिसम्बर**- सभी ग्रह मिलकर भी तेजी का रुख नहीं बना पा रहे हैं। इस महीने राहु अपने नक्षत्र स्वाती के मध्य में चल रहा है और जिससे यह मजबूत हो गया है और राहु केतु के बीच केवल गुरु को छोड़कर सभी ग्रह आ गए है। केतु भी इस महीने ता. ३ को अपने नक्षत्र अश्विनी में प्रवेश कर रहा है। इससे आने वाले समय में व्यापारी वर्ग जमकर स्टाक करेंगे। अगले वर्ष यह महत्वपूर्ण योग होगा। इससे मंहगाई को पंख लगेंगे। सभी चीज का भाव तेजी से बढ़ेगा। ता. १६ को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करके गुरु से प्रतियुति की स्थिति में रहेगा। इससे ता. १६ को मन्दी का एक झटका देकर बाद में तेजी ले आएगा। सूर्य, शनि की पूर्ण तृतीय दृष्टि में और मंगल की चतुर्थ दृष्टि में होने से आगे भी रह-रहकर बाजार में मन्दी देता रहेगा। महीने का अन्त मन्दी के झटके के साथ होगा। एक विशेषता इस महीने यह रहेगी कि मन्दी में जाकर भी बाजार तेज होता रहेगा।

जनवरी में बाजार तेजी की तैयारी करके फरवरी में तेज होगा। मार्च में अफरा-तफरी से तेजी और बढ़ेगी। अप्रैल में रुक-रुककर तेजी बढ़ती रहेगी। मई पूरा तेजी में जाएगा। जून में मन्दी की धारणा रहने के बावजूद बाजार गिरेगा नहीं। जुलाई तक मूंगफली में ऊँचे का स्तर बन जाएगा। अगस्त में बाजार नीरस रहेगा। तेजी-मन्दी का अभाव रहेगा। सितम्बर में गिरावट का योग है। अक्टूबर में मन्दा देगा। नवम्बर में भाव नीचे का स्तर देखकर संभलेगा। दिसम्बर में भाव में सुधार जारी रहेगा।

# सरसों और तेल

**जनवरी**- सभी तेल-तिलहन के बाजार में असाधारण घटा-बढ़ी इस वर्ष होगी। सरसों में भी भारी घटा-बढ़ी होगी और तेजड़िए तथा मन्दड़िए बारी-बारी से अपनी पारी में कमाएंगे। सरसों बीज इस वर्ष फिर नया भाव बनाएंगे और नीचे का भाव भी बनाएंगे। जनवरी के शुरु में मंगल अपने उच्च राशि मकर में जो शनि की राशि है तुला के शनि से केन्द्र योग बनाएगा। वृष के वक्री गुरु की पंचम दृष्टि मकर के मंगल और शनि दोनों पर होने से सरसों और इसके तेल का भाव दबा हुआ रहेगा। भाव जब भी उठने की कोशिश करेगा दब जाएगा। इस महीने मन्दी के झटके भी लगकर भाव नीचा जाता रहेगा। दिसम्बर २०१२ से समान सा एक दायरे में चलता बाजार ता. १४ की मकर संक्रान्ति और बुध के मकर में प्रवेश के बाद ता. १७ को अचानक दबेगा। शुक्र-हर्शल का इस समय केन्द्र योग बनाना बाजार को मन्दी देने वाला है। ता. २० क़ो मंगल-हर्शल अर्धकेन्द्र से बाजार और दबेगा। बाजार मन्दी की गिरफ्त में रहेगा। ता. २५ को मंगल कुम्भ में प्रवेश करके नेपच्यून का साथ पकड़ेगा। अतः ता. २५ या २६ को एक मन्दा फिर आएगा।

**फरवरी**- मन्दी का जो भी भाव बनना था वह पिछले महीने बन चुका होगा। मन्दी की प्रतिक्रिया में ता. ३ के आस-पास भाव सुधरेगा हालांकि ता. ५ को मंगल-नेपच्यून युति मन्दीकारक है। भाव इस दिन दब सकता है। ता. ६ को बुध शतभिषा में प्रवेश करके भाव इस दिन कुछ तेज करेगा। यहां से हल्की मजबूती बनकर ता. १२ को सूर्य के कुम्भ में प्रवेश के बाद एक स्तर पर भाव रुक जाएंगे। इसके बाद महीना साधारण घट-बढ़ का रहेगा। भाव सीमित दायरे में घूमता हुआ महीने का अन्त हो जाएगा। महीना मजबूत बाजार का रहेगा।

**मार्च**- महीना मजबूती में स्थिर बना रहेगा। ता. ४ को मंगल मीन राशि में प्रवेश करके हर्शल का साथ पकड़ेगा और शनि से षडाष्टक सम्बन्ध होगा। वृष के गुरु से त्रिरेकादश योग रहेगा। इससे बाजार में तेजी नहीं बनेगी लेकिन भाव धीमे-धीमे बढ़ते रहेंगे। बाजार रुख दुतर्फा रहेगा और नीचे का स्तर छूटता रहेगा। ता. १४ की मीन संक्रान्ति से बाजार मजबूत होगा। ता. १७ को शुक्र भी मीन में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा और यहां से बाजार भाव बढ़ना शुरु होगा। ता. २२ को मंगल-हर्शल युति के बाद भाव और बढ़ेगा। ता. २९ के आस-पास बाजार प्रतिक्रिया में नीचे की ओर झुक सकता है।

**अप्रैल**- सट्टा जमने की ओर चल देगा। इस महीने भाव अचानक और तेजी से बढ़ेंगे। ता. ३ से ता. ७ या ८ तक बाजार में अफरा-तफरी बन जाएगी। भाव दुतर्फा रुख लेकर बढ़ेंगे। ता. ७ को शुक्र-मंगल युति के बाद भाव तेज होता हुआ ता. १२ को मंगल के मेष राशि में प्रवेश से सट्टा मजबूत होगा। मेष में कई ग्रहों का जमावड़ा हो जाएगा और इन सभी की तुला के शनि-राहु से प्रतियुति की स्थिति रहेगी। इससे इस महीने का भाव लगातार तेज होते जाएंगे। तेजी की रैली बनकर पूरे महीने ही जारी रहेगी। महीने के अन्त में ता. २८ को बुध मेष में प्रवेश करके इस तेजी को और बढ़ा देगा। फायदा लेने में जल्दीबाजी न करें सौदा लम्बे समय का करें। तेजी अगले महीने भी जारी रहेगी।

**मई**- पिछले महीने की तेजी इस महीने भी जारी रहेगी। ता. ५ को शुक्र वृष में प्रवेश करके गुरु का साथ पकड़ेगा। इससे तेजी में सहयोग कम होगा लेकिन तेजी नहीं रुकेगी। इसकी रफ्तार कम हो जाएगी। ता. १३ को मंगल-राहु प्रतियुति होगी। यह तेजीकारक है।

ता. १३ को बुध और ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करेगा। यह सरसों की तेजी के लिए ठीक राशि नहीं है। तेजी यहां दो-तीन रुक जाएगी। सबसे अन्त में मंगल ता. २३ को वृष में प्रवेश करके पंचग्रही योग बना रहा है। इस समय ता. २३-२४ को भाव फिर बढ़ जाएंगे। ता. २८ को बुध मिथुन में प्रवेश करेगा और ३१ को गुरु भी मिथुन में प्रवेश करेगा जिससे अगले महीने तेजी की रफ्तार कम हो जाएगी। इस महीने तेजी का नया भाव बन सकता है। अगले महीने तेजी की प्रतिक्रिया में भाव दबेगा इसलिए ता. २८ मई के पहले तेजी में से निकल जाना चाहिए।

**जून**- सभी ग्रह योग से अधिक मजबूत इस महीने मानसून का योग मजबूत होता है। यदि मानसून आने में देर हुई तो भाव बढ़ने में देर नहीं लगती। इस वर्ष भी मानसून कमजोर और देर से आने का योग है। तेजी-मन्दी के विचार से सरसों की मन्दी का ही योग इस महीने बन रहा है लेकिन मानसून का यदि असर हुआ तो भाव घट नहीं सकता है। ता. ६ मंगल-नेपच्यून केन्द्र से मन्दी का तेज झटका प्रतिक्रिया में लगना चाहिए हालांकि ता. १० से भाव संभल जाएगा। संभलता हुआ बाजार ता. २५ के आस-पास मन्दी का झटका खाकर फिर नीचे जाएगा। इस समय कई तेल-तिलहन में मन्दी का झटका लगेगा लेकिन भाव टूटेगा नहीं। भाव नीचे जाकर संभलता रहेगा।

**जुलाई**- ऊँचे के भाव पर पिछले महीने की तरह इस महीने भी बिकवाली बनी रहेगी। बुध वक्री होने के कारण भाव जब भी बढ़ेंगे, बिकवाली भी जल्दी बढ़ जाएगी जिससे भाव नीचे आता रहेगा। ता. १५ को एक बार बाजार में अच्छी गिरावट होगी। इसके बाद सट्टा कमजोर होने लगेगा। भाव का बढ़ना पहले ही रुक चुका रहेगा। बुध-मंगल के साथ आर्द्रा में चल रहा है। यह सभी तेजी को रोकता रहेगा।

ता. २० को बुध मार्गी हो रहा है और ता. २२ को मंगल-गुरु युति हो रही है। सभी योग तेजी को रोकने वाले है। महीने का अन्त दबे भाव से होगा। धीमे-धीमे यह मन्दी की ओर जाएगा।

**नोट**- ता. ९ जुलाई के बाद देश में मानसूनी वर्षा शुरु हो जाएगी। इसका क्रम कम से कम २३ अगस्त तक बना रहेगा। इसका असर सरसों पर भी पड़ेगा। जुलाई के शुरु से ही सरसों में मन्दी का योग बन रहा है, इससे जुलाई-अगस्त में तेजी में नहीं रहना चाहिए।

**अगस्त**- महीने की शुरुआत दबे भाव से होगी। ता. ४ को प्रतिक्रिया में तेजी का उछाला आएगा। इसके बाद बाजार में सट्टा और कमजोर होगा। ता. १० से १७ के बीच में अफरा-तफरी की स्थिति बनेगी। भाव धीमे-धीमे एक स्तर के आस-पास घूमता रहकर ता. २४ को एक बार फिर दबेगा। इस समय अन्य तेल-तिलहनों के भाव मजबूत रहने से भाव अधिक नहीं दबेगा। महीने के शुरु के भाव से महीने के अन्त का भाव नीचा नहीं रहेगा। महीना समान सा रहेगा।

**सितम्बर**- इस महीने शुक्र तुला राशि में ता. ६ को प्रवेश करके ता. १७ से २० के बीच शनि-राहु दोनों से युति करेगा। मंगल का इन सबसे केन्द्र योग रहेगा और गुरु की पंचम दृष्टि इस पर रहेगी। इससे ता. ६ के बाद बाजार अनिश्चित होना शुरु हो जाएगा। तेजी या मन्दी की कोई इकतरफा लाइन नहीं रहेगी। महीने के शुरु में भाव हल्का सा दबता रहेगा और ता. ११ के बाद एक स्तर बनाकर उसी के आस-पास महीने के अन्त तक चलता रहेगा। विशेष घटा-बढ़ी नहीं होगी। महीना नीरस रहेगा।

**अक्टूबर**- ता. २ को शुक्र और ५ को मंगल सिंह में प्रवेश करके भाव स्थिर कर देगा। घटा-बढ़ी अधिक नहीं होगी। ता. १२ से

१८ के बीच अन्य बाजारों के मन्दे का असर इस पर पड़ने से भाव हल्का घट सकता है। ता. २७ से भाव में तेजी फिर बनेगी और महीने का अन्त बढ़े हुए भाव से होगा। बाजार की दिशा अनिश्चित रहेगी।

**नवम्बर**- पिछले महीने की स्थिति इस महीने भी रहेगी। बाजार में विशेष घटा-बढ़ी नहीं होगी। एक दायरे में चलते हुए महीने का अन्त हो जाएगा। ता. १६ के बाद भाव कुछ मजबूत होंगे और ऊपर की ओर चलेंगे।

**नोट**- ता. ६ सितम्बर के बाद शुक्र धीमी रफ्तार से चलना शुरु करके शनि की ओर चलेगा। ता. ५ अक्टूबर को मंगल सिंह में प्रवेश करके गुरु और तुला के शनि-राहु से त्रिरेकादश बनाएगा। कुम्भ के नेपच्यून से प्रतियुतिं की स्थिति में रहेगा। इससे तेजी ता. ७ नवम्बर तक बन सकती है। हालांकि यह केवल संभावना है फिर भी यदि यह योग काम किया तो अच्छी तेजी बन सकती है।

**दिसम्बर**- पिछले महीने से हल्का सा मजबूत होता बाजार लगातार ता. १४ तक ठीक होता रहेगा। भाव बहुत धीमी रफ्तार से बढ़ते रहेंगे। ता. १६ को एक अच्छा मन्दी का झटका खाकर ता. २० से फिर संभल जाएगा। महीने का अन्त कुछ ऊँचे भाव से होगा। महीना मजबूती का रहेगा।

सरसों में इस वर्ष शुरु में तेजी बनेगी। फरवरी में मजबूत होकर मार्च में हल्का तेज होगा। अप्रैल में तेजी में रहेगा। मई में ऊँचे का भाव बन जाएगा। जून में मन्दी का झटका लगता रहेगा लेकिन भाव नहीं टूटेगा। जुलाई में मन्दा मार देगा और अगस्त में एक दायरे में चलता रहेगा। सितम्बर में बाजार तेजी-मन्दी के विचार से नीरस रहेगा। अक्टूबर में अनिश्चित रहकर नवम्बर में सुधार का रुख पकड़ेगा। दिसम्बर में हल्का-हल्का सुधरता रहेगा।

## एरण्डा

**जनवरी**- इस महीने मंगल मकर राशि में चलता हुआ शनि से केन्द्र योग में चल रहा है। दोनों ग्रह अपनी उच्च राशि में चल रहे हैं। ता. १४ को स्पष्ट राहु तुला में प्रवेश करके मंगल से केन्द्र योग में और शनि से युति की स्थिति में हो जाएगा। महीने की शुरुआत में एरण्डा मजबूती में रहेगा तथा धीमे-धीमे भाव बढ़ता रहेगा। ता. १७ को मंगल अर्धकेन्द्र की स्थिति हर्शल से बनाएगा भाव इस दिन अचानक दबेगा। ता. २२ को बुध का हर्शल त्रिरेकादश भाव में बनी कमजोरी रोक देगा। ता. २५ को मंगल कुम्भ में प्रवेश करेगा। इस समय यह राहु से केन्द्र योग बनाकर भाव फिर दबाएगा। इसके बाद ता. २८ से बाजार का गिरना रुकेगा।

**फरवरी**- पिछले महीने के भाव से महीने की शुरुआत होगी। इसके बाद नेपच्यून से इसकी युति होगी। इस महीने बुध से इसकी युति दो बार होगी। पहली युति ता. ८ को होगी। ता. २३ को बुध वक्री हो जाएगा और ता. २६ को इसकी युति दूसरी बार मंगल से होगी। ता. ३ से ही बाजार तेजी पकड़ लेगा। ता. २१ से तेजी अधिक हो सकती है। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**मार्च**- ता. ४ को मंगल मीन राशि में पहुंचकर पंचग्रही योग से हटकर हर्शल के साथ चलेगा। भाव अब एक स्तर बनाकर चलेंगे। आगे रुख दुतर्फा होता जाएगा लेकिन बाजार टूटेगा नहीं। ता. १४ को सूर्य और ता. १७ को शुक्र मीन में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग फिर बनाएगा। यहां से हल्की तेजी बाजार में फिर बन जाएगी। तेजी का भाव

महीने के अन्त तक बना रहेगा।

**अप्रैल**- ता. ७ को शुक्र की युति मंगल से होगी। यहां से सट्टा और मजबूत होगा। ता. १० को शुक्र मेष में प्रवेश करेगा। पीछे-पीछे ता. १२ को मंगल मेष में प्रवेश कर जाएगा। यहां अगले दिन ता. १३ को जोरदार तेजी का उछाला देखने को मिलेगा। ता. १४ को सूर्य मेष में प्रवेश करेगा। सट्टे के अनेक बाजार इस समय तेजी के हो जाएंगे। ता. १८ को सूर्य-मंगल युति तेजीकारक है। इस महीने ता. १० से २२ के बीच अफरा-तफरी की स्थिति बन सकती है। सटोरिया वर्ग इसमें कम दिलचस्पी लेकर अन्य जिन्सों के भाव बढ़ाने में लग जाएंगे। महीना तेजी का रहेगा।

**मई**- इस महीने सट्टे के अन्दर उठा-पटक, धमा-चौकड़ी होगी। ता. ९ से १३ के बीच अनेक जिन्सों में अफरा-तफरी मचेगी। महीने के शुरु से ही इसमें जोरदार तेजी रहेगी। शनि-राहु-मंगल की प्रतियुति से तेजी बढ़ती चली जाएगी। ता. ८ को बुध-मंगल युति तेजीकारक है। इस दिन शुक्र-प्लूटो क्रान्तिसाम्य भाव अधिक बढ़ने से रोक सकता है। ता. १३ को मंगल-राहु युति फिर तेजीकारक है। भाव लगातार तेज होंगे। ता. २३ को मंगल वृष में प्रवेश करेगा। सूर्य-शुक्र-गुरु-मंगल बुध का पंचग्रही बाजार और तेज करेगा। इस महीने बाजार तेजी का ऊँचा स्तर देख सकता है। महीना तेजी प्रधान रहेगा। स्टाक इस महीने खाली करना चाहिए।

**जून**- ता. ३१ मई को गुरु मिथुन में प्रवेश कर चुका है। मिथुन में गुरु त्रिकोण योग शनि और राहु से बनेगा साथ ही कुम्भ में

नेपच्यून से भी त्रिकोण योग बनेगा। धनु के प्लूटो से प्रतियुति की स्थिति में रहेगा। इससे ता. ६ को मन्दी का तेज झटका लगेगा। बुध-शुक्र दोनों नियन्त्रण के बाहर चल रहे है। ता. ९ को बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्य से बाजार दबेगा। कमजोरी में चलता हुआ बाजार ता. २५ को मंगल-गुरु क्रान्तिसाम्य से और दबेगा। यहां से दबता हुआ बाजार आगे भी दबता जाएगा। इस महीने ता. ६ के बाद बाजार का दबना शुरु होकर महीने के अन्त तक दबता रहेगा। यही इसका Turning Point हो सकता है।

**जुलाई**- महीने की शुरुआत मन्दी के बाजार से होगी। मिथुन में मंगल, गुरु, सूर्य, बुध का चतुर्ग्रही योग मन्दीकारक है। मंगल को मिथुन में प्रवेश के बाद ही ता. ५ से मन्दी का जोर और बढ़ेगा। इस दिन शुक्र का मंगल से अर्धकेन्द्र मन्दी देगा। ता. १३ को शुक्र-गुरु अर्धकेन्द्र मन्दीकारक है। अगले दिन ता. १४ को भाव तेजी से फिर नीचे गिरेगा। आगे भी महीने के अन्त तक बाजार मन्दी में ही बना रहेगा।

**अगस्त**- ता. १ को मंगल-हर्शल केन्द्र से बाजार हल्का दबेगा। इसके बाद ता. २ को शुक्र-मंगल त्रिरेकादश से ता. ३ को बाजार में हल्का सुधार होगा लेकिन तेजी का रुख नहीं बन सकेगा। नीचे-ऊपर होता बाजार शुक्र-प्लूटो केन्द्र से ता. २४ को फिर गिरेगा। यहां से महीने के अन्त तक मन्दी में ही चलेगा। इस महीने में सुधार का कोई लक्षण नहीं है।

**सितम्बर**- मन्दी की धारणा ता. १३ तक बनी रहेगी। इसके बाद बना भाव बिना किसी बदलाव के महीने के अन्त तक चलेगा।

एक स्तर के आस-पास भाव घूमता रहेगा। तेजी का रुख नहीं बनेगा केवल भाव का दबना बन्द होगा।

**अक्टूबर**- इस महीने की शुरुआत में पिछले स्तर के आस-पास भाव घूमता रहेगा। विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होगा। यदि कभी दबा भी तो जल्दी ही चढ़कर ऊपर के स्तर पर फिर आ जाएगा। ता. २७ या ता. २८ को भाव हल्के से बढ़ेंगे। इसी भाव के आस-पास महीने का अन्त हो जाएगा। महीने के अन्त के भाव पिछले महीने के अन्त के भाव से कुछ ऊँचा होगा।

**नवम्बर**- इस महीने भी भाव ऊँचा होने की संभावना नहीं बन रही है। भाव जब भी बढ़ेगा जल्दी ही नीचे हो जाएगा। पिछले महीने के स्तर के आस-पास घूमता हुआ महीने का अन्त हो जाएगा।

**दिसम्बर**- तेजी के विचार से यह महीना भी निराशाजनक रहेगा। भाव बढ़ने का नाम नहीं लेंगे। ता. १५ या १६ को भाव एक बार फिर दबेंगे। महीने का अन्त दबे हुए भाव से होगा। महीना मन्दीकारक रहेगा।

जनवरी में बाजार भाव एक दायरे में घूमता रहेगा। स्टाक इसी महीने कर लेना चाहिए। फरवरी में अच्छा तेज होगा। यहां की बनी तेजी मई तक बनी रहेगी। जून में मन्दी आ जाएगी। जून से दिसम्बर तक बाजार मन्दी में ही रहेगा। जुलाई-अगस्त में मन्दा होकर ता. १४ सितम्बर से भाव का दबना रुकेगा। अक्टूबर में कुछ ऊँचा होकर नवम्बर में समान सा बना रहेगा। दिसम्बर में फिर कुछ नीचा होगा।

# सोयाबीन

**जनवरी**- पिछले महीने में बना हुआ ट्रेण्ड इस महीने भी जारी रहेगा। सूर्य की मकर संक्रान्ति तक भाव एक दायरे में मजबूती से चलता रहेगा। ता. १५ को तेजी का एक उछाला देखने को मिलेगा। ता. १७ को पॉम आयल का भाव गिरने का चान्स है जिससे यदि उसका असर हुआ तो सोयाबीन का भी भाव दबेगा। यहां से भाव नरम होकर चलेगा और ता. २५ के आस-पास फिर मन्दा देगा। ता. २८ को शुक्र मकर में प्रवेश करके तेजी देगा। भाव ऊपर का रुख करेंगे। ता. १६ से १८ के बीच अफरा-तफरी का हल्का दौर रहेगा। ता. १४ जनवरी को राहु तुला राशि में प्रवेश करेगा और शनि के साथ भ्रमण करेगा। इससे तेल-तिलहन के बाजार में तेजी बनेगी। तेजी डेढ़ साल तक चल सकती है। सभी तेल-तिलहन के भाव इस अवधि में दुगुने तक हो सकते है। शनि सन २०१२ में ४ अगस्त को तुला में प्रवेश किया और अनेक वस्तुओं के भाव गिरने के बावजूद तेल-तिलहन के भाव अधिक नहीं गिरे। अब तेलों में तेजी बनने पर भाव और ऊँचे जाएंगे, इसमें राहु का भी सहयोग मिलेगा। शनि की उच्च राशि तुला है और इस राशि का सोयाबीन पर बहुत असर है। इस कारण सोयाबीन का क्या भाव होगा अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। जनवरी महीना साधारण सा रहेगा।

**फरवरी**- ता. १ से ही अफरा-तफरी की स्थिति बाजार में रहेगी। पिछले महीने गुरु ता. ३० को मार्गी हुआ है और ता. २८ को शुक्र ने मकर राशि में प्रवेश किया। गुरु-शुक्र का त्रिकोण योग, शुक्र-शनि का केन्द्र योग बाजार में तेजी का माहौल बनाकर भाव

बढ़ाना शुरु कर देगा। कुम्भ का मंगल ता. ३ को नेपच्यून से युति करेगा। इस सबसे कम से कम ११ तारीख तक बाजार में तेजी का रुख बन जाएगा। भाव ऊपर का स्तर देखते रहेंगे। ता. ११ के बाद कुछ दिनों के लिए तेजी की रफ्तार कम हो जाएगी। शनि वक्री होकर ता. १९ को तिलहन-तेल के बाजार में मन्दी देगा। इसके बाद ता. २१ को शुक्र कुम्भ में प्रवेश करके पंचग्रही योग बनाकर बाजार को संभालेगा। इस दिन तेजी का एक उछाला देखने को मिलेगा। ता. २६ को वक्री बुध दूसरी बार मंगल से युति कर रहा है। पॉम आयल तेजी में रहने से इसका असर इस पर भी पड़ेगा। महीने के अन्त तक भाव बढ़ता रहेगा और बाजार तेजी का रुख बना लेगा।

**मार्च**- बुध पिछले महीने कुम्भ में प्रवेश किया है। यह इस महीने भी कुम्भ में रहेगा। मंगल, शुक्र, बारी-बारी से मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता. ४ को मंगल मीन में प्रवेश करके शनि से षडाष्टक योग बनाएगा जिससे तेजी शुक्र के मीन मे प्रवेश करने तक रुकी रहेगी। ता. २० से बाजार भाव बढ़ना शुरु होगा। ता. ८ से लेकर महीने के अन्त तक कमोडिटी बाजार में अफरा-तफरी मच जाएगी। इस समय अनेक खराब योग बन रहे हैं। अफरा-तफरी ता. २१ से और बढ़ेगी। कुछ तेल-तिलहन-दलहन में नीचे का भाव भी बन सकता है। ता. ७ को बुध-शुक्र युति के समय बाजार उलट सकता है। यहीं से बाजार में बिकवाली दबाव बनने से बाजार पलट सकता है। हो सकता है कि बाजार भाव काफी ऊँचा होनें से बाजार दब जाए। इस स्थिति में ता. २८ को सूर्य-शुक्र युति,, शुक्र-हर्शल युति और ता. २९ को सूर्य-हर्शल युति महत्वपूर्ण होगी। बाजार कमजोर

होने पर इसी के बाद महीने के अन्त में सुधरेगा। अत: मार्च में सतर्क रहकर काम करें। भाव नीचे का रुख करने की पूरी संभावना है। यदि गिरावट तेज हुई तो इसमें भी नीचे का भाव बन सकता है। मीन में हर्शल के साथ बना चतुर्ग्रही बाजार पलट सकता है। इस महीने शुक्र की नई साइकिल भी शुरु होगी। जब भी पुरानी साइकिल खतम हो रही होती है या नई साइकिल शुरु होती है उस समय सभी बाजारों में यह उपद्रव कर देता है। कुछ के भाव नीचे के बनते हैं तो कुछ के ऊपर के भी भाव बन जाते है। इसी समय यदि बुध से युति भी हो जाए तो सभी बाजार में सभी बाजार में उलट-फेर होता है और बाजार नीचे जाता है। इसलिए ता. ७ की बुध-शुक्र युति से हर तरह से सतर्क रहना चाहिए।

**अप्रैल**- पिछले महीने जो भी होना था वह हो जाएगा। इस महीने सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र चारो मेष में इकठ्ठा होकर केतु से पंचग्रही योग बनाएंगे। तेजड़िया वर्ग फिर से सट्टा जमाने की कोशिश करेंगे। इस प्रयास में वह महीने के अन्त में सफल होंगे। भाव धीमे-धीमे बढ़ने का रुख करेंगे। शुरु से संभलता हुआ बाजार दबता भी रहेगा। ता. २३ से २७ के बीच भाव मन्दी के बने रह सकते हैं। ता. २८ को बुध मेष में प्रवेश करके पंचग्रही फिर बना देगा। इससे ता. ३० तक बाजार संभला रह सकता है। ता. २८ को सूर्य-शनि प्रतियुति और. शुक्र राहु युति भी होगी। इस समय के बाद या अगले महीने से बाजार तेजी में जाएगा। लगभग पूरे महीने बाजार दबा रहेगा। अब तक यह नीचे के स्तर को देख चुका रहेगा।

**मई**- इस महीने कमोडिटी बाजार में Turning Point बनेगा।

अनाज-दलहन-तिलहन-तेल में कई वस्तुएं ऊपर का रुख करेंगी। शुक्र ता. ४ को वृष में प्रवेश करने के पहले मन्दी का एक झटका देगा और ता. ५ से बाजार तेजी में आना शुरु होगा। इस महीने ता. ९ को अत्यन्त धीमे चलने वाला ग्रह हर्शल मीन राशि में नक्षत्र बदलकर ता. ९ को रेवती में प्रवेश कर रहा है। बाजार पर इसका प्रभाव पड़ने में समय लगता है। यह तेजी में सहयोग देगा। ता. ११ के बाद बाजार करवट बदलेगा और तेज होना शुरु होगा। Turning Point इसी के बाद बनना चाहिए। ता. १३ को बुध और ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश कर रहा है। दोनों ही तेजी को रोकने वाले हैं लेकिन ता. २३ को मंगल वृष में प्रवेश करके तेजी का उछाला देगा। यहां से तेजी रफ्तार पकड़ेगी। तेजी मध्यम दर्जे की रहेगी। ता. २७ को बुध और ता. ३१ को गुरु मिथुन में प्रवेश करेगा। इससे पंचग्रही योग की मजबूती कम होगी फिर भी भाव का बढ़ना जारी रहेगा। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**जून**- पिछले महीने २० मई से बुध और २४ मई से शुक्र नियन्त्रण के बाहर चल रहें है। दोनों की स्थिति लगभग १९ जून तक बनी रहेगी। जिस समय ऐसा होता है तो भाव जितना लोग सोचते हैं उतना नहीं बढ़ता या घटता है। सटोरियों का प्रयास सफल नहीं हो पाता। इस महीने यही होगा, भाव अधिक नहीं बढ़ संकेगा। केवल एक सम्भावना है कि मानसून कमजोर आएगा और वर्षा ९ जुलाई के पहले कम स्थानों में होगी। इससे सटोरिया मनचाहा भाव बढ़ा सकेंगे। ता. १२ जून को एक मन्दा मारने के बाद भाव तेजी का बना रहेगा। ता. १७ से २३ के बीच अफरा-तफरी से भाव बढ़ेंगे। ता. २५-२६

को प्रतिक्रिया में मन्दी का रुख बनेगा। यहां से मन्दी की धारणा बनना शुरु हो जाएगा। पॉम आयल में तेजी का रुख नहीं बन पाएगा। इस कारण से भी सोयाबीन का भाव अधिक नहीं बढ़ सकेगा। एक तरह से यह महीना नीरसता में खतम होगा।

**जुलाई**- ता. ९ के बाद मानसून सक्रिय होना शुरु होगा। यदि सोयाबीन क्षेत्र में वर्षा होती है तो भाव ऊँचा उठ नहीं पाएगा। पॉम आयल नीचे में रहने से इसका भाव भी अपने स्तर पर टिके रहने की संभावना है। ता. १६ को बुध-राहु से त्रिकोण बनाएगा। ता. १७ को सिंह में प्रवेश करेगा। ता. १७ को गुरु शनि से और ता. १८ को नेपच्यून से युति करेगा। इससे ता. १७ या १८ को अचानक एक तेजी का उछाला देखने को मिलेगा। भाव अपने ऊँचे के स्तर के आस-पास पहुँचने के करीब होंगे। यह महीना लगभग तेजी में निकल जाएगा। तेजी का मतलब यह नहीं कि भाव बढ़ता ही रहेगा।

**अगस्त**- तेजी का सफर अब इस महीने पूरा हो जाएगा। भाव का बढ़ना रुक जाएगा और कन्या में शुक्र के प्रवेश के साथ ही भाव का दबना शुरु हो जाएगा। ता. ११ से १६ के बीच गिरावट शुरु हो सकती है। ता. ७ को गुरु-प्लूटो प्रतियुति के बाद भाव दबेगा। ता. ८ को शनि-शुक्र अर्धकेन्द्र भी मन्दीकारक है। ता. १३ को शुक्र-राहु अर्धकेन्द्र से बाजार दबेगा। ता. २४ को प्लूटो-शुक्र केन्द्र, इसी दिन सूर्य-बुध युति यह सभी योग बाजार को नीचे ले जाएंगे। पहला Turning Point ता. ११ से १६ के बीच और दूसरा २२ से २५ के बीच। अगस्त के अन्त में बाजार मन्दी में जा चुका रहेगा।

**सितम्बर**- इस महीने भाव लगातार दबता रहेगा। यदि भाव

कभी बढ़ेगा भी तो जल्दी ही नीचे आ जाएगा। ता. १ से ही भाव का दबना शुरु हो जाएगा। मन्दी आगे लगातार बढ़ती जाएगी। ता. ६ को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करके मन्दी का जोरदार झटका देगा। तुला में यह शनि और राहु के साथ भ्रमण करेगा जिससे बाजार पूरी तरह मन्दी में जाने की तैयारी कर लेगा। ता. ९ से ११ के बीच अच्छा टूट सकता है। ता. १७ से २० के बीच शुक्र की राहु और शनि से तथा शनि की राहु से युति होगी। भाव तेजी से गिरेगा। इस समय सभी जिन्सों में तेज गिरावट देखने को मिलेगी। दलहन-तिलहन बाजार में गिरावट अधिक होगी। ता. १७ से २० के अन्दर ही कर्क का मंगल इनसे केन्द्र बनाकर मन्दी में पूरा सहयोग करेगा। महीने के अन्त तक भाव लगातार गिरते रहेंगे। तेजड़िए बाजार में गायब हो जाएंगे और बाजार पूरी तरह से मन्दड़ियों की गिरफ्त में आ जाएगा। महीना तेज गिरावट का होगा।

**अक्टूबर**- ता. २ को शुक्र वृश्चिक में और मंगल ता. ५ को सिंह में प्रवेश करके केन्द्र योग में भ्रमणं करेंगे। इस महीने सूर्य तुला में प्रवेश करके शनि तथा राहु से युति करेगा। बुध तुला में पहले से चल रहा है और ता. २१ को वक्री होकर इस महीने तुला में ही रहेगा। सभी ग्रह योग मन्दीकारक हो रहे हैं। सोयाबीन एवं इसके तेल का भाव अच्छी तरह टूटेगा। ता. १२ से १८ के बीच लगभग सभी बाजार नीचे की ओर ही चलेंगे। कुछ ही जिन्सों में तेजी हो सकती है। ता. १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करके अच्छी मन्दी बाजार में देगा। ता. १० अक्टूबर से शुक्र नियन्त्रण से बाहर हो जाएगा। इससे भाव कुछ अधिक ही टूटेंगे अनुमान से अधिक ही मन्दी हो सकती है। ता. ३० को शुक्र धनु में प्रवेश करके गुरु से प्रतियुति करेगा। इससे मन्दी की रफ्तार कम होगी।

**नवम्बर**- महीने के शुरु में मन्दी बदस्तूर जारी रहेगी। ता. ६ को सूर्य शनि युति मन्दी और बढ़ा देगी। इस वर्ष दीपावली के समय मन्दी का बाजार रहेगा। ता. १३ या १४ तक मन्दी के वातावरण में बाजार रहेगा। ता. १६ को सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति के बाद बाजार संभलना शुरु होगा। भाव अब दबना बन्द होकर एक स्तर पर रुककर मजबूत होने का प्रयास करेंगे। मन्दी इस बार कुछ अधिक खराब हो सकती है। यह साल भर के नीचे के भाव से भी कम हो सकता है। इस महीने के पूर्वार्ध में नीचे के स्तर का भाव बन जाएगा। इसके नीचे अब भाव नहीं जाएंगे। ता. १९ के बाद भाव का धीमे-धीमे बढ़ना शुरु होगा। महीने के अन्त तक बाजार में हल्की रिकवरी हो जाएगी। अभी भाव नीचे के स्तर से थोड़ा ही ऊँचा उठकर बन्द होगा। मन्दी रुक जाएगी।

**दिसम्बर**- महीने की शुरुआत सुस्त रफ्तार की रिकवरी से होगी। ता. ५ को शुक्र मकर में प्रवेश करेगा और ता. ७ से नियन्त्रण में होकर भ्रमण करेगा। मकर में इसके भ्रमण के दौरान कुछ मन्दी के झटके भी लगेंगे। ता. १८ से २२ के बीच तेजी-मन्दी दोनों के झटके खाकर तेजी की ओर बढ़ता जाएगा। महीने का अन्त तेज रिकवरी से होगा। भाव अचानक बढ़ेंगे।

जनवरी में बाजार साधारण उलट-फेर का होकर फरवरी में तेज होगा लेकिन मार्च में मन्दा मार देगा। मई में फिर तेजी में आ जाएगा। जुलाई महीना लगभग तेजी का रहेगा। अगस्त में मन्दा शुरु होकर सितम्बर से नवम्बर तक मन्दी में ही रहेगा। दिसम्बर में तेज रिकवरी में बाजार रहेगा।

## कपासिया बीज (Cotton-Seed)

सन २०१३ में सभी बाजारों में तेज उठा-पटक होगी। वस्तुओं के भाव अचानक बढ़ेंगे और जल्दी ही तेजी की रफ्तार पकड़ लेंगे। कपासिया बीज पर चार-प्रमुख ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। यह ग्रह बुध-शुक्र, गुरु और शनि है। इनकी चार राशियां मिथुन, तुला, धनु और कुम्भ हैं। जब भी ग्रह इन राशियों से संचार कर रहा होता है तो कपासिया बीज पर प्रभाव पड़ता है और इनके भाव में तेजी या मन्दी का रुख बनता है। मन्दी की जगह तेजी या तेजी की जगह अचानक मन्दी छा जाती है। इस वर्ष गुरु ग्रह वृष राशि से मिथुन राशि में प्रवेश करेगा और तुला के शनि पर उसकी पूर्ण पांचवी दृष्टि होगी। शनि की राशि कुम्भ में नेपच्यून ग्रह चल रहा है और गुरु-शनि-नेपच्यून आपस में त्रिकोण बनाएंगे। जब बाहरी ग्रहों का त्रिकोण बनता है तब उसको Grand Trine कहते है। यह सभी बाजारों पर अपना तेज प्रभाव देते हैं। यह ग्रह लम्बे समय तक एक राशि में रहते हैं। इसमें गुरु सबसे कम एक वर्ष तक रहता है। शनि का प्रभाव दो साल से ऊपर तक पड़ सकता है। नेपच्यून सबसे अधिक समय तक कुम्भ राशि में रहकर प्रभाव डालेगा।

जनवरी महीने से ही इस बाजार में हलचल शुरु हो जाएगी। भाव दुतर्फा रुख लेकर महीने के शुरु में ही कुछ बढ़ेंगे। ता. २५ को मंगल कुम्भ में प्रवेश करेगा। यह राशि इसकी शत्रु राशि है और यहां पर यह गुरु से केन्द्र में और नेपच्यून के साथ रहकर मन्दा देगा। कुम्भ के मंगल में भाव न बढ़कर इस महीने के अन्त में दबेगा। फरवरी में बाजार तेजी में आ जाएगा। सूर्य-बुध-शुक्र-मंगल-नेपच्यून का पंचग्रही योग गुरु से केन्द्र योग होने के कारण भाव अचानक बदलेगा। बाजार में मन्दी का झटका भी अच्छा लगेगा। नीचे-ऊपर होता बाजार तेजी का

बन जाएगा। ता. १८ को शनि वक्री होगा। इस तारीख के आस-पास अचानक भाव घटेगा। महीने का अन्त तेजी का होगा।

ता. १८ फरवरी को शनि के वक्री होने के बाद ता. २३ जुलाई को बुध भी वक्री हो रहा है। गिरता हुआ बाजार जल्दी ही संभल जाएगा। बुध वक्री-मार्गी होकर १० अप्रैल तक इसी राशि में रहेगा तथा अन्य ग्रहों के सहयोग से तेजी-मन्दी दोनों देगा। बाजार बहुत Volatile रहेगा। मार्च में मंगल मीन में प्रवेश कर रहा है। मंगल के बाद सूर्य और अन्त में ता. २० को शुक्र मीन में प्रवेश करके भाव को लगातार बढ़ाएगा। मंगल-शनि षडाष्टक इसके भाव को अच्छा बढ़ा सकता है। लगातार बढ़ते भाव से तेजी की प्रतिक्रिया में ता. ३० या ३१ को बाजार दबेगा। इस महीने बुध मार्गी होकर एक बार अच्छी मन्दी देगा। अप्रैल महीने की शुरुआत तेजी की धारणा के साथ होगी। तेजी के विचार से यह महीना महत्वपूर्ण हो सकता है। कारण इस महीने मेष राशि में सूर्य, शुक्र, मंगल, बुध सभी प्रवेश करेंगे और तुला के राहु-शनि प्रतियुति करेंगे। ता. २८ को बुध अस्त अवस्था में मेष में प्रवेश करेगा। इस महीने इतने अधिक ग्रह-योग बन रहे हैं कि यदि उसका पूरा असर यदि इसके भाव पर पड़ा तो तेजी को लोग देखते रहेंगे। Cotton Seed तेल का भाव भी काफी चढ़ेगा। महीने का अन्त तेजी से होगा। मई महीने में तेजी के रुख से शुरुआत होकर बीच-बीच में मन्दी का झटका लगता रहेगा। मन्दी के झटके के कारण बाजार नीचे आता रहेगा लेकिन भाव टूटने नहीं पाएगा। महीने में अफरा-तफरी कई बार होगी।

जून में ग्रहों का तेजी में सहयोग का सम्बन्ध धीमे-धीमे कमजोर होना शुरु होगा। रह-रहकर मन्दी का झटका महीने के प्रारम्भ

से ही शुरु हो जाएगा और गिरता-संभलता बाजार महीने के अन्त तक मन्दी का झटका खाता रहेगा। महीने के अन्त तक व्यापारी वर्ग संशय की स्थिति में आ जाएंगे। ता. १३ जून के बाद बुध नियन्त्रण में होगा लेकिन तब तक इसकी गति काफी कम हो जाने से उपद्रव में सहयोग नहीं कर सकेगा। अन्ततः महीना कुछ तेजी और कुछ मन्दी के झटके के साथ बीत जाएगा।

जुलाई में बाजार मजबूती में रहेगा। मन्दी के झटके भी लगते रहेंगे। ता. १९ जुलाई को राहु अपने नक्षत्र स्वाती में प्रवेश कर रहा है। शनि से इसकी दूरी लगातार अब घटती जाएगी क्योंकि शनि मार्गी हो चुका है। इसी के नक्षत्र आर्द्रा में गुरु भी चल रहा और गुरु का राहु-शनि से त्रिकोण बन रहा है। अतः १३-१४ के आस-पास बाजार पलटा खा सकता है। मन्दी का एक तेज झटका लगने के बाद ता. २० के आस-पास बुध के मार्गी होने पर संभल सकता है। इस वर्ष मानसून फिर कमजोर आने के कारण भाव तेजी में जून में भी बना रह सकता है। ता. ९ जुलाई के बाद वर्षा की स्थिति में सुधार होगा और २३ अगस्त तक वर्षा योग बनां रहेगा जिससे भाव का बढ़ना रुक सकता है। अगस्त में दो-तीन अच्छे झटके लगेंगे जिससे भाव में कमी होगी। महीने के अन्त में भाव का गिरना रुकेगा। महीने के अन्त में सूर्य-बुध युति मन्दीकारक है।

सितम्बर महीने में भाव में तेजी का रुख बना नहीं रह पाएगा। बाजार रुख अनिश्चित रहेगा। भाव दबने के समय बिकवाली दबाव बढ़ जाने से भाव टूट जाएगा। एक महत्वपूर्ण योग इस महीने ता. ७ को शुक्र का तुला राशि में प्रवेश करना रहेगा। ता. १७ से लेकर ता. २० के

बीच यह शनि और राहु दोनों से युति करेगा। इसी बीच शनि-राहु की युति भी होगी। इस समय बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति रहेगी। अनिश्चित रुख के बाजार में सौदा न करना ही ठीक रहेगा। बाजार इस समय टूट भी सकता है। तेजी का सौदा न करना अच्छा रहेगा। अक्टूबर के शुरु में बाजार संभालने की कोशिश होगी। किसी तरह एक स्तर पर ठहरता बाजार ता. १७ के सूर्य के तुला में प्रवेश के बाद फिर दबेगा। यहां से गिरता हुआ बाजार आगे भी कमजोर रहेगा। नवम्बर में ता. १२ तक बाजार संभालने की कोशिश होगी लेकिन ता. १३ को नेपच्यून मार्गी होकर मन्दी का एक अच्छा झटका बाजार को देगा। मंगल का सिंह राशि में संचार नेपच्यून से प्रतियुति की स्थिति में है जिससे बाजार संभला रह सकता है। फिर भी तेजी का एकाध उछाला ता. २४ के आस-पास होगा।

दिसम्बर में पहली तारीख को बुध वृश्चिक में प्रवेश करके मंगल और नेपच्यून दोनों से T. Square बनाएगा। प्रवेश के साथ ही मन्दी का तेज झटका लगेगा। मन्दी का प्रतिक्रिया में जल्दी ही बाजार नीचे के स्तर पर संभलेगा। ता. ५ को शुक्र मकर में प्रवेश करेगा और शनि तथा राहु से केन्द्र बनाएगा। शुक्र और बुध दोनों के केन्द्र योग में होने से बाजार इस समय कमजोर नहीं होगा। एक समान सा चलता हुआ एक दायरे में घूमता बाजार से महीने का अन्त हो जाएगा।

जनवरी में बाजार मजबूत होने की तैयारी में लगा रहकर फरवरी में मजबूत होगा। मार्च से मई तक लगातार मजबूत रहेगा। जून में तेजी कमजोर होना शुरु होकर अगस्त में रुका रह सकता है। सितम्बर में तेजी का जोर कम हो जाएगा और बाजार दबेगा। अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर में भाव दबा रहेगा।

# चीनी-गुड़

**जनवरी**- शुरु में एक समान सा चलता बाजार ता. १५ को एक कुछ ऊँचा होगा। ता. १७ को शुक्र-प्लूटो युति और ता. १८ को सूर्य-बुध युति से बाजार एक दिन अचानक नीचे का रुख करेगा। ता. २५ को मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश करने के साथ नेपच्यून का साथ पकड़ेगा। नेपच्यून ग्रह मन्दीकारक है और कुम्भ राशि मंगल की शत्रु राशि है। इससे २५-२६ को बाजार मन्दी में जाएगा। इस समय गुड़-चीनी दोनों का भाव घटेगा। ता. २५ से २७ के बीच तीन दिन बाजार में गिरावट बनी रहेगी।

**फरवरी**- इस महीने कुम्भ राशि में धीमे-धीमे ता. १२ तक पंचग्रही योग बनेगा जिससे सभी बाजारों में एक औसत दर्जे की तेजी बनेगी। ता. ६ को अन्य ग्रहों के सहयोग से बाजार मजबूत होगा। मजबूती में चलता हुआ बाजार ता. १२ को कुम्भ में सूर्य के प्रवेश के बाद चतुर्ग्रही के प्रभाव में आने से और मजबूत होगा। भाव बहुत कम बढ़ेगा। अन्त में ता. २१ को शुक्र कुम्भ में प्रवेश करके पंचग्रही योग बना रहा है। चीनी-गुड़ सभी ऊपर होगा।

**मार्च**- इस महीने सबसे पहले ता. ४ को मंगल-मीन में प्रवेश करेगा। मीन में पहले से हर्शल ग्रह चल रहा है जिससे मंगल तथा अन्य ग्रह युति करके इस महीने तेजी का बाजार बनाए रखेंगे। पिछले महीने के भाव इस महीने भी लगातार मजबूती में चलेंगे। यदि किसी दिन भाव दबा भी तो जल्दी ऊपर आ जाएगा। महीने में तेजी का वातावरण बना रहेगा।

**अप्रैल**- पिछला बना भाव इस महीने के शुरु में बना रहेगा। शुक्र की मंगल के साथ युति ता. ७ को होगी। ता. ६ को एक बार बाजार दबनें के बाद ता. ७ को फिर सुधर जाएंगे। ता. १० को मंगल-शुक्र क्रान्तिसाम्य करेंगे। तेजी का वातावरण बना रहेगा। ता. १० को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करेगा। दो दिन बाजार का बढ़ना रुका रह सकता है। ता. १२ को मंगल भी मेष में प्रवेश करके तेजी को बढ़ावा देगा। ता. १३ को सूर्य मेष में प्रवेश

करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा, इससे बाजार की मजबूती बढ़ जाएगी। भाव धीमे-धीमे मन्दी के झटके के साथ बढ़ेंगे। ता. १५ को बाजार दबने का चान्स बन रहा है। इस महीने यह सभी ग्रह तुला के शनि-राहु से प्रतियुति भी करेंगे जिससे बाजार भाव अनुमान से अधिक बढ़ सकता है।

**मई**- ता. ४ को सबसे पहले शुक्र वृष में प्रवेश कर रहा है। गुरु यहां पहले से है। शुक्र का वृष में प्रवेश ता. ५ को चीनी-गुड़ दोनों में तेजी देगा। आगे १३-१४ को सूर्य-बुध वृष में प्रवेश करके तेजी की रफ्तार ता. १३ से कम कर देंगे। ता. २३ को मंगल का वृष में प्रवेश पंचग्रही योग बनाएगा। यहां से महीने के अन्त तक तेजी की रैली बन जाएगी।

**जून**- शुक्र मिथुन में गुरु के साथ चलता हुआ शनि और नेपच्यून से त्रिकोण बनाएगा। भाव की मजबूती महीने के शुरु से ही कम होती जाएगी। ता. ६ को गुड़-चीनी का भाव दबेगा। यहां से बाजार पहले जैसी मजबूत स्थिति में नहीं रहेगा। ता. १५ से भाव का संभलना शुरु होकर ता. २२ को हल्का सा सुधरेगा। ता. २५-२६ को बाजार में तेज गिरावट होगी जिससे भाव नीचे आ जाएंगे।

**नोट**- इस महीने मानसून कमजोर आने का बन रहा है। इस स्थिति में भाव का गिरना रुककर बाजार तेजी में जा सकता है। वर्षा की स्थिति अगले महीने ९ जुलाई से बनकर ता. २३ अगस्त तक रहेगी। जिससे बाजार फिर ९ जुलाई के बाद अचानक मन्दी में जाएगा।

**जुलाई**- पंचग्रही योग वृष राशि में टूट चुका है। तेजी के कारक ग्रह भी कमजोर हो रहे हैं। ता. ४ को मंगल मिथुन में प्रवेश कर रहा है। यहां यह बुध-गुरु का साथ पकड़ेगा और प्रवेश के बाद ही ता. ५ को भाव एक बार गिराएगा। ता. ७ से भाव संभलने की कोशिश करेगा लेकिन संभलता हुआ या दुतर्फा रुख लेकर चलता बाजार ता. १४ को एक बार फिर दबेगा।

**अगस्त**- पिछले महीने के बने भाव इस महीने भी शुरु में बने रहेंगे। ता. ४ को भाव अचानक सुधरेंगे। यहां से बनी मजबूती कम से कम ता. २३ तक बनी रहेगी। भाव हल्के से सुधरेंगे, गिरेंगे नहीं। ता. २४ को प्रतिक्रिया में बिकवाली दबाव या किसी अन्य कारण से भाव दब जाएगा। जल्दी ही धारणा में सुधार होगा और ता. ३१ से भाव का गिरना रुककर बाजार संभलेगा। इस महीने में भाव घटकर नहीं बन्द होगा।

**सितम्बर**- ता. ६ को बाजार दबेगा। यहां से बाजार धीमे-धीमे दबता जाएगा। कर्क का मंगल भी इस समय मन्दी में सहयोग देगा। उसकी चतुर्थ दृष्टि इन सब ग्रहों पर होगी। ता. १७ से २० के बीच शुक्र की राहु और शनि से युति होगी। इस समय भाव काफी नीचे भी जा सकते है। ता. २३ के बाद ही बाजार का गिरना रुकेगा। महीना मन्दी प्रधान रहेगा।

**अक्टूबर**-इस महीने नीचे के स्तर के आस-पास बाजार रहना चाहिए। सूर्य तुला में प्रवेश करके शनि-राहु का साथ पकड़ेगा जिससे बाजार उठ नहीं सकेगा। ता. १७ को सूर्य का तुला में प्रवेश बाजार दबा देगा। यहां से दबा हुआ बाजार कम से कम ता. २७ तक मन्दी में चलता रहेगा। ता. २८ को बाजार संभलने की कोशिश करेगा।

**नवम्बर**- मन्दी से इस महीने भी छुटकारा नहीं मिलेगा। पिछले महीने ता. २७ के बाद से संभलता हुआ बाजार ता. १२ तक चलता रहेगा। ता. १४ को प्रतिक्रिया में फिर दब जाएगा। ता. १६ या २० से गिरावट रुकेगी। यहां से बना भाव बिना विशेष घटा-बढ़ी के महीने के अन्त तक चलता रहेगा। मन्दी का प्रभाव बना रहेगा।

**दिसम्बर**- एक ही भाव के आस-पास बाजार ता. १५ तक चलता रहेगा। यदि बढ़ा भी हो तो तुरन्त दब जाएगा। ता. १६ को एक गिरावट फिर होगी। यहां से मन्दी में गया हुआ बाजार महीने के अन्त तक मन्दी में ही बना रहेगा। अगले महीने भी विशेष सुधार की आशा नहीं है। साल का अन्त मन्दी में होगा।

# किराना बाजार

किराना बाजार में जीरा, धनिया, हल्दी, अजवायन, इलायची, मेथी, सौंफ, लौंग, सभी तरह के सूखे मेवे, पंसारी के यहां के सभी सामान इसमें आते हैं। एक छोटी दुकान से लेकर बड़े-बड़े मॉल में बिकने वाले सभी सामान किराने में आते है। इसका व्यवसाय सभी शहरों में होता है। इसका नाम आजकल खुदरा बाजार, किराना बाजार, F.D.I. कहा जाने लगा है। स्थानीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक इसमें गलाकाट प्रतिस्पर्धा चल रही है। जनसंख्या के कारण हमारे देश में यह व्यवसाय सदियों से फल-फूल रहा है। उत्पादन हमारे यहां होता रहा और इसकी आपूर्ति मांग से अधिक होने के कारण विदेशों में भी निर्यात होता रहा। देश इस व्यवसाय से सम्पन्न होता रहा। इसके इसी महत्व के कारण मौजूदा देश विरोधी सरकार इस क्षेत्र में अब विदेशियों को ले आना चाह रही है। यदि विदेशी इस क्षेत्र में आ गए तो यहां के लोगों का क्या होगा। यहां के लोग प्रतिस्पर्धा को झेल पाएंगे कि नहीं। इनके आ जाने पर यह जब भी चाहेंगे और जिस चीज को चाहेंगे उसका भाव बढ़ जाएगा चाहे उसका उत्पादन अधिक ही क्यों न हुआ हो। यह जब चाहेंगे तभी किसी वस्तु का भाव कम समय में ही डयोढ़ा-दुगुना कर देंगे। इसके लिए यह ज्योतिष का भी सहारा लेते है और इनके यहां उनका मान-सम्मान के साथ अच्छी दक्षिणा भी है। हमारे यहां ज्योतिष

के महत्व को कम ही लोग समझते है और व्यवसाय को भगवान भरोसे चलाते हैं।

यदि आप अपनी कमजोरियों को समाप्त कर जिस भी वस्तु का व्यापार करते है उसकी खरीद-बिक्री के लिए ज्योतिष का सहारा लेकर व्यवसाय करें तो सफलता और सम्पन्नता साथ-साथ मिलेगी।

प्रत्येक राशि, नक्षत्र-तारे, ग्रह का विश्व के सभी प्राणियों, जीव-जन्तुओं, कृषि उपज, आविष्कार, उन्नति-अवसान पर व्यापक रुप से पड़ता है। इनकी तरंगों के प्रभाव में मानव मस्तिष्क आने से वस्तुओं के भाव नीचे-ऊपर होते हैं। सही तरंगों को पकड़कर जो व्यापार करता है, वह हमेशा लाभ की स्थिति में रहता है। गलत तरंगों के प्रभाव में आने पर सौदा हमेशा उल्टा होने पर हानि उठाना पड़ता है। गलत तरंगों के प्रभाव में न आने पांए उसके लिए कुछ नियम है।

बड़े ग्रह शनि, गुरु, हर्शल, नेपच्यून का प्रभाव धीमे लेकिन लम्बे समय तक रहता है। छोटे ग्रह बुध-शुक्र, सूर्य, मंगल, का प्रभाव जल्दी और बहुत तीव्रता से पड़ता है। अतः यदि आप बड़े ग्रह की अधिकतर वस्तुओं का व्यवसाय कर रहे हों तो उसकी खरीद-बिक्री के लिए निर्णय शीघ्रता में नहीं करिए। कुछ समय उनकी चाल देखने के बाद ही निर्णय लीजिए। छोटे ग्रह की अधिकार वाली वस्तुओं का निर्णय जल्दी लिया जाता है। बड़े ग्रहों की वस्तुओं का स्टाक करने से

लाभ अच्छा होता है। किसी कारण से भाव यदि गिर भी जाए तो बड़ा ग्रह तेजी में रहने पर उसके भाव को फिर बढ़ा देगा।

सन २०१३ में किराना बाजार के लिए कुछ महत्वपूर्ण योग बनने जा रहे है जो इस पर लम्बे समय तक अपना प्रभाव डालेंगे। समय-समय पर अन्य ग्रहों के सहयोग से सटोरिया चाल निकलने पर भाव तेजी से बढ़ेंगे। अतः इनके अंशात्मक योग पूरा होने के समय और ग्रहों के राशि बदलने के समय विशेष ध्यान रखिएगा।

जनवरी में ही एक प्रमुख योग बन रहा है। ता. १४ को राहु धनु राशि छोड़कर तुला राशि में प्रवेश करके शनि के साथ लगभग १८ महीने रहेगा। यह योग किराना बाजार में कई वस्तुओं पर असर डालेगा। यह जिस पर भी अपना प्रभाव देगा तेजीकारक रहेगा। उसी तरह मन्दीकारक स्थिति में भाव नीचे भी ले आएगा। सितम्बर में इसकी शनि से युति होगी उस समय बाजार मन्दी में जाने का पूरा चान्स रहेगा। वर्ष के शुरु में यह तेजी देगा। इसके प्रभाव में आने वाली वस्तुएं सौंफ, लौंग, जायफल, मेन्था, पिपरमिन्ट, अजवाइन, बादाम, पिस्ता, दालचीनी, केशर, इलायची, तिल, धनिया, जीरा, सोंठ, अदरख, खल बिनौला, मूंगफली रहेगी। यदि आपने सही वस्तु का चुनाव किया तो अच्छा लाभ मिलेगा। केवल तेजड़िए ही नहीं, मन्दड़िए भी अच्छा मुनाफा कमाएंगे।

## धनिया

**जनवरी**- इस महीने बुध ता. १५ तक किसी ग्रह के प्रभाव और नियन्त्रण में नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ में यह शुक्र और सूर्य के साथ धनु राशि में चल रहा है। इससे तथा अन्य ग्रहों के योग से इसमें तेजी नहीं बन सकेगी। तीनों ग्रह शनि की पूर्ण तृतीय दृष्टि में रहकर त्रिरेकादश योग में है। तारीख १५ तक एक ही भाव के इर्द-गिर्द बाजार चलता रहेगा। ता. ६ को एक मन्दा हो सकता है। ता. १७ को शुक्र-प्लूटो युति से बाजार अच्छा दबेगा। यहां से भाव दबने का रुख रहेगा। ता. २५ को बुध-शनि केन्द्र से भाव फिर दबेगा। इसके बाद आगे भाव घटा हुआ चलता रहेगा।

**फरवरी**- ता. २ को शुक्र-गुरु क्रान्तिसाम्य की स्थिति बनाएंगे जिससे इस दिन या अगले दिन भाव तेजी का बनेगा। भाव एकाएक उछलेगा। यहां से कम से कम ता. १२ तक भाव तेजी में रहना चाहिए। ता. १२ को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करके तेजी को बनाए रखेगा। इसकी रफ्तार धीमी हो जाएगी। ता. २० को भाव दब सकता है निश्चित नहीं है। चतुर्ग्रही योग से तेजी बनी रहेगी। ता. २१ को शुक्र कुम्भ में प्रवेश करके पंचग्रही योग बना रहा है जिससे तेजी भड़क सकती है। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**मार्च**- पिछले महीने के भाव कुछ नीचे-ऊपर होकर ता. १४ तक चलता रहेगा। इस महीने सभी ग्रह राशि बदल रहे है और अगली तेजी की तैयारी कर रहे है। ता. १७ को बुध मार्गी होकर मन्दी का भाव बनाएगा ता. २० से भाव में सुधार होगा। मंगल-शुक्र-सूर्य-हर्शल से भ़ाव में तेजी बनेगी। तेजी हल्की ही रहना चाहिए लेकिन सटोरिया वर्ग

तेजी को अचानक मजबूत करेगा। इस महीने भाव अधिक तेज नहीं होना चाहिए। महीना अधिक तेजी का नहीं होगा।

**अप्रैल**- ता. १ या २ को भाव कुछ ऊँचा होगा। ता. ९ तक बाजार अच्छी तेजी में रहेगा। इसके बाद भाव बढ़त धीमी रफ्तार से होगा। ता. १२ को एक बार फिर भाव में उछाला आएगा। ता. २८ तक बिना विशेष घटा-बढ़ी के चलता हुआ महीने का अन्त होगा। बाजार तेजी का लगभग पूरे महीने ही बना रहेगा।

**मई**- तेजी के बाजार में ता. ११ के आस-पास मन्दी का एक तेज झटका लगेगा। ता. १३ को बाजार संभलेगा लेकिन ता. १५ को भाव एक बार फिर दबने का चान्स है, निश्चित नहीं है। ता. १८ को भाव फिर तेज होगा। ता. २४ तक तेजी बनी रहेगी। इसके बाद मन्दी का एकाध झटका लगकर बाजार फिर संभल जाएगा। महीना तेजी प्रधान रहेगा।

**जून**- संभला हुआ बाजार ता. ६ को अचानक दबेगा। तेजी आगे फिर जारी हो जाएगी। ता. २५-२६ को एक बार मन्दी का झटका लगकर महीने का अन्त होगा। इस महीने मन्दी के कई झटके खाकर भी बाजार मन्दी में नहीं जाएगा। पिछले महीने के भाव के आस-पास इस महीने के अन्त में भी बना रहेगा।

**जुलाई**- इस महीने भाव दबने का योग है। ता. ४ या ५ को भाव तेजी से नीचे जाएगा। भाव में कमजोरी अब बनना शुरु हो जाएगा। मन्दी का भाव तो नहीं बनेगा लेकिन भाव का बढ़ना रुक जाएगा। एकाध मौके पर ही प्रतिक्रिया में भाव बढ़ेंगे। अधिकतर समय अब भाव एक दायरे में घूमते रहेंगे। पिछले महीने की अपेक्षा भाव कुछ कम

होगा।

**अगस्त**- भाव अपना एक स्तर बना लेंगे। इस स्तर के ऊपर जाने पर भाव नीचे आएगा और स्तर के नीचे जाने पर जल्दी ही रिकवरी होगी। इस महीने कई बार नीचे का रुख होगा बाद में ऊपर भी आ जाएगा। कुल मिलाकर जून से लेकर इस महीने तक भाव एक स्तर के आस-पास बने रहना चाहिए।

**सितम्बर**- पिछले तीन महीनों की तरह ही यह महीना भी रहेगा। ता. ६ को शुक्र का कन्या में प्रवेश मन्दी का रुख बनाएगा। ता. ६ को भाव दबेगा। ता. १७ से ता. २० तक शुक्र-राहु युति करेंगे। बाजार में घबड़ाहट का माहौल बनेगा और भाव नीचे का रुख करेगा। ता. २० को एक मन्दा फिर मारेगा। ता.२५ को बुध भी तुला में प्रवेश करेगा यह भी मन्दीकारक रहेगा। इस महीने शुक्र-शनि-राहु युति और मंगल का इन सबसे केन्द्र योग बाजार में गिरावट देगा।

**अक्टूबर**- बाजार का रुख कमजोरी का ही रहेगा। शुरुआत में पिछले महीने के स्तर के आस-पास बाजार चलता हुआ ता. १२ को अचानक दबेगा। भाव यहां से ता. १८ तक लगातार नीचे जाएगा। ता. १२ से १८ या २० तक भाव नीचे होते जाएंगे। इस समय भाव एक तरह से संकट पूर्ण हो जाएंगे। ऊँचे में जिन लोगों ने सौदा खरीदी का कर रखा हो उनको भाव दबते ही तुरन्त निकल जाना चाहिए वरना लम्बा घाटा भी लग सकता है। ता. २७ के बाद ही भाव में सुधार होगा।

**नवम्बर**- महीने के शुरुआती दिनों में भाव अपने पहले के स्तर पर चलते रहेंगे। एकाध तेजी का उछाला या मन्दी का झटका

लगेगा। आधा महीने बीतने पर सूर्य तुला राशि से निकलकर सूर्य-शनि के प्रभाव से निकलेगा। वृश्चिक में प्रवेश करके बाजार संभालेगा। यहां पर अन्य ग्रहों के सहयोग से हल्की तेजी या भाव में सुधार होगा। ता. १९ को बुध राहु से तीसरी युति करेगा। इसके बाद ही यह २४ को हल्की तेजी दे सकता है। ता. २६ को बुध की तीसरी युति शनि से होगी। इसी दिन मंगल कन्या में प्रवेश करके एक बार भाव घटा सकता है। ता. २८ को बुध-शुक्र त्रिरेकादश और शुक्र-गुरु प्रतियुति तेजी देगी। इस महीने भाव अपने नीचे के स्तर के आस-पास पहुंच जाएंगे।

**दिसम्बर**- ता. १ को बुध का वृश्चिक में प्रवेश मन्दीकारक रहेगा। भाव इस दिन अचानक घटेंगे। वृश्चिक में सूर्य बुध के नक्षत्र ज्येष्ठा में चल रहा है जिससे ता. ३ या ४ से बाजार में सुधार चालू होगा। भाव यहां से सुधरकर चलेंगे। ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करके बुध का साथ छोड़ रहा है इससे ता. १६ को भाव अचानक दब सकता हैं। इसके बाद महीने के अन्त में एकाध मन्दा मारकर वर्ष का अन्त हो जाएगा। अगला महीना तेजीकारक हो सकता है। इस महीने का बन्द भाव पिछले महीने की अपेक्षा ऊँचा होगा।

जनवरी में मन्दा रहकर फरवरी से मई तक तेजी में रहेगा। जून में बढ़ना रुककर जुलाई में कमजोर रहेगा। अगस्त में एक स्तर पर बना रहकर सितम्बर नवम्बर तक मन्दी में रहेगा। दिसम्बर में मन्दी रुकी रहेगी। जनवरी में स्टाक करके मई में खाली कर लें। नीचे का भाव इस वर्ष ४८ रुपये और ऊपर में यदि ८० को पार किया तो १०५ हो सकता है।

# गुवार

पिछले वर्ष गुवार की तेजी की विवेचना सही की गयी थी और यह कहा गया था कि इस वर्ष ग्वार का भाव ऊँचाई का नया स्त्तर देखेगा। ऊपर का जो भाव लिखा गया था वह लिखने के समय जो भाव चल रहा था उसके आधार पर लिखा गया था लेकिन उससे भी कई गुना ऊपर चला गया था और बेतहाशा इतना बढ़ा कि इसका बाजार में सौदा ही बन्द हो गया और आज भी इसका सौदा बन्द है। भाव बढ़ने का कारण विदेशों से इसकी मांग निकलना था। माइनिंग उध्योग में इसकी मांग निक़ली और जो भाव बना, उस पर भी उनको सस्ता लग रहा था। अब ग्वार की नई स्थिति बन चुकी है। इसको लिखने के समय ग्वार की स्थिति साफ नहीं हुई है। मानसून की वर्षा हुई नहीं है और बिजाई का कुछ पता नहीं हैं। उत्पादन कितना होगा इसका अनुमान नहीं है।

इस जिन्स के लिए मुख्य राशि कुम्भ है और इससे त्रिकोण राशि तुला तथा मिथुन है। कुम्भ का स्वामी शनि अपनी उच्च राशि तुला में भ्रमण कर रहा था और सामने मेष राशि में गुरु का संचार इसके भाव को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निबाही। इस वर्ष गुरु मेष से आगे बढ़कर वृष राशि में वर्ष के शुरु में चल रहा है इससे तेजी का तूफान इस वर्ष नहीं चल सकेगा।

वर्ष की शुरुआत में भाव कुछ मजबूत हो सकते है। पहले सप्ताह में ता. ५ के आस-पास इसके भाव मजबूत होना शुरु करेंगे।

ता. १५ को एक उछाला आकर बाद में बाजार शान्त हो जाएगा। बाजार आगे धीमे-धीमे कमजोर होता हुआ ता. २६ को अचानक दबेगा। महीने के अन्त में ता. २८ के आस-पास भाव में एकाध दिन सुधार होगा। महीने में भाव में विशेष परिवर्तन नहीं होगा। फरवरी में स्थिर या कम घटा-बढ़ी में चलता बाजार ता. २१-२२ को कुछ ऊँचा होगा बाद में धीमे-धीमे रुककर ता. २७ के आस-पास से शान्त हो जाएगा। इस महीने बुध कुम्भ राशि में वक्री होकर मंगल से दो बार युति करेगा। पहली युति ता.८ को होगी जिसमें भाव तेजी से ऊपर होगा और दूसरी युति बुध के वक्री होने के बाद ता. २६ को होगी जिसमें भाव हल्का बढ़ेगा। शेष समय बाजार समान सा रहेगा। मार्च महीने में भाव समान सा एक स्तर के आस-पास मजबूती से चलते रहेंगे। विशेष उतार चढ़ाव नहीं होगा। ता. १८ को बुध मार्गी होकर मन्दी देगा। बाजार हल्का दबेगा। दो दिन बाद ही भाव उठकर अपनी जगल आ जाएगा। महीने के आखिरी दिन ता. ३१ को एक बार भाव फिर दब जाएगा। अप्रैल में शुरु तेजी से ही बाजार सुधरना शुरु हो जाएगा। मेष में जैसे-जैसे ग्रहों का जमावड़ा बढ़ता जाएगा, भाव तेज होता जाएगा। ता. १३ से भाव बढ़ने की रफ्तार तेज होगी। यहां पर नेपच्यून और गुरु से डबल सेक्सहाइल योग बन जाएगा जिससे बाजार में इकतरफा तेजी बनेगी। ता. २८ से तेजी की रफ्तार और बढ़ेगी। तेजी ता. १० तक इकतरफा बन सकती है और इतने समय में भाव काफी बढ़ जाएगी। ता. २४ को प्रतिक्रिया में मन्दी का झटका लगेगा और भाव टूटेगा।

जून में शुरु में विशेष घटा-बढ़ी नही होगी। बाजार मजबूत रहेगा। ता. ११ को भाव में हल्की बढ़त दर्ज होगी। इसके बाद रुककर ता. २३ को भाव फिर मजबूत होगा लेकिन यहां सतर्क हो जाना चाहिए। ता. २५ या २६ को भाव अचानक घटेगा। ता. २६ को बुध वक्री ता. २७ को भाव का गिरना रोकेगा। इस महीने भाव मजबूती में चलते हुए मन्दी का झटका भी खाएंगे। जुलाई में ता. १६ तक भाव समान सा चलता हुआ ता. १८ से तेजी में आएगा। यहां से भाव मजबूत होते हुए महीने का अन्त हो जाएगा। अगस्त में ता. १५ तक मन्दी का कई झटका लगने के बाद कुछ दबेगा और ता. २० के बाद महीने के अन्त तक भाव सुधरता रहेगा।

सितम्बर में ता. ४ के बाद भाव का बढ़ना समाप्त हो जाएगा। जो भी भाव में सुधार होना था वह हो चुका रहेगा। ता. २० से मन्दी का झटका लगना शुरु होकर भाव दबता जाएगा। महीने का अन्त मन्दी से होगा। अक्टूबर में भाव में कोई सुधार न होकर समय-समय पर मन्दी का झटका लगकर भाव नीचे आता रहेगा। पिछले महीने की अपेक्षा इस महीने भाव घटा रहेगा। नवम्बर में भी भाव दबा हुआ बना रहेगा। ता. १४ के आस-पास मन्दी का झटका लगता रहेगा। इसके बाद हो सकता है कि भाव में सुधार हो लेकिन निश्चित नहीं है। ता. २४ के आस-पास प्रतिक्रिया में सुधार हो सकता है। दिसम्बर में शुरु में ही एक मन्दी का झटका लगेगा। ता. ३ के आस-पास सुधरेगा। महीने के अन्त में फिर घटकर साल का अन्त हो जाएगा।

## चना

**जनवरी**- मंगल अपना अधिकांश समय इस महीने में मकर राशि में बिताएगा। इस राशि में शनि-राहु से केन्द्र, गुरु से त्रिकोण और केतु से केन्द्र में रहेगा। मकर इसकी उच्च राशि है और १४ से सूर्य के साथ भ्रमण करेगा। पिछले महीने के भाव पर यह शुरु में चलता रहेगा। हालांकि ता. १ को हर्शल से त्रिरेकादश योग और ३ को प्लूटो क्रान्तिसाम्य बनाकर बाजार हल्का दब सकता है लेकिन भाव फिर अपनी जगह आ जाएगा। ता. ५ से १५ तक बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के लेकिन कमजोरी का रुख दिखाकर चलेगा। ता. १७ को भाव अचानक कम होगा। ता. २५ या २६ को एक बार भाव फिर दबेगा। महीने के अन्त में भाव पिछले महीने की अपेक्षा घटेगा। इस महीने बाजार मन्दी का रहेगा। ता. २४ को राहु से केन्द्र योग मन्दीकारक होगा।

**फरवरी**- इस महीने कुम्भ में पंचग्रही योग बनेगा जिससे भाव मजबूती का बनेगा। शनि-राहु से त्रिकोण योग बन जाएगा और गुरु से केन्द्र होने से बाजार में तेजी का रुख बन जाएगा। नेपच्यून से युति की स्थिति में होने से ता. ३ को भाव अचानक बढ़ेगा। ता. ६ को नेपच्यून से क्रान्तिसाम्य करके भाव में और तेजी देगा। ता. ८ को बुध-मंगल नेपच्यून युति से बाजार हल्का बढ़ेगा। ता. १९ को प्रतिक्रिया में भाव दबेगा। महीने के अन्त में तेजी में रहेगा।

**मार्च**- पिछले महीने में ता. १९ को दबा भाव बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के लेकिन तेजी में रहते हुए ता. १७ तक चलता रहेगा। ता. १७ को भाव अचानक एक बार दब जाएगा। यह मन्दा

धोखे का रहेगा। आगे आने वाले महीनों में भाव में तेजी बन जाएगी। इस महीने मीन राशि में चतुर्ग्रही योग बनने से कई वस्तुओं में और चना में भी भाव दबने के बावजूद तेजी रहेगी। फिर भी बाजार को इस महीने अनिश्चित मानकर चलना चाहिए।

**अप्रैल**- इस महीने भाव रुक-रुककर इकतरफा तेजी में चलेगा। मेष में ता. १० को शुक्र प्रवेश कर रहा है और महीने के अन्त तक ता. २८ को बुध मेष में प्रवेश कर रहा है इससे चतुर्ग्रही योग बनेगा और सामने शनि-राहु के कारण भाव तेजी का होता जाएगा। ता. १२ को मंगल मेष में प्रवेश करके शुक्र के साथ हो जाएगा। भाव यहीं से तेजी में चल पड़ेगा। धीमे-धीमे भाव बढ़ते जाएंगे। ता. १४ को सूर्य भी मेष में प्रवेश करके मजबूती देगा। ता. २८ को बुध भी मेष में प्रवेश करके तेजी के बाजार में और तेजी देगा। पूरा महीना ही तेजी में जाएगा। सट्टे में खरीदकर चलना चाहिए। प्रतिक्रिया में जब भी भाव घटे खरीदें।

**मई**- ता. ४ को शुक्र वृष में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग तोड़ रहा है। बाजार अभी नहीं दबेगा। ता. ८ को बुध तीसरी बार मंगल से युति कर रहा है। पहले की दो युतियां तेजीकारक रही। इस बार यह युति के कुछ दिनों के बाद मन्दी देगा। ता. १० को सूर्य और बुध कृत्तिका में साथ-साथ प्रवेश कर रहे है और रात में दोनों युति कर रहे है। ता. २२ को बाजार में अचानक मन्दी का झटका लगेगा। भाव इस दिन अधिक टूटेगा। यहीं इसका मन्दी का Turning Point कुछ दिनों के लिए बन सकता है। ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करके शुक्र के साथ चलेगा। ता. १५ को एक बार फिर मन्दा मारेगा।

ता. १८ को मंगल कृत्तिका में प्रवेश करके सूर्य के साथ इस नक्षत्र में चलकर भाव का गिरना रोकेगा। ता. २३ को मंगल वृष में प्रवेश करके भाव को कुछ बढ़ाएगा। इसके बाद भाव कुछ सुधरकर चलेंगे। लेकिन तेजी नहीं बनेगी।

**जून**- इस महीने चना का भाव गिरेगा। जब भी भाव बढ़ेगा जल्दी ही बिकवाली दबाव से ऊँचा हो जाएगा। मंगल का नेपच्यून से केन्द्र योग ता. ६ या ७ को मन्दी देकर बाजार दबाएगा। ता. ८ भी बाजार में मन्दी का जोर बना रहेगा। ता. १५ से भाव का गिरना रुकेगा। यहां का बना भाव बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के एक दायरे में चलता हुआ ता. २५ को मंगल-गुरु क्रान्तिसाम्य से फिर दबेगा। महीने का अन्त मन्दी में होगा।

**जुलाई**- मन्दी का जोर इस महीने भी बना रहेगा। मंगल ता. ४ को मिथुन में प्रवेश कर गुरु और बुध के साथ चलेगा। बुध वक्री चल रहा है। ता. ५ को जबर्दस्त मन्दी का झटका मारेगा। ता. ६ से गिरावट कम होगी लेकिन मन्दी अभी नहीं जाएगी। ता. १५ को मन्दी का एक झटका फिर लगेगा। ता. १६ को बुध आर्द्रा में प्रवेश करके इसी में मंगल के साथ भ्रमण करेगा लेकिन मन्दी दूर नहीं होगी। भाव का गिरना रुकेगा और ता. २० को कुछ सुधार होगा। यहां का बना भाव महीने के अन्त तक एक सीमित दायरे में घूमता हुआ मन्दी का अन्त हो जाएगा। महीना मन्दी का ही रहेगा।

**अगस्त**- ता. १ को मंगल-हर्शल केन्द्र से बाजार स्थिर होगा और ३ या ४ को भाव में सुधार होगा। बाद में उतार-चढ़ाव कम होते हुए ता. १७ का बना भाव एक दायरे में चलता हुआ ता.

२४ की सूर्य-बुध युति से एक बार फिर दबेगा। ता. ३१ को मंगल-प्लूटो क्रान्तिसाम्य से बाजार हल्का बढ़ेगा। पूरे महीने भाव पिछले महीने के भाव के इर्द-गिर्द घूमता रहेगा। बाजार मन्दी का ही रहेगा। इस तरह ११ मई से मन्दी की तरफ घूमा बाजार अभी भी मन्दी में ही रहेगा।

**सितम्बर**- भाव अपने निचले स्तर के आस-पास आ जाएगा जिससे इस महीने अब और कम होने की गुंजाइश नहीं बचेगी। पिछले महीने के अन्त के बने भाव से महीने की शुरुआत होगी। यह भाव लगातार बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी कम से कम ता. २६ तक चलता हुआ ता. २७ को शुक्र-गुरु त्रिकोण से बढ़ेगा। भाव अगले महीने बढ़ने की आशा कर सकते है। बाजार नीचे भाव पर लगभग पूरे महीने चलता रहेगा।

**अक्टूबर**- नीचे के स्तर पर चलता हुआ भाव ता. १७ को सूर्य के तुला में प्रवेश के बाद और दब जाएगा। ता. १२ से १८ के बीच भाव इकतरफा गिरने का चान्स बन रहा है। ता. २८ से मन्दी की प्रतिक्रिया में कुछ सुधार होगा। व्यापारिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण नहीं रहेगा। इस महीने भी भाव कमोबेश अपनी जगह बना रहेगा।

**नवम्बर**- कई महीनों के बाद इस महीने भाव गिरेगा नहीं बल्कि इस महीने का अन्त बढ़े भाव से होगा। इस महीने की वृश्चिक संक्रान्ति के आस-पास Turning Point बनेगा और भाव का बढ़ना शुरु होगा। ता. ६ के आस-पास भाव में हल्का सुधार होगा लेकिन लोगों की आशा नहीं जागेगी। सिंह का मंगल अब भाव गिरने नहीं देगा। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश करके

शनि-राहु का साथ छोड़ देगा जिससे भाव मजबूत होंगे। जल्दी ही भाव का बढ़ना रुकेगा लेकिन भाव गिरेंगे नहीं। महीना सुधार का रहेगा।

**दिसम्बर**- ता. १ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करके भाव का बढ़ना रोकेगा। ता. ३ को कुछ मजबूती दिखाई देगी। बगैर घटा-बढ़ी के चलता बाजार ता. १६ को एक मन्दा आने के बाद संभल जाएगा। मन्दा जोर का होगा। यहां यदि Turning Point मजबूत हुआ तो भाव अगले महीने भी बढ़ेगा। यदि रुक गया तो अगले महीने भाव नहीं बढ़ेगा। मेरे विचार से अगले महीने तेजी अच्छी होनी चाहिए और तेजी कम से कम १० फरवरी तक चलना चाहिए। ४०-४५ दिन की तेजी में भाव अच्छा बढ़ जाएगा। वर्ष का अन्तिम महीना तेजी का बन जाएगा। स्टाक को जनवरी के अन्त में खाली करें।

जनवरी में बाज़ार कमजोर होकर दबेगा। फरवरी में तेज होकर मार्च में मन्दी का झटका लगता रहेगा। बाजार अनिश्चित रहकर गिरेगा नहीं। अप्रैल में तेज हो जाएगा। जनवरी में खरीदकर अप्रैल में बेच देना चाहिए। मई से अक्टूबर तक भाव दबता ही रहेगा और नीचे का स्तर देख लेगा। अक्टूबर में स्टाक करके जनवरी २०१४ के अन्त में बेचना चाहिए। मई से अक्टूबर के बीच ट्रेडिंग करना चाहिए।

## खल-बिनौला (Oil-Cake)

**जनवरी**- पिछले महीने का बना भाव बिना किसी गिरावट केमहीने के शुरु से ता. १४ तक चलता रहेगा। बहुत कम दायरे में चलता हुआ ता. १५ को प्रतिक्रिया में अचानक बढ़ेगा। ता. १६ को शान्त रहकर ता. १७ को फिर दब जाएगा। इस दिन मन्दी का तेज झटका लगेगा। अगले ही दिन से भाव का सुधरना फिर शुरु हो जाएगा। मंगल का शनि की राशि कुम्भ में प्रवेश ता. २५ को होगा। कुम्म में यह नेपच्यून के साथ भ्रमण करेगा। कुम्भ में प्रवेश कें बाद ही ता. २५-२६ को अच्छा मन्दा देगा। ता. २८ को शुक्र मकर में प्रवेश करके भाव का गिरना रोकेगा। ता. २८ को भाव में सुधार होगा। इसके बाद महीने के अन्त तक भाव मजबूती में चलता रहेगा। मास मध्य के बाद मन्दी के कई झटके लगेंगे फिर भी भाव घटने नहीं पाएगा।

**फरवरी**- इस महीने में भाव बढ़ते रहेंगे। भाव जब भी घटेगा, जल्दी ही बढ़कर नए स्त्तर पर पहुंचेगा। ता. ३ को भाव अचानक बढ़ेगा। तेजी की लाइन चल पड़ेगी। ता. ६ को भाव फिर बढ़ेगा। ता. १२ को सूर्य कुम्भ में प्रवेश करके मंगल-बुध-नेपच्यून के साथ चतुर्ग्रही योग बनाएगा इससे तेजी का भाव बना रहेगा। ता. १८ को शनि वक्री होगा इससे ता. १९ को एक बार भाव दब सकता है। मन्दा प्रतिक्रिया में ता. २० को भी जारी रहेगा। ता. २१ को शुक्र भी कुम्भ में प्रवेश करेगा और तेजी को बढ़ा देगा। महीने के अन्त तक तेजी बनी रहेगी। इस महीने भाव तेजी से बढ़ सकता है।

**मार्च**- खल-बिनौला का भाव पिछले महीने बढ़कर ता. ९ तक ठहरा सा रहेगा। तेजी ता. ४ को मंगल मीन राशि में प्रवेश करके पंचग्रही योग समाप्त कर देगा और गुरु से केन्द्र योग बनाएगा जिससे

भाव का बढ़ना रुक जाएगा। ता. १४ को सूर्य मीन में प्रवेश करके मंगल का साथ पकड़ेगा। ता..१७ को शुक्र मीन में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग बनाकर चलेगा। यह इसकी उच्च राशि है जिसके कारण एक बार मन्दी का झटका देने के बाद ता. २० से तेजी फिर कायम कर देगा। इसके बाद बना भाव चलता हुआ ता. ३१ को एक बार भाव फिर दबेगा। महीना दुतर्फा रुख का रहेगा और भाव में बदलाव कम ही होगा। महीने के अन्त का भाव पिछले महीने के अन्त के भाव के करीब ही रहेगा।

**अप्रैल**- महीने की शुरुआत तेजी से होगी। पहली तारीख को भाव बढ़ते नजर आएंगे। यहां से भाव अब घटेंगे नहीं। भाव बढ़ते हुए ता. ९ से बढ़ना रुकेंगे। दो तीन दिन रुकने के बाद ता. १२ या १३ को फिर बढ़ जाएंगे। एक-दो दिन तेजी में रहने के बाद ता. १४ को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करके मंगल-शुक्र के साथ चलता हुआ शनि-राहु से प्रतियुति करेगा। इससे इस महीने भाव घटने का नाम नहीं लेगा। भाव का रुख बढ़ने का रहेगा। ता. २७ तक भाव धीमी रफ्तार से बढ़ेंगे। ता. २८ को बुध भी मेष में प्रवेश कर जाएगा। मेष में अब चतुर्ग्रही योग बन जाएगा और २९ को भाव फिर बढ़ेगा। महीने का अन्त तेजी में होगा।

**मई**- पिछला रुख ता. १ तक जारी रहकर ता. ४ को वृष में प्रवेश करके चतुर्ग्रही योग तोड़ देगा। वृष की इसकी अपनी राशि है जिससे तेजी का रुख कायम रहेगा। तेजी ता. १० तक बनी रहेगी। इस दिन अमावस्या हो रही है और चन्द्रमा से चतुर्ग्रही योग बन जाने से भाव फिर बढ़ेगा। प्रतिक्रिया में ता. ११ और ता. १२ को भाव दबेगा। ता. १३ को बुध ता. १४ को सूर्य वृष में प्रवेश करके ता. १५ को एक तेज मन्दी

का झटका लगेगा। गिरता हुआ बाजार ता. १८ को संभलेगा। ता. २३-२४ को तेजी का रुख रहेगा। ता. २३ को मंगल वृष में प्रवेश करके तेजी का रुख बना देगा। महीने का अन्त मजबूती में होगा। तेजी बनी रहेगी।

**जून-** तेजी-मन्दी इस महीने बराबर बनी रहेगी। इससे भाव में विशेष बदलाव नहीं होगा। ता. ६ से ९ के बीच बाजार मन्दी में फंसेगा भाव तेजी से नीचे होगा। ता. ११ को भाव में सुधार होगा। ता. १४ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करके भाव को गिरने से रोकेगा। यहां पर यह बुध और गुरु के साथ संचार करेगा। जिससे भाव संभला रहेगा। बाजार एक भाव के आस-पास मजबूती से जमा रहेगा। ता. २२ को शुक्र कर्क में प्रवेश करके शनि-राहु से केन्द्र योग बनाएगा जिससे ता. २३ को भाव ऊपर की ओर चलेगा। ता. २५.२६ को नीचे का रुख करके बाजार में भाव काफी नीचे जा सकते है। दो ही दिन में भाव अधिक घट सकता है। ता. २६ को बुध वक्री होकर बाजार संभालेगा। महीने का अन्त पिछले महीने के अन्त के भाव के करीब होगा।

**जुलाई-** इस महीने बाजार का भाव कुछ घट सकता है लेकिन अधिकांश ग्रह तेजी में होने से भाव कुछ बढ़ भी सकते है। ता. ४ को मंगल मिथुन में प्रवेश करके गुरु का साथ पकड़ रहा है। बुध वक्री है जिससे यह ता. ५ को भाव दबाएगा। भाव तेजी से नीचे जाएगा लेकिन ता. ६ को बाजार संभल जाएगा। यहां से एक दायरे में चलता हुआ ता. १५ को फिर दब जाएगा। ता. १६ को सूर्य कर्क में प्रवेश करके भाव का गिरना रुक जाएगा। ता. १७ को शुक्र सिंह में प्रवेश करके नेपच्यून से प्रतियोग कायम करेगा इससे ता. १८ से २० तक भाव तेजी के होकर पिछली गिरावट की भरपाई कर देगा और भाव को

पिछले स्त्तर से ऊँचा कर देगा। ता. २१ को बुध मार्गी होकर भाव का बढ़ना रोक देगा। इसके बाद भाव एक स्त्तर पर घूमते हुए महीने का अन्त हो जाएगा। महीना समान सा रह सकता है।

**अगस्त**- ता. ३ या ४ तक बाजार तेजी में रहकर ता. ५ को फिर दब जाएगा। ता. ७ से संभलता हुआ बाजार ता. १४ या १५ को फिर दबेगा। ता. १६ को सूर्य का सिंह प्रवेश करके गिरावट रोक देगा। ता. २४ को घटने के बाद ता. २७ को भाव का गिरना रुकेगा। ता. ३१ को बाजार फिर तेज हो जाएगा। महीने भर भाव लगातार नीचे-ऊपर होता रहेगा। महीने का रुख दुतर्फा रहेगा।

**सितम्बर**- इस महीने ता. ५ तक बाजार तेजी में रहने के बाद ता. ६ को शुक्र का तुला प्रवेश मन्दी देगा। इस राशि में शनि और राहु का साथ होने से मन्दी देगा। फिर भी बाजार में अन्य ग्रहों के योग तेजी-मन्दी बनती रहेगी। ता. १४ को शुक्र का राहु-शनि दोनो के साथ युति एक ही दिन होगी। इस समय मन्दी का बाजार रहेगा। ता. १६ को सूर्य का कन्या प्रवेश गिरावट रोक देगा। ता. २० से ता. २३ तक बाजार दबने का चान्स है। ता. २५ को बुध तुला में प्रवेश के साथ ही मन्दी देगा। ता. २७ को बाजार में कुछ सुधार होगा। महीने का अन्त सुधार के साथ होगा। तुला में शुक्र और बुध के प्रवेश से बाजार दबकर भाव कमजोर हो जाएगा।

**अक्टूबर**- पिछले महीने का बना रुख महीने के शुरु में चलता हुआ बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के ता. ११ तक चलता हुआ ता. १२ को भाव अचानक दबेगा। मन्दी का जोर ता. २० तक बना रहेगा। इसके बाद भाव का संभलना शुरु होकर महीने के अन्त तक बने भाव पर मजबूती में चलता रहेगा।

**नवम्बर**- पिछले महीने का बना भाव बिना किसी विशेष घटा-बढ़ी के चलता हुआ ता. ६ या ७ को भाव कुछ सुधरेगा। एक सप्ताह के बाद ता. १३ के आस-पास अचानक भाव घटेगा। जल्दी ही बाजार फिर सुधरेगा। ता. १६ को एक बार दाम अचानक बढ़ेगा। ता. १९-२० को कुछ रुका रहकर ता. २४ को एक बार फिर सुधरकर ता. २६ को मंगल के कन्या में प्रवेश के बाद दुतर्फा रुख लेना शुरु होगा। एक स्तर के आस-पास यह नीचे-ऊपर होता रहेगा। विशेष घटा-बढ़ी नही होगी।

**दिसम्बर**- ता. १ को बुध वृश्चिक में प्रवेश के बाद अचानक भाव घटाएगा। इसके बाद जल्दी ही भाव सुधर जाएगा। ता. ३ को भाव अचानक बढ़ेगा। इसके बाद ता. ५ को शुक्र मकर में प्रवेश करके भाव का बढ़ना रोक देगा और ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करके ता. १६ को एक बार बाजार में अच्छी गिरावट होगी। ता. २० को बुध धनु में प्रवेश करके भाव का दबना रोक देगा। संभला हुआ बाजार अधिक दिन नहीं चल पाएगा और ता. २९ को भाव में गिरावट फिर होगी। इस महीने भाव मजबूती में रहेगा। बार-बार गिरने के बावजूद पिछले महीने की अपेक्षा इस महीने के अन्त का भाव ऊँचा रहेगा।

जनवरी में भाव मजबूती में रहेगा घटेगा नहीं। फरवरी में तेजी में आ जाएगा। मार्च में दुतर्फा तेजी मन्दी में रहेगा और अप्रैल में फिर तेजी में रहेगा जो मई में भी बनी रहेगी। जून में भाव में विशेष बदलाव की आशा नहीं है। जुलाई में पिछले महीने का भाव संभला रहेगा। अगस्त में रुख दुतर्फा होकर सितम्बर में कमजोर होगा। अप्रैल में तेज होकर नवम्बर में भी तेज रहेगा। दिसम्बर तेजी में बन्द होगा।

# आर्द्रा प्रवेश फल-मानसून एवं वर्षा

श्री संवत् २०७०, शके १९३५ ता. २१ जून सन २०१३ ई. को भगवान भुवन भास्कर घं. २८ मि. ३४ तथैव काशी के स्पष्टार्कोदयात् घं. ५८/२५ पर प्रवेश करेंगे। उस समय तात्कालिक तिथि ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी, शुक्रवार, तात्कालिक नक्षत्र अनुराधा एवं योग साध्य,गर करण तथा वृश्चिक का चन्द्र होगा। उस समय काशी में मृगशीर्ष नक्षत्र का द्वितीय चरण एवं वृष लग्न का २८ वां अंश उदित रहेगा। सूर्य के आर्द्रा प्रवेश की कुण्डली के अनुसार देश में मानसून एवं वर्षा का फल निम्न रहेगा:-

**तिथि फल**- सामान्य मानसून का आगमन वायु-वेग के साथ होगा। आगे बढ़ता हुआ मानसून अचानक रुक जाया करेगा। कभी-कभी आसमान में बादल गायब होते रहेंगे। सभी तरह के अन्न, घी, चांदी, रुई एवं कपड़ा तेज होगा।

**नक्षत्र फल**- समय पर आए मानसून की गति धीमी रहेगी। अधिकांश स्थानों में देर की वर्षा होगी। जनता शासकों से भयभीत होगी।

**योग फल**- अधिकांश स्थानों में पर्याप्त वर्षा होने से जलाशय पानी से भर जाएंगे। विद्युत उत्पादन बढ़ेगा।

**करण फल**- जन साधारण कष्ट से पीड़ित होंगे। अशान्ति व्यापक होगी।

**बेला फल**- अपराधी वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा और लोगों में असुरक्षा की भावना फैलेगी। तस्कर पहले से अधिक सक्रिय होंगे। "प्रत्यूष काले जगतां विपत्ति....." अनेक विपत्तियों से कष्ट होगा।

**लग्न फल**- आर्द्रा प्रवेश के समय मंगल लग्न में स्थित होकर वृश्चिक में स्थित चन्द्र से समसप्तक योग बना रहा है। ता. १९ जून को सूर्य-गुरु युति हो रही है और ता. २३ को ज्येष्ठ पूर्णिमान्त हो रहा है। इन्ही तारीखों के आस-पास मानसून दक्षिण भारत में वायु-वेग के साथ पहुंचेगा। मानसून सामान्य या कुछ अधिक होगा। भारत के पूर्वी प्रदेशों आसाम, नागालैण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम के कुछ भाग में धीमी रफ्तार के मानसून के कारण वर्षा कुछ विलम्ब से शुरु होगी। इन प्रदेशों में वर्षा सामान्य से कुछ कम होगी। उत्तरी अरुणाचल प्रदेश, भूटान, बंगाल की उत्तरी पहाड़ियों के क्षेत्र सामान्य से अधिक वर्षा ग्रहण करेंगे। आर्द्रा प्रवेश के समय बुध-शुक्र का युति की स्थिति में होना इन प्रदेशों के लिए शुभ हो गया है। वायु-वेग के साथ यहां उपद्रवकारी बरसात

होगी। ता. २६ को बुध वक्री होकर मौसम को बिगाड़ देगा। सड़क यातायात एवं संचार के साधन भंग हो जाएंगे जिससे यहां के निवासियं: को कष्ट झेलना होगा। अनेक स्थानों में भूस्खलन भी हो सकता है। उत्तर-पश्चिमी बिहार, उत्तर प्रदेश के तराई के क्षेत्र, पर्वतीय इलाकों में अचानक वर्षा से छोटी-नदियों में बाढ़ से जीवन संकट में होगा। यहां अधिक वर्षा का योग बन रहा है। उत्तर भारत के मैदानी भाग, मध्य नेपाल, उत्तरी उत्तर प्रदेश, पर्वतीय इलाकों में रहने वालों को मानसून का इन्तजार करना होगा। अनेक क्षेत्रों में अल्प वर्षा होगी। इस क्षेत्र के कृषक वर्ग को कठोर परिश्रम करना होगा। अल्प वर्षा के कारण उपज पर भी असर होगा। वर्षा के बादल रह-रहकर आसमान से गायब होते रहेंगे।

पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, उत्तरांचल, काश्मीर और उत्तरी पंजाब में सामान्य से कम वर्षा होगी। वर्षा अचानक और वायु-वेग के साथ होगी। इन इलाकों में कृषि का उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को कठोर परिश्रम करना होगा। दक्षिण-पश्चिम उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, दक्षिण पंजाब, उत्तरी राजस्थान में वायु-वेग के साथ अचानक सामान्य वर्षा होने से कृषि उत्पादन पहले से अधिक होगा। दक्षिण राजस्थान, उत्तरी गुजरात, उत्तरी मध्य प्रदेश में अधिक वर्षा का योग है। कम वर्षा के क्षेत्र में भी अच्छी वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात के अनेक नए स्थानों में हरियाली का जोर बढ़ेगा। कृषि उपज बढ़ेगी। महाराष्ट्र एवं इसके भीतरी भाग, दक्षिण गुजरात, मध्य प्रदेश के बीच के क्षेत्र में वर्षा सामान्य या इससे अधिक होगी।

केरल, कर्नाटक तथा इसका भीतरी, भाग, दक्षिण पूर्वी मध्य प्रदेश, पूर्वी छत्तीसगढ़ में अपने सभीपस्थ स्थानों की अपेक्षा कम वर्षा होगी। फिर भी कृषि योग्य वर्षा हो जाएगी जिससे कृषि उत्पादन का स्तर बना रहेगा।

आन्ध्र प्रदेश, पूर्वी छत्तीसगढ़ के स्थान दक्षिण उत्तर प्रदेश में मानसूनी वर्षा पर्याप्त होगी। इन स्थानों में सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ेगी। समय-समय पर वर्षा होती रहेगी। दक्षिण उड़ीसा, झारखंड, दक्षिण बिहार, दक्षिण बंगाल, दक्षिण-पूर्वी बिहार, दक्षिण बंगलादेश, दक्षिण मिजोरम में अचानक वर्षा का क्रम बनेगा तथा सामान्य से अधिक वर्षा होगी।

संक्षेप में बंगाल अरब सागर से वर्षा ग्रहण करने वाले क्षेत्रों में अधिकांश स्थानों में पर्याप्त वर्षा समय पर होगी। बंगाल की खाड़ी का मानसून बाद में कमजोर हो जाएगा और उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र एवं उत्तर-पश्चिम में मानसून कमजोरी दिखलाएगा। मानसून समय पर दक्षिण में पहुंच जाएगा।

## *कृषि नक्षत्र-हवामान तथा वर्षा सन् २०१३ में*

कुछ वर्षों से मौसम में बदलाव के कारण मानसून का आगमन समय पर नहीं हो रहा है। इससे बाजार की व्यबस्था गड़बड़ा जाती है। देर से मानसून आने से तरह तरह की अफवाह फैलने से सभी वस्तुओं के भाव अनाप-शनाप बढ़ना शुरु हो जाता है। बाद में मानसून आ जाने पर भाव फिर अपनी जगह वापस आ जाने पर व्यापारियों को नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए इस पुस्तक में पूरे वर्षाकाल का मौसम दिया जा रहा है जिससे आप सभी व्यावसायिक कार्यक्रम को सुनिश्चित कर सकें और नुकसान से बचें। व्यवसाय के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है। अपने विचारों को हमसे बताएं।

**रोहिणी प्रवेश फल- ता. २५ मई से ७ जून**-ता. २५ मई को बुध-शुक्र की वृष राशि में युति के समय सूर्य रोहिणी में प्रवेश कर रहा है। सूर्य के वृष में प्रवेश के बाद ही पूर्णिमान्त हो रहा है। इस समय अण्डमान-निकोबार में वर्षा का समय रहता है। अण्डमान में वर्षा का क्रम जारी रहेगा और ता. २९ को शुक्र-गुरु युति के बाद मजबूत होना शुरु हो जाएगा। समूचे उत्तर भारत में भयंकर ताप लहरी का जोर रहेगा। मैदानी इलाकों तथा पहाड़ों पर स्थानीय स्तर पर यत्किंचित वर्षा होगी। दक्षिण भारत में यदा-कदा वर्षा होगी। अनेक स्थानों में भयंकर अग्निकांड से जन-धन की हानि होगी।

**मृगशीर्ष प्रवेश फल- ता. ८ जून से २० जून**-ता. ७ जून को चन्द्रमा की मंगल से युति के बाद ता. ८ को अमावस्या हो रही है। यह आने वाले समय में मानसून की कमजोरी बता रहा है। अलनीनो इस समय सक्रिय हो जाएगा। पूर्वी भारत में मानसून समय से नहीं पहुंचेगा। वर्षा अवरोध की स्थिति बन रही है। यहां पर ता.७ जून से २१ जून के बीच सामान्य से कम वर्षा होने की स्थिति बन रही है। आसाम, अरुणाचल, भूटान, उत्तरी बंगाल की पहाड़ियों में कम वर्षा होगी। इन प्रदेशों में आस-पास के बादल भटककर हल्की वर्षा करेंगे। पूर्वी एवं पश्चिमी बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराचंल, काश्मीर, पंजाब में लोग गर्मी से त्रस्त होंगे। दिल्ली, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान में यदा-कदा वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी महाराष्ट्र में भी गर्मी का जोर रहेगा। केरल-कर्नाटक तथा इसका भीतरी भाग, अधिकांश, मध्य प्रदेश में जल का संकट बनेगा। उड़ीसा-आन्ध्र में भी सूखे की स्थिति रहेगी। इस समयावधि के दौरान उत्तर भारत में पानी का संकट अधिकांश स्थानों में होगा। पेयजल समस्या बनेगा। अनेक स्थानों में लू-बवण्डर का जोर रहेगा। बहुत कम स्थान ही राहत महसूस करेंगे। उत्तर भारत की पहाड़ियों पर भी मौसम गर्म रहेगा। गर्म हवाओं का जोर बना

रहेगा।

**आर्द्रा प्रवेश-२१ जून से ५ जुलाई-** पूर्वी भारत के लोग वर्षा का इन्तजार कर रहे होंगे। आर्द्रा प्रवेश के समय उत्तर भारत में वर्षा ऋतु का प्रारम्भ हो जाता है। यदि इस समय ग्रहों की स्थिति मौसम के अनुकूल न हो तो कम वर्षा के कारण भारत की कृषि अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। इस वर्ष आर्द्रा प्रवेश के समय ग्रह योग अनुकूल नहीं बन रहा है। मानसून को असफल करने वाला अलनीनो इस समय सक्रिय रहेगा और मानसून गायब रहेगा। पहाड़ियों पर बर्फ अधिक पिघलेगी और ग्लेशियर पीछे हटेंगे। ता. २३ की पूर्णिमा के आस-पास पूर्वी भारत में कुछ वर्षा होगी। ता. २२ को मंगल उदय होकर वर्षा होने में बाधा उत्पन्न करेगा। गुजरात-राजस्थान में वायु-वेग का जोर रहेगा। दक्षिण-पश्चिम मानसून एक बार फिर कमजोरी दिखाएगा।

**पुनर्वसु प्रवेश फल-ता. ६ जुलाई से १९ जुलाई-** पूर्वी भारत में तापमान काफी बढ़ा रहेगा और वर्षा की कमी होगी। इस वर्ष वर्षा कम होने से यहां की महत्वपूर्ण फसल चाय पर भी असर होगा। कम और क्वालिटी में कमजोर होने पर बाजार में आवक घटने से चाय की कीमत पर असर होगा। शुक्रदेव की कृपा से यदा-कदा वृष्टि होगी। पूरा मैदानी भाग सामान्य से कम वर्षा ग्रहण करेगा। इन प्रदेशों में बादल रह-रहकर गायब होते रहेंगे। दिल्ली और पंज़ाब में भटके हुए बादलों की कुछ वर्षा से तीव्र तपन से राहत महसूस होगी। ता. ८ की अमावस्या के बाद धीमे-धीमे मौसम ता. १० से पलटा खाएगा और मानसून कुछ गति पकड़कर आगे बढ़ेगा। समस्त उत्तरी भारत की स्थिति वर्षा के मामले में चिन्ताजनक रहेगी। मानसून की वर्षा सामान्य से कम होना बता रही है। पश्चिम भारत में जबर्दस्त सूखा पड़ने का योग बता रहा है। यहां पेयजल का व्यापक संकट हो सकता है। इस अवधि में वायु का जोर रहेगा लेकिन वर्षा का अभाव या कम वर्षा योग है।

**पुष्य प्रवेश फल-२० जुलाई से १ अगस्त-** पूर्वी भारत में वायु-वेग का जोर बना रहेगा। वर्षा रुक-रुककर होगी। पूर्वोत्तर भारत की पहाड़ियों पर अल्प वर्षा होगी। बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब में वायु का जोर रहेगा और खण्ड वृष्टि होगी। पश्चिम भारत में तेज धूप और गर्मी का प्रकोप होगा। इन स्थानों में बादल यदि दिखाई भी दिए तो वह बिना वर्षा किए या कम वर्षा करके गायब होते रहेंगे। महाराष्ट्र और कर्नाटक के तटीय प्रदेशों में वर्षा होगी और उमसभरी तेज धूप होती रहेगी। जुलाई बीतते यदि मौसम और मानसून ऐसा ही व्यवहार दिखलाया तो देश की

अर्थव्यवस्था संकट में चली जाएगी। मंहगाई का जोर बढ़ता चला जाएगा।

**आश्लेषा नक्षत्र फल-२ अगस्त से १६ अगस्त-** वर्षा ऋतु के अब तक का समय निराशा में बीत जाएगा। जिस इलाके या प्रदेश में कामलायक वर्षा हो जाएगी वहां के किसान भाग्यशाली रहेंगे। मौसम का सूखा लोगों के जीवन स्तर पर अपना पूरा प्रभाव डालना शुरु कर देगा। देश के नेता चाहे वह सत्तापक्ष के हों या विपक्ष के एक अरसे से गायब हो चुके रहेंगे। जनता के लिए उनके पास कोई योजना नहीं होगी। देश केवल अफसर शाहों के भरोसे चलेगा और वह मनमाना रवैया अपनाएंगे। पूर्वी भाग में रुक-रुककर छिटपुट वर्षा का योग है। तापमान में गिरावट का संकेत नहीं है। उत्तर प्रदेश-बिहार की कृषि व्यवस्था बिगड़ चुकी रहेगी। पश्चिमोत्तर भारत में वायु-वेग के साथ यदा-कदा वर्षा होगी। पश्चिम भारत, गुजरात में नदियों का जलस्तर काफी कम हो जाएगा। महाराष्ट्र, कर्नाटक के तटीय क्षेत्र में वर्षा होगी।

**मघा नक्षत्र फल-१७ अगस्त से २९ अगस्त-** पूर्वोत्तर राज्यों में वर्षा अवरोध बना रहेगा। वायु-वेग का जोर पहले की अपेक्षा घटेगा। इस क्षेत्र के पर्वतीय अंचलों, दार्जीलिंग और भूटान की पहाड़ियों पर वर्षा का जोर बढ़ेगा। उत्तर-प्रदेश, बिहार में हल्की वर्षा होगी। पंजाब, हरियाणा, जम्मू काश्मीर में थोड़ी वर्षा हो जाएगी। उत्तरांचल, पहाड़ियों पर वायु-वेग के साथ कम वर्षा होगी। पश्चिम भारत में वर्षा अवरोध के साथ सामान्य से कम होगी। महाराष्ट्र में वर्षा पहले की अपेक्षा कम होगी जबकि कर्नाटक-केरल में वर्षा अधिक होगी। दक्षिण-पूर्वी भारत में अचानक वर्षा होगी। ता. २५ अगस्त के बाद मानसून में कमजोरी होना शुरु हो जाएगा और वर्षा का वेग घटेगा।

**पू.फाल्गुनी प्रवेश फल-३० अगस्त से १२ सितम्बर-** इस समय वर्षा का क्रम बदलेगा। पूर्वी भारत में अचानक वर्षा और पहले की अपेक्षा अधिक होगी। भारत के पूर्वोत्तर भाग की पहाड़ियों पर भी सामान्य वर्षा पहले से अधिक होगी। मैदानी भागों में भी वायु-वेग के साथ वर्षा होगी जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराचंल, उत्तरी पंजाब में वर्षा अवरोध के साथ खंड वृष्टि होगी। पश्चिम भारत में राजस्थान, गुजरात में हल्की वर्षा होगी। दक्षिण-पश्चिम भारत में पहले की अपेक्षा कम वर्षा होगी। उत्तर भारत के अधिकांश भागों में रात का तापमान सामान्य से अधिक रहेगा।

**उ.फाल्गुनी प्रवेश फल-ता. १३ अगस्त से २६ सितम्बर तक-** इस समय पूर्वी भारत में मौसम साफ होना शुरु हो जाएगा। तेज धूप से तापमान में वृद्धि होगी और तपन का अहसास होगा। पूर्वी भारत की पहाड़ियों में यदा-कदा बारिश

होगी, अधिकतर समय वर्षा अवरोध होगा। बादल आकर बगैर बरसे निकल जाएंगे। मैदानी भागों में कभी-कदा हल्की बरसात होगी। यहां तापमान में गिरावट होगी। काश्मीर और उत्तरांचल में मौसम अन्यं वर्षों की अपेक्षा गरम रहेगा। पश्चिम भारत में सूखा रहेगा। महाराष्ट्र-सौराष्ट्र में तेज बरसात होगी जिससे तापमान में गिरावट होगी। दक्षिण भारत में केरल-कर्नाटक में मौसम साफ होने लगेगा। पूर्वी भारत के समुद्री क्षेत्र में वायु-वेग के जोर से समुद्र में ऊँची लहरें उठेंगी और तूफान-चक्रवात का जोर बढ़ने से तूफानी वर्षा होगी। इस क्षेत्र के समुद्र तटीय भागों में सामान्य वर्षा होगी।

**हस्त नक्षत्र प्रवेश फल-२७ सितम्बर से ९ अक्टूबर तक-** पूर्वी भारत में मौसम साफ होते हुए भी मौसम में उपद्रव बना रहेगा। तेज हवा के झोकों से उपद्रवी बरसात होगीं। समस्त, पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भारत में वर्षा-वायु के साथ सामान्य बरसात होगी। मैदानी भागों में कहीं साफ मौसम तो कहीं अचानक बरसात होगी। फिर भी वर्षा अवरोध की स्थिति बनी रहेगी। सामान्य या सामान्य से कम ही इस मौसम की बरसात होगी। पश्चिम भारत में कभी-कदा छींटे पड़ते रहेंगे। दक्षिण-पश्चिम भारत में वर्षा कम होती जाएगी। दक्षिण-पूर्वी भारत में वर्षा नगण्य रहेगी। पूर्वी भार के समुद्रतटीय भागों में वर्षा पर्याप्त हो जाएगी।

**चित्रा नक्षत्र प्रवेश फल-१० अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक-** पश्चिम भारत में वायु-वेग जोर बढ़ेगा और तापमान में काफी गिरावट होगी। इन प्रदेशों में रात का तापमान काफी गिरेगा। दक्षिण भारत महाराष्ट्र में एवं दक्षिणी गुजरात में सामान्य वर्षा होगी। कर्नाटक-केरल में भी वर्षा होती रहेगी। दक्षिण पूर्वी भारत, बंगाल में वर्षा सामान्य रुप से होगी। मैदानी भाग में मौसम की अच्छी बरसात होगी। पूर्वी भारत में तीव्र-तपन के बाद वर्षा होगी। पूर्वोत्तर भारत की पहाड़ियों पर तीव्र वायु वेग और मौसम बिगड़ने से भू-स्खलन का भय है। पश्चिमोत्तर भारत में मौसम अधिकतर सूखा रहेगा।

ग्रह योगों को देखते हुए इस वर्ष अलनीनो का प्रभाव बढ़ा होने तथा सक्रिय होने के कारण मानसून काफी कमजोर होने का चान्स है। मानसून की कमजोरी के कारण जिन स्थानों में पर्याप्त वर्षा हो जाएगी वहां खेती अच्छी हो जाएगी लेकिन कम वर्षा से कृषि पर निश्चित असर होगा। इस स्थिति में सिंचाई के सभी साधनों का उपयोग करना होगा। मानसून की कमजोरी समझ में आने पर कृषक वर्ग को शुरु में ही सतर्क हो जाना चाहिए।

## वायदा सौदे के गुर

प्रसिद्ध कहावत है कि व्यापार में लक्ष्मी बसती है, यह सही है। व्यापार से जितनी लक्ष्मी प्राप्त हो सकती है उतनी अन्य किसी साधन से नहीं। मनुष्य की सूझ-बूझ से व्यापार में सट्टे का समावेश हुआ और यह इतना सरल बन गया कि सट्टे के अनगिनत व्यापारी कम पूंजी में ही करोड़पती बन गए।

भारत में इस समय राष्ट्रीय स्तर पर तीन कमोडिटी मार्केट खुल गए हैं जिसमें चालीस से अधिक कमोडिटी का तीन महीने आगे तक का सौदा होता है। सभी कमोडिटी मार्केट की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और इसीलिए इनकी शाखाएं छोटी से छोटी जगह में भी खुलती जा रही हैं। उदाहरण के लिए पंजाब में फाजिल्का अबोहर, हरियाणा में फतेहाबाद, सिरसा, उत्तर प्रदेश में बांदा, श्यामली, राजस्थान में चुरु, टोक, नेवाई, मध्य प्रदेश के पाली, उत्तरांचल में हलद्वानी, रुद्रपुर, गुजरात में दाहोद, महाराष्ट्र में सांगली, कोटा जैसी छोटी जगहों पर व्यापार के लिए शाखाएं खुल गई हैं। इन बाजारों में कृषि के सभी प्रमुख जिन्स जैसो-ग्वार बीज, गेहूं, चना, सरसों, एरण्ड, चीनी, हल्दी आदि, तेलबाने में सोयाबीन, सरसों, एरण्ड आदि, धातुओं में सोना, चांदी, तांबा आदि कुल मिलाकर ४० से अधिक वस्तुओं में कारोबार होता है। अतः आप अपनी पसन्द, रुचि, योग्यता, वंश, परम्परा, स्थान, साधन, परिस्थिति सभी को ध्यान में रखते हुए यहां कम पूंजी में व्यापार कर सकते हैं और लाभ पा सकते हैं।

कुछ वस्तुओं का भाव निर्धारण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण भी होता है। उदाहरण के लिए यदि अमेरिका में सोयाबीन की फसल खराब हो जाए तो इसका असर सभी जगह होगा। मलेशिया में यदि पॉम ऑयल का उत्पादन अच्छा हो तो इसका भाव नीचे जाने की ओर रहेगा।

सोने-चाँदी का भाव पूरे विश्व के उतार-चढ़ाव से सम्बन्धित है। इन सभी बातों की जानकारी आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सट्टे का व्यापार जहां लाभकारी रहता है वहीं यह नुकसान भी अधिक करता है। इसलिए जो भी लोग इसमें लगे हुए हैं इनको बहुत सावधानी के साथ व्यापार करना चाहिए तथा सट्टे के नियमों से परिचित होना चाहिए। इसीलिए इस लेख में हम आपको सट्टे के विषय में कुछ बता रहे हैं। समय-समय पर आगे भी आपको बताया जाएगा या यदि आप सट्टे सम्बन्धी कोई जानकारी अपने लाभ के लिए पाना चाहते हों तो हमसे पूछ सकते हैं। **व्यापार में लाभ हो यह जरूरी नहीं है लेकिन हानि की सम्भावनाओं में व्यापार न करें तो लाभ होगा ही।** यह सभी बातें ज्योतिष से सम्बन्धित हैं जिसका संक्षिप्त में आगे विवेचन किया जा रहा है।

व्यापार प्रारम्भ करने से पूर्व अपना समय जान लेना चाहिए कि मेरा लाभ का समय है या नहीं। यदि लाभ का समय है तभी व्यापार करना चाहिए। आपको वर्ष के पूर्व में ही किसी अच्छे ज्योतिषी से अगले वर्ष का फल जान लेना जरूरी है। कौन सा माह नेष्ट है और कौन सा अच्छा। जब यह निश्चित हो जाए कि कौन सा महीना हमारे लिए ठीक है और कौन सा नहीं तभी योजना बनाकर अच्छे महीनों में तेजी मन्दी की लाइनों का मनन करके व्यापार करना चाहिए जिससे लाभ हो सके। सट्टा करने के पूर्व दिल कड़ा होना चाहिए, क्योंकि सट्टे में हृदय हमेशा बेचैन रहता है, दूसरे कार्य के योग्य नहीं रह जाता। इस कारण हृदय के कमजोर लोग बाजार में थोड़ी उथल-पुथल से ही घबराकर जरूरत से ज्यादा नुकसान दे देते हैं, अतः सट्टे में हृदय मजबूत रहना चाहिए जिससे घबराहट अनुभव न हो।

ग्रहों के विभिन्न राशियों में भ्रमण, तिथि, नक्षत्र, योग इस सभी की जानकारी पंचांग में दी जाती है। ज्योतिष शास्त्र को छठा वेद कहा

जाता है। ज्योतिष ही केवल छहों वेद में प्रत्यक्ष है "प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ" अर्थात ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष है और इसके साक्षी सूर्य तथा चन्द्रमा है। ग्रह के अनुसार ही ग्रहण गणना कर उसका समय पंचांग में पहले से लिख दिया जाता है। ग्रहण के आगामी फसल की पैदावार आदि पर भी लिखा जाता है। यही ऐसा शास्त्र है जिससे यह पता लगता है कि वर्षा कहां पर और कितनी होगी। सूखा या अकाल की स्थिति का भी ज्ञान होता है। कौन सी फसल अच्छी होगी या खराब इसका भी पता लगता है। ग्रहों के आपसी सम्बन्ध से देश में शान्ति अथवा अशान्ति की स्थिति और विश्व में विभिन्न देशों के बीच सम्बन्ध, तनाव, युद्ध आदि का पता लगता है। वस्तुओं की तेजी-मन्दी का ज्ञान भी इससे होता है लेकिन यह तभी सम्भव होता है जब इस शास्त्र के अंग-प्रत्यंग सभी का पूर्ण ज्ञान हो। आधा-अधूरा ज्ञान कभी-कदा किसी की भविष्यवाणी तो सही करा सकता है लेकिन अधिकांश में असफलता ही हाथ लगेगी।

बहुत से लोग यह कह देते हैं कि ज्योतिषशास्त्र व्यर्थ है इसका कारण यह लोग ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों से मिले बिना ही ऐसा कहते हैं। अक्सर दूसरे लोगों से सुनकर यह अपना विचार बना लेते हैं, कि ज्योतिषशास्त्र व्यर्थ है। इन लोगों को स्वयं अनुभव करना चाहिए और विद्वानों से राय लेनी चाहिए कि इस शास्त्र का फलित कितना सत्य होता हैं। जिस शास्त्र से वर्षा, अकाल, प्राकृतिक उपद्रव आदि के विषय में पहले से ही जान लिया जाता है उसको अनुभवी विद्वान ही इनको बताकर वास्तविकता की ओर ले जाएंगे। हमारी जंत्री-पंचांग में पिछले वर्षों में बहुत कुछ ऐसा लिखा गया जो समय की कसौटी पर खरा उतरा। ११ सितम्बर २००१ को अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हुए हमले और उसके बाद विश्व व्यापी मन्दी को याद कर आज भी अमेरिकी कांप

उठते हैं। इसकी भविष्यवाणी जंत्री-पंचांग में की गई थी। सन् २००४ की चुनाव सम्बन्धी भविष्यवाणी भारत की केवल इसी जंत्री में दी गई थी। मानसून एवं वर्षा के बारे में भविष्यवाणी इस जंत्री में अभी तक हमेशा सही होती आई है। यदि एक-एक को गिनाया जाए तो लेख बहुत लम्बा हो जाएगा। इसके पाठक इस बात को अच्छी तरह अनुभव कर चुके हैं और इसीलिए इसकी लोकप्रियता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। आप सभी लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए अगले वर्ष से व्यापार सम्बन्धी अधिक से अधिक विषयों का इस पुस्तक में समावेश होगा।

ज्योतिषशास्त्र से निकाली गई तेजी-मन्दी से व्यापारी वर्ग समय पर स्थिति को देखकर लाभ प्राप्त करते हैं। यदि ग्रह स्थिति देखने में फलितकर्ता कोई गलती कर देता है तभी फल में गलती होगी अन्यथा नहीं। हमारे देश में बहुत से पंचांग चलन में हैं और इनकी ग्रह स्थिति में बहुत अन्तर पाया जाता है। कभी-कभी व्रत-पर्व भी लोगों के बीच विवाद का कारण बन जाता है। इसमें कभी पंचांग की गड़बड़ी, कभी पंचांगकार की त्रुटि तो कभी छपाई की चूक हो जाती है। व्रत-पर्व की महत्ता पर लोग ध्यान नहीं देते हैं किन्तु व्यापार के लिए यदि पंचांग में गड़बड़ी हुई और तेजी-मन्दी को इससे निकाला गया तो पूरा व्यापार चौपट हो जाएगा। किन्ही पंचांग में ग्रह परिवर्तन की स्थिति में 8-10 दिन का अन्तर रहता है। इतने अन्तर से फलित में तो अन्तर आएगा ही और व्यापार में लाभ के बदले हानि होगी तथा ज्योतिषशास्त्र में श्रद्धा कम होगी अत: तेजी मन्दी के लिए पंचांग का शुद्ध होना आवश्यक है और साथ ही दैनिक स्पष्ट ग्रह, राशि भोग, ग्रहों का आपस में दृष्टि सम्बन्ध आदि तेजी-मन्दी जानने के लिए सभी उपयोगी विषय है। शुद्ध गणित से जो भी फलित बनाया जाएगा उससे बाजार की तेजी-मन्दी

ठीक पता लगेगी और ज्योतिषशास्त्र की महत्ता भी बढ़ेगी। इसलिए इस चिन्तामणि जंत्री-पंचांग में ग्रहों के दैनिक भोगांश के साथ राशि भोग काल, नवांश, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी तथा उनके चुने हुए अंशात्मक ग्रहयोग दिए जाते हैं। स्पष्ट राहु के साथ दिए हुए ग्रह योग अन्य किसी भी पंचांग में नहीं है।

आगे आपको कमोडिटी एवं सट्टा बाजार में किस तरह से सौदा करना चाहिए इसके बारे में कुछ अनुभूत नियम बताए जा रहे हैं जो सौदा करने के लिए आवश्यक हैं, अस्तु:-

एक निश्चित नियम के अनुसार सौदा करिए। सट्टे के हर सौदे में जैसा कि स्वाभाविक है आदमी भावना और उत्तेजना में आ जाता है। कई बार आपके भावनात्मक विचार बाजार से विपरीत करने को कहता है लेकिन ऐसा करने से आपका भला नहीं होगा। **यदि आप किसी सौदे में निश्चित नहीं है तो सौदे को न करना ही ठीक होगा।** अनावश्यक सूचनाओं और आंकड़े पर ध्यान नहीं दीजिए।

**यदि आप चालीस प्रतिशत सही हैं तब भी अच्छा लाभ पा सकते हैं।** सट्टे में हमेशा गलती की सम्भावना बनी रहती है। सही तरीके से सट्टा करने से आप ६० प्रतिशत गलतियां करके भी अच्छा लाभ पा सकते हैं।

साधारणतया अधिकतर सट्टे के सौदे में लोग लाभ कम लेते हैं और घाटा बढ़ा लेते हैं। कोई भी आदमी अपने को गलत नहीं साबित करना चाहता अतः गलत सौदा हो जाने पर अधिकतर यही सोंचते हैं कि बाजार घूमेगा और सौदा ठीक हो जाएगा। थोड़ा और समय बीतने पर जब घाटा अधिक हो जाता है तो सोचते हैं कि बाजार घूमने पर वह कम से कम अपना घाटा काटकर मुनाफा पाने की आशा छोड़ देंगे। दूसरी

ओर सौदे में मुनाफा होने पर वह थोड़े मुनाफे से ही संतुष्ट होकर सौदा काट लेते हैं। **सही होने पर मुनाफा जल्दी काटना ही गलत है। गलत होने पर जल्दी से घाटा काटना ठीक है।** कम घाटे को काटकर अलग हो जाने का मतलब यह नहीं कि आप गलत हैं। इसका मतलब है कि आप का बाजार में सौदा करने का समय गलत है और बाजार से अलग होकर अब आप सही समय आने का इन्तजार करिए। लेकिन दुबारा फिर जल्दी ही प्रवेश नहीं करिए। यदि आप मुनाफा पा रहे हैं तो सौदे को तब तक नहीं छोड़िए जब तक बाजार पलट न जाए। ऐसी स्थिति में आप ज्यादा गलत होते हुए भी मुनाफा कमाते रहेंगे। यदि आप गलत हैं तो बाजार खुद ही आपको बता देगा और ऐसी स्थिति में कुछ कहना व्यर्थ है।

**यह ध्यान रखिए सौदे में नुकसान देना सट्टे का हिस्सा है।** यदि मानसिक और आर्थिक रूप से आप नुकसान नहीं दे सकते तो आपको सौदा नहीं करना चाहिए। यह भी ध्यान रखिए ऐसे सौदे अतिरिक्त रुपए से किए जाते हैं, जिसका हमारे व्यवसाय या जीवन के अन्य खर्च से लेना-देना नहीं है।

नए लोगों को कई बाजार में एक साथ काम नहीं करना चाहिए। आधारभूत ज्ञान, तकनीकी तथा सूचनाएं किसी भी बाजार में काम करने के लिए आवश्यक है और इसको पाने के लिए आपके पास साधन तथा समय जरूरी है।

किसी भी ऐसे बाजार में या सौदे में नहीं रहिए जिसमें काम-काज बहुत कम होता हो।

यह बहुत आवश्यक है कि बाजार के रुख का आपको पता रहे। तेजी या मन्दी के हर रुख की जानकारी जरूरी है। जब कोई भी रुख

बहुत मजबूत रहता है, उस समय इनके विरुद्ध सौदा करना बेवकूफी है। इससे अच्छा यह है कि आप धैर्य से रूख की समाप्ति का इन्तजार करें और सीखें कि रुख कब समाप्त होने को रहता है। रुख समाप्त होने की अवस्था की जानकारी होते ही यदि आप सौदा किए हैं तो निकल जाने से आप 'बाजार में लम्बे समय तक बने रहेंगे।

यदि आपने सट्टे में अपने खरीदे या बेचे सौदे की कुल राशि का दस प्रतिशत से अधिक नुकसान दे दिया है तो बाजार से निकल जाना अच्छा है और थोड़े समय बाद ही बाजार में वापस आइए। यदि आप सही समय पर बाजार में फिर प्रवेश नहीं ले सके तो इन्तजार करिए। उदाहरण के लिए जब तेजी का रुख बनता है तो पहले दौर में अधिकांश लोग भाग नहीं ले पाते हैं। यह बाजार में प्रतिक्रिया आने पर जब बाजार कुछ नीचे आता है तब खरीदना शुरु करते हैं। इनके आने पर बाजार बहुत तेजी से ऊपर जाता है, इसी समय आप फिर से भाग लीजिए। मन्दी के समय में भी यही नियम काम आता है।

कमोडिटी यह नहीं जानती कि आपने उसको खरीदा है। आपको अपने सौदे में तटस्थ रहना है। अतः यदि आपने कोई सौदा किया है तो घाटा होने के साथ उसमें से तुरन्त निकलिए। गलती स्वीकारने पर बाजार आपको गलत नहीं कहेगा, बल्कि स्वयं आप अपने को गलत कहेंगे। ऐसी स्थिति को आने का मौका नहीं दीजिए।

प्रत्येक दिन नयी तैयारी करके बाजार में जाइए। यह भूलकर कि कुछ अन्य लोग पहले जाकर आपसे अधिक मुनाफा वसूल लिए हैं। बाजार में आपके घुसने के बाद आप दूसरों की स्थिति में अपने को पाएंगे। **लाभ सभी को बराबर मिलता है उसी तरह नुकसान भी बराबर का होता है। आपको अपनी स्थिति का विचार हमेशा होना जरूरी है। व्यापारिक**

## सफलता के सूत्र

वायदा बाजार या हाजिर बाजार चाहे जिसमें भी सौदा किया जाए उसके कुछ नियम होते हैं। बिना इसकी जानकारी के सौदा करने पर घाटा उठाना पड़ता है या लाभ बहुत कम होता है। हिन्दी में लिखी जा रही अधिकांश तेजी-मन्दी की पुस्तकों में जोखिम का विचार नहीं किया जाता है। उनका आधुनिक समय में कोई वैज्ञानिक आधार भी नहीं है। इसीलिए हम अपनी इस पुस्तक में तेजी-मन्दी के साथ-साथ कुछ वैज्ञानिक सिद्धान्त भी दे रहे हैं जिनको जानकर आप स्वयं भी तेजी-मन्दी निकाल सके। वायदा सौदे के गुर के साथ इस वर्ष इस अध्याय में बाजार में सौदा करने पर लाभ लेने और सफलता के सूत्र को बताया जा रहा है। ध्यान रखिए कि आज के बाजार में सभी सौदे कम्प्यूटर में होते हैं और यह पुराने अर्थहीन हो चुके नियम और सिद्धान्तों से काम नहीं करते। बाजार का कोई शाश्वत नियम नहीं है कि वह हमेशा एक ही नियम पर चले। समय के साथ सिद्धान्त भी बदलते हैं।

सबसे पहले सौदे में जोखिम की व्यवस्था करना मुख्य बात है। उतना ही जोखिम लीजिए जितना आप आसानी से बर्दास्त कर सकते हैं।

किसी भी शेयर या वस्तु के मोह या लगाव में न पड़ें। सौदे में सफलता के लिए उस वस्तु या शेयर के बारे में जानिए। उसके बाद आगे आसान हो जाएगा।

आपका विश्लेषण गलत हो सकता है, उसको सोचते हुए सौदा करिए। अन्य लोग आपसे कहीं अधिक और बेहतर जानते होंगे। इसको ध्यान में रखकर Over Trading न करें। हमेशा धैर्य रखें।

सौदा करने के पहले यह जरुरी है कि यह भी सोच लें कि किस कारण से आप गलत हो सकते हैं इसको नोट कर लें या हमेशा ध्यान रखें। जब भी आप देखें कि आप गलत हो रहे हैं तो तुरन्त नियम का पालन करें।

मजबूती के बाजार में खरीदें और कमजोर बाजार में बेचें। कुछ लोग हमेशा उल्टा काम करते हैं और नुकसान उठाते हैं। कोई भी व्यक्ति बाजार के स्तर से अधिक लाभ नहीं प्राप्त कर सकता। जब भी आप अचानक अधिक लाभ प्राप्त कर लें, इसको वसूल करके हट जांए अन्यथा आप गलत हो जाएंगे।

घाटे की स्थिति को नहीं बढ़ाइए। जब भी आप अनुभव करें कि आप लाभ के ताले की चाभी पा गए हैं, वह ताला ही बदल देंगे।

बाजार में भाव अपने अनुकूल होने की क़ल्पना न करें या किसी भी भाव की कल्पना न करें। घाटे को जितना जल्दी काट देंगे आप लाभ का उतना ही अधिक चान्स पाएंगे।

जिस स्टाक को आप पकड़कर बैठे हुए हैं उसकी अन्य स्टाक से तुलना करके देखिए जो बढ़ते जा रहे हैं। इसको आप बदलकर छोटे भाग्य को बड़े में बदल सकते हैं। सामान्यतया स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह सौदा करती हैं। वह अच्छी तरह बाजार की दिशा जानती हैं और वह क्या कर रही हैं यह भी जानती हैं।

सामान्य ज्ञान के साथ यदि धैर्य भी है तो लम्बे समय में अच्छी सफलता मिलती है। यदि आप अपने को बहुत अनुभवी और विशेषज्ञ समझने लगे हैं तो सौदा कुछ समय के लिए बन्द कर दीजिए।

इस व्यवसाय की सीमा आकाश तक है और इसमें आपका व्यक्तित्व ही गरिमा है। शुरुआत में ही यदि आप पहले सौदे में ही लाभ पा जाते हैं तो आप उत्साह से भरेंगे और धैर्य के साथ अगले सौदे की शुरुआत करेंगे। अत: इसको व्यवसाय बनाने के पहले धैर्य रखना सीखिए।

बाजार में बहुत अधिक लीन न हो जाएं और न ही बाजार से दूर हो जाएं। समय के साथ-साथ बाजार से समन्वय और तारतम्य बैठाइए।

यदि आप Over Trading कर रहे हों तो क्या आपको इसका ध्यान है कि आप सौदे की सीमा पार कर चुके हैं

स्टाक चुनने के लिए कुछ समय अतिरिक्त खर्च करें। आपको खोने की स्थिति में नहीं रहना है। आपका उद्देश्य लाभ पाना है और इसको लम्बे समय तक बनाए रखना है। सौदे को करने के पहले अपने को निवेशक या ट्रेडर नही सोचिए।

कभी भी अपनी व्यावसायिक पूंजी के दस प्रतिशत भाग से अधिक को जोखिम में नहीं डालिए।

हमेशा Stop Loss Order का प्रयोग करें ।

लाभ की स्थिति बन जाने के बाद इसको घाटे में न बदल जाने दें।

ऐसे किसी भी सौदे में प्रवेश न करें जिसके बारे में आप स्वयं निश्चित नहीं हैं। बाजार की दिशा के विरुद्ध न चलें।

जब भी आप शंका में हों बाजार से दूर रहें और सौदा करने से बचें।

क्रियाशील बाजार में ही सौदा करें। यदि आप कई बाजारों में काम कर रहे हों तो तो सभी बाजारों में जोखिम समान रुप से बांटें।

बिना समुचित कारण के व्यवसाय बन्द न करें।

लाभ को व्यवसाय से अलग करके दूसरे खाते में रखें। अधिकतम लाभ वसूलने को कभी न सोचें। लाभ चमड़ी की खाल की तरह नहीं वसूला जा सकता। समय के पहले सौदे से निकल जाना चाहिए। घाटे का एवरेज नहीं करना चाहिए।

बाजार से इस कारण से अलग न हो जाएं कि आपका धैर्य समाप्त हो गया है। इस कारण से बाजार में प्रवेश भी न करें कि आप के पास पर्याप्त धैर्य और इन्तजार करने की खूबी है।

कम लाभ लेने और अधिक घाटा की प्रवृत्ति से बचें। सौदा करने के बाद Stop Loss को कभी न हटाएं। जल्दी-जल्दी बाजार में प्रवेश या बाहर होने की आदत से बचें। एक समय में एक दिशा में लाभ लेने की सोचें।

बाजार में किसी वस्तु का भाव कम हो गया है या अधिक हो गया है इस आधार पर खरीद-बेंच से बचें।

प्रतिरोध स्तर (Resistence Level) छूने के साथ सौदा काट काट दें या सपोर्ट स्तर के पास ही सौदे से निकल जाएं।

जब तक कोई उचित कारण न हो अपनी स्थिति न बदलें। लम्बे समय की सफलता या असफलता पाने के बाद ट्रेडिन्ग करने से बचें।

ऊपर-नीचे के स्तर को आंकने से बचें।

किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

सौदे में घाटा होने के साथ ट्रेडिंग कम कर दें, इसको बढ़ाने से बचें।

इन सभी बातों का विचारकर सौदा करने में आप हमेशा लाभ में रहेंगे।

## व्यापारिक ज्योतिष का उपयोगी सिद्धान्त

सायन-निरयण के झगड़े में पड़कर हमारे यहाँ बाजार के उतार-चढ़ाव के विषय पर कुछ भी अनुसन्धान नहीं किया गया। केवल नौ ग्रह के आधार पर बाजार की तेजी मन्दी बताई जाती रही जो ऐन टाइम पर धोखा दे जाती है। पुराने आर्थिक ज्योतिष में स्टाक मार्केट जैसे विषय तो हैं ही नहीं। आधुनिक खोजे गए तीन ग्रह हर्शल-नेपच्यून-प्लूटो का जिक्र नहीं होता। इनके पड़ने वाले प्रभाव का भी कहीं कोई जिक्र नहीं होता। इसीलिए इस संक्षिप्त लेख में आधुनिक व्यापारिक ज्योतिष से आपका परिचय कराया जा रहा है। इसके आधार पर आप भी बुलियन मार्केट, शेयर बाजार, कमोडिटी बाजार के रुख का आंकलन कर सकते है।

पंचांग को देखने और समझने वाले बारह राशियों, बारह ग्रह, सत्ताइस नक्षत्र से परिचित होते हैं। इन राशियों का स्वभाव, उसके स्वामी का स्वभाव तथा वह किस वस्तु या बाजार पर कैसा प्रभाव डालते हैं, इस लेख में बताया जा रहा है। विभिन्न राशियों में गुजरते हुए उनके फल को भी बताया जा रहा है।

राशि चक्र की प्रथम राशि मेष (Aries) है। यह राशि शक्ति से भरपूर और बाजार पर पूरा प्रभाव डालने वाली है। इसका स्वामी मंगल है। मंगल हमेशा काम करने वाला उग्र और पहल करने वाला ग्रह है। मंगल का मेष में अकेले रहना ही अच्छा होता है। यदि अन्य ग्रह या कई ग्रह का साथ हो जाए तो बुलियन, शेयर, कमोडिटी सभी बाजारों में तेजी की अच्छी चाल निकलती है। दूसरी राशियों में स्थित ग्रहों के योग से बाजार तेजी की ऊँचाई पकड़ने के बाद अचानक नीचे भी आता है। जब किसी अच्छे शेयर, सोना-चांदी-कृषि वस्तुओं

में तेजी आती है तो अन्य शेयर, धातुएं, वस्तु भी तेजी में आ जाती है। अन्य ग्रहों के सहयोग से बाजार में तेजी का गुब्बारा बनता है और अन्त में फूटता है जिससे बाजार में संकट आ जाता है। मेष राशि में संचरण के दौरान बाजार में भाव बहुत तेजी से लेकिन बीच-बीच में नीचे आकर ऊपर का स्तर पकड़ते हैं। कम समय में ही बाजार एक नई ऊँचाई देख लेता है।

मेष राशि और मंगल लोहा और इस्पात, रेलवे, मोटर या वाहन उद्योग, उद्योगों की उन्नति, उत्पादन, नए उद्योगों की स्थापना, जमकर खरीदारी, तथा नए लोगों या समूह का बाजार में प्रवेश होता है। यह सब बहुत तेजी से होता है जिससे लगातार जारी नहीं रहता। बाजार की तेजी-मन्दी के लिए अन्य ग्रहों से योग को देखा जा सकता है। यदि कोई ग्रह मेष में प्रवेश करने के बाद तेजी देता देखा जाए तो बाजार में तुरन्त प्रवेश लेना चाहिए और तेजी का मुनाफा लेकर हट जांए। बाजार के पलटने पर पहले उसके पूरी तरह नीचे आने पर ही खरीदारी करना चाहिए।

सूर्य की यह उच्च राशि और शनि की नीच राशि है। इन दोनों का फल बताने के लिए अन्य ग्रहों के साथ पहले योग देखने के बाद ही निर्णय लेना चाहिए। मेष में जब ग्रह संचार करते हैं बाजार में हलचल बढ़ जाती है। वाल्यूम बढ़ जाता है।

वृष राशि की विशेषता सुरक्षा के साथ सौदा करना होता है। इसके स्वभाव में हठीपन है और अक्सर इसी स्वभाव के कारण लोगों को घाटा उठाना पड़ता है। यह राशि न तो उग्र है और न ही विरोधी है। बाजार का रुख इसमें अपने किस्म का होता है। इसका स्वामी शुक्र है और इसका सम्बन्ध रुपये, सम्पत्ति से प्रमुख रुप से है। आर्थिक उन्नति और संकट से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। उदाहरण के लिए

जून-जुलाई में मंगल-शुक्र के वृष संचार के समय ग्रीस में संकट सामने आया और विश्व के सभी बाजार में मन्दी का जोर बना। वृष राशि का स्वामी शुक्र सिल्क, कपड़ा उद्योग, चीनी, रुई-कपास, रुपया, देश की मुद्रा, गेहूँ, चांदी, तांबा के भाव पर अपना पूरा प्रभाव डालती है।

चन्द्रमा की यह उच्च राशि है। ग्रहों के राशि संचार के समय भाव में तेजी धीमे-धीमे होती है। यदि भाव टूटते हैं तो वह सपोर्ट भाव से भी नीचे चले जाते हैं। सावधानी हटी और दुर्घटना घटी, इस राशि में जब ग्रह संचार करते हैं तब निश्चित घटित होता है। बैन्क, वित्तीय संस्थाए, निवेश प्रबन्धन इस राशि के अन्तर्गत आते हैं।

राशि चक्र की तीसरी राशि मिथुन है, इसका स्वामी बुध है। अच्छी तरह से जांचकर ही इस राशि में सौदा होता है। योजना बनाकर ही बाजार में लोग प्रवेश करते हैं। बुध का गेहूं, सभी अनाज, सिल्वर और क्विक सिल्वर के भाव पर प्रभाव पड़ता है। सरकारी बांड, प्रकाशन, समाचार, अफवाह, अस्थिरता, अचानक खरीदारी, भाव बहुत तेजी से ऊपर-नीचे होता है। इस राशि में चलता हुआ ग्रह यदि खराब योग बनाता है तो झूठी अफवाह से बाजार अचानक गिरता है। इस राशि में राहु के रहने पर बाजार अच्छी तेजी में रहता है। अन्य ग्रहों के राशि संचार से पूंजी बाजार में टर्न ओवर बढ़ जाता है और कम समय में ही भाव काफी ऊपर-नीचे होता है। सभी तरह के इन्जन निर्माण में प्रगति, संचार के साधन, टेली-कम्युनिकेशन, टेलीफोन उद्योग, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, मीडिया, ट्रान्सपोर्ट के शेयरों के भाव पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

कर्क राशि-राशि चक्र की चौथी राशि कर्क का स्वामी चन्द्रमा है। इस राशि का स्वभाव दूसरे पर निर्भर रहकर भी अपने आस्तित्व

को बचाए रखना है। सिस्टर कम्पनियों के शेयर या पूरक कम्पनियों के शेयर पर चन्द्रमा अपना प्रभाव रखता है। हालांकि इस राशि के शेयरों या वस्तुओं का भाव बहुत जल्दी गिर जाता है लेकिन उसी तरह जल्दी ही रिकवरी हो जाती है। जब एक से अधिक ग्रहों का संचार इसमें होता है तो बाजार के खिलाड़ी भावना में आकर बाजार अपने अनुसार चलाते हैं और सभी नैतिकता को त्याग देते हैं तथा भाव अनाप-शनाप बढ़ता है। शनि के कर्क राशि में संचार के साथ ही बुलियन बाजार में सोने-चांदी में तथा साथ ही विश्व के शेयर बाजारों में लम्बी तेजी का दौर चला। इस समय बिकवाली में रुचि नहीं रहती।

भवन निर्माण और पुनर्निर्माण पर इसका अत्यधिक प्रभाव है। इस राशि में ग्रहों के संचार के दौरान यह उद्योग पनपता-फूलता है लेकिन राहु के संचार के समय यही उद्योग पूरी अर्थव्यवस्था नाश भी कर सकता है। सन् २००८ में जारी हुई मन्दी कर्क के राहु का ही प्रभाव था कि पूरी अर्थव्यवस्था ध्वस्त होकर विश्वव्यापी मन्दी चालू हुई।

चन्द्रमा किसी विशेष वस्तु पर अपना प्रभाव न डालकर सभी पर अपना प्रभाव डालता है। राशि संचार के दौरान यह जिस राशि में रहता है, उस राशि की वस्तु-धातु-शेयर पर साथ ही सम्मुख राशि की सभी वस्तुओं पर अपना पूरा प्रभाव डालता है। चन्द्रमा के साथ बने योग अपने स्वभाव के अनुसार अपना फल न देकर बाजार की दिशा बदलने वाले हो जाते हैं। इस समय ऊँचे या नीचे का रिकार्ड भाव बन सकता है। चन्द्रमा की कक्षा भाव के उतार-चढ़ाव में पूरी भूमिका निभाती है। यह स्थिति चन्द्रमा के मन्दोच्च (Perigee) और शीघ्रोच्च (Apogee) के समय परखी जा सकती है।

सिंह राशि साहसी और चुम्बकीय गुणों वाली है। घमण्डी या

अत्यधिक स्वाभिमानी होने के कारण यह अक्सर उल्टा फल भी देती है। तेजी का बाजार लम्बी मन्दी के दौर में चला जाता है। इसमें ग्रहों के संचार के समय अधिकतर नकारात्मक फल देते देखा गया है। यही नकारात्मक गुण के कारण लोग हमेशा सशंकित रहते हैं और सौदा काटकर दूर हो जाते हैं। इस राशि का स्वामी सूर्य है। ग्रहों के इस राशि में संचार के समय कोई एक सेक्टर या एक शेयर पर सभी का ध्यान केन्द्रित हो जाता है और कामकाज की मात्रा उसमें बहुत अधिक बढ़ जाती है। सोना, सरकारी प्रतिभूतियां और बांड तथा बाजार की दिशा पर सूर्य का अधिकार रहता है। सूर्य बाजार को सीधे प्रभावित न करके अन्य ग्रहों से योग बनाकर बाजार को दिशा देता है। सूर्य जिस राशि में रहता है, उसकी वस्तुओं, सरकारी प्रतिभूतियों (Sewrities) के भाव को घटाता-बढ़ाता है। खराब योग से भाव काफी नीचे दबते हैं। इस राशि में ग्रह के संचरण के समय बाजार में किसी नए प्रभावशाली व्यक्तित्व को उभड़ते देखा गया है। साथ ही बहुत अधिक विश्वास के कारण उसका पतन या अन्त भी देखा गया है। शेयर बाजार या अन्य सभी बाजार के प्रगति के लिए यह राशि रहस्यमय और प्रभावशाली है। बच्चों के खिलौने, खेलकूद का सामान बनानेवाली कम्पनियां, जुए या सट्टेबाजी के केन्द्र, मनोरंजन के क्षेत्र में लगी कम्पनियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

कन्या राशि विस्तार की राशि है। कम्पनियों का विस्तार (Emparstion) कन्या में ग्रहों के संचार के समय होते देखा जाता है। सभी तरह की सावधानी, गणना करने के बाद ही यह बाजार में प्रवेश करने को कहती है। अक्सर यह निराशा देती है और इसका कारण दिमागी चूक रहती है। भविष्य के प्रति शंका बनी रहती है। दूसरों की सलाह से इस समय किया गया काम नुकसान देता है। जब

कई ग्रह इस राशि में होते हैं, तब भाव में अचानक नीचे गिरने का रुख बनता है। अक्सर इस समय शेयर में भाव नीचे का स्तर बनाते हैं। इसके विपरीत धातु बाजार में ऊँचे का स्तर बनता है। हेल्थ केयर सेवा, स्वास्थ्य सेवा देने वाले संस्थान, इन्जीनीरिंग, ग्राफिक्स, रोजगार दिलाने वाली संस्थाओं के शेयर तथा लाभ में वृद्धि होती है। उपभोक्ता वस्तुओं को बनाने वाली कम्पनियों का लाभ भी बढ़ता है। अनाज के भाव काफी बढ़ते हैं।

इस राशि का स्वामी बुध है और यही राशि उसकी उच्च राशि है। बुध के प्रभावशाली वस्तुओं और प्रभाव को पहले बताया जा चुका है। राशि चक्र की सातवीं राशि तुला राशि बदलाव की सूचक है। ग्रहों के इस राशि में संचार के समय बहुत कुछ परिवर्तन होता है। धन से इसका सीधा सम्बन्ध है। शुक्र का इस पर अधिकार है और इस कारण कम्पनियों का दूसरे कम्पनियों में विलय, विस्तार या अन्य कारणों से पूंजी का प्रबन्ध बाहर से करना होता है। कम्पनी ऋणग्रस्त भी हो सकती है। कम्पनियों की वित्तीय स्थिति गड़बड़ाती है और दिवालिया भी हो सकती है। अतः इस राशि में ग्रहों के संचार के समय यदि उसका खराब योग अन्य ग्रहों से बन रहा हो तो शेयर खरीदने के समय अतिरिक्त सावधानी की जरुरत होती है। अच्छे योग से बाजार में तेजी का भाव बनता है। अधिकतर बाजार में शेयर के भाव दबते हैं।

सूर्य की नीच और शनि की उच्च राशि होने से ग्रहों के संचार के समय बाजार में भाव Over Valued या Lower Valued चल रहा हो तो उसमें सन्तुलन बनाने का यह राशि काम करती है। बाजार Range Bound हो जाता है। इससे सम्बन्धित कास्मेटिक्स, गहने, फैशन, मोती, रिफाइनिंग, चीनी उद्योग आते हैं। वित्तीय संस्थाओं के शेयर इसी के अन्तर्गत आते हैं। इसके प्रभाव में आने वाले देशों में

अच्छी फसल, लगातार विकास दर ऊँची बनी रहने से राज्य में शान्ति बनी रहती है। मंहगाई बढ़ाने वाली प्रमुख राशियों में एक है। बाजार में उतार-चढ़ाव बराबर बना रहता है। खराब योग बनने पर बाजार नीरस हो जाता है तथा काम करने लायक नहीं रहता।

वृश्चिक राशि राशि चक्र की आठवीं राशि बताती है कि जितना भी अब तक आप पा रहे हैं उससे कहीं अधिक संसार में है और उसको दौड़-धूपकर प्रयास से पाया जा सकता है। यह स्वकेन्द्रित राशि है। शब्दों से जिसको कहा नहीं जा सकता यह शक्ति से भरी राशि उसको जानने और पाने का प्रयास करती है। बाजार की दिशा को लोग समझ न पाने के कारण उल्टा-सौदा करके नुकसान उठाते हैं। यह गहरी जलीय राशि है। इसमें असुरक्षा और मृत्यु अर्थात सम्पूर्ण धन नाश हो सकता है।

पुराने समय में इसको मंगल के अधीन माना गया था। मंगल के गुण-अवगुण सभी इसमें आज भी मौजूद है। मंगल के अधिकार की वस्तुएं पहले बतायी जा चुकी हैं। सन् १९३० में प्लूटों की खोज के बाद उसको वृश्चिक राशि का सह अधिकारी स्वीकार किया गया है। सट्टे के ऊपर प्लूटो का पूरा प्रभाव हैं लेकिन प्लूटो के प्रभाव में आकर किया गया सट्टा समस्या बन जाता है। व्यक्ति उल्टा सौदा करने के बाद दिमागी सन्तुलन खोकर अनाप-शनाप खरीद-बेचकर सर्वनाश कर लेता है। निवेश भी गलत शेयरो या बाजार में होता है और हर हालत में नुकसान ही उठाना पड़ता है।

विदेशी पूंजी का सम्बन्ध वृश्चिक राशि से है। विदेशी वित्तीय संस्थाएं और विदेशी निवेशक इसी राशि के प्रभाव में आते हैं। राशि की स्वभावगत विशेषता के कारण जिस देश में विदेशी पूंजी से शुरु में

विकास की आशा होती है, उसको लम्बे समय में हानि उठानी पड़ती है। उसका पूंजी बाजार समय-समय पर संकट झेलता है। विदेशी पूंजी के कारण विकास की गलत अवधारणा बनती है। वास्तव में विदेंशी पूंजी देश को भ्रष्टाचार बढ़ाने वाले कारणों में से एक कारण स्वयं बन जाती है। अतः जब भी विदेशी पूंजी आने या विदेशी खरीदारी बढ़ने से बाजार भाव बढ़ें तो अपना माल बाजार के उच्च स्तर के पहुंचने के पहले ही बेचकर निकल जाना चाहिए।

वर्तमान को अच्छा बनाना, पहले से अधिक तेजी से विकास, भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण, उद्योगों के विस्तारीकरण धनु राशि के अर्न्तगत आते हैं। इससे हमको बहुत अधिक सुख की प्राप्ति होती है। इसमें संख्या वृद्धि पर अधिक ध्यान होता है। गुणवत्ता को प्रधानता नहीं रहती। अन्त में आशा इतनी बढ़ जाती है कि वह अन्त का कारण होता है। हाथ में आया हुआ लम्बे समय का लाभ कुछ दिनों में गायब हो जाता है। बाजार का ध्वस्त होना इस राशि के अर्न्तगत आता है। जब तेजी का गुब्बारा इतना फूल जाए कि लोग मन्दी का नाम ही भूल जांए। सभी बाजार में खरीद रहे हों तो बाजार का क्रैश होना निश्चित है। सन् २००८ में गुरु का धनु राशि का संचार पिछले कई सालों की तेजी को एक दिन में समाप्त कर दिया। आज तक उस घाटे की भरपाई नहीं हो सकी है और बाजार नए संकट की ओर फिर जा रहा है।

धनु राशि में ग्रहों के संचार के समय बाजार में अस्वाभाविक उतार-चढ़ाव आता है। तेजी समाप्त होकर मन्दी में बदल जाती है। धनु राशि में ग्रहों के संचार के समय तेजी-मन्दी में अच्छा रुपया कमाया जा सकता है। यह लाभ कमाना व्यक्ति की अपनी योग्यता पर निर्भर करता है। इतना निश्चित है कि इस राशि में बहुत अधिक

उतार-चढ़ाव होगा।

इस राशि का स्वामी गुरु है। गुरु का स्वभाव विस्तार, विकास और आशा का है। प्राचीन ज्योतिष में यह बहुत शुभ तथा धन देने वाला कहा गया है। धनु और मीन राशियों का स्वामी माना गया था। भाग्य को बनाने वाला तथा प्रचुर सम्पदा और सभी सुखों को देने वाला कहा गया है। आजकल यह नई फैक्टरियों, कारखानों के निर्माण में सहयोग देने वाला तथा सम्पन्नता प्रदान करने वाला माना गया है।

धनु राशि में ग्रहों के संचार से सभी बाजार में भाव बढ़ता है। आयात-निर्यात क्षेत्र की कम्पनियां, वायुयान तथा स्पेस, प्रकाशन, खेलकूद के सामान बनाने वाली कम्पनियां, धार्मिक और शिक्षा क्षेत्र में लगे लोगों को तथा शेयर को अच्छा लाभ मिलता है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कई देशों में फैली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का लाभ बहुत अधिक बढ़ जाता है।

सभी स्थितियों पर लगातार निगरानी रखना और कार्यक्षेत्र में जागरुकता-चैतन्यता बनाए रखना मकर राशि की विशेषता है। अपने क्षेत्र में शक्तिशाली और नम्बर एक की स्थिति पर पहुंचना इसका लक्ष्य रहता है। शक्तिशाली बड़े उद्योग और उद्योग समूह इसके अन्तर्गत आते हैं। इसका पुरस्कार भी इस राशि से मिलता है और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होती है। इसके अन्तर्गत आने वाले उद्योग में व्यापारिक गतिविधि का दबाव बहुत अधिक बना रहता है। समाज और देश को इससे बहुत कुछ प्राप्त होता है। समाज में उद्योगों की प्रतिष्ठा बनी रहती है। कानून और समाज के दायरे में रहकर यह अपना काम करते हैं। इसके अन्तर्गत आने वाली कम्पनियां अपने घाटे के प्रति हमेशा सजग रहती हैं। अपनी सेवा और कर्तव्य के प्रति समर्पित रहते हैं। मेदिनी ज्योतिष (Mundane Astrology) में

यह सरकारी कानून और क्रिया-कलापों का अध्ययन होता है।

इस राशि का स्वामी शनि है जो व्यवस्था और आधारभूत ढांचे को बनाए रखता है। अपनी क्षमता-सीमाओं, उद्देश्य-वादों और कठोर श्रम करने के प्रति यह ग्रह समर्पित है। वास्तविकताओं को बनाए रखता है। तीनों आयामों कानून, नियम, अनुशासन, धैर्य और सीमाओं के प्रति सावधान रहता है। शनि व्याख्या के साथ न्याय करता है। यह शिक्षक के साथ-साथ साधु भी है। इससे कुछ छिपाया नहीं जा सकता।

मकर राशि में जब ग्रह भ्रमण कर रहे होते हैं तब शंका के कारण सभी पूंजीगत बाजारों का गिरना एक बार तय रहता है। बाजार यदि तेजी में चल रहा हो तो बाजार में गतिविधि कम होने तथा टर्न ओवर घटने से भाव नीचे का रुख करते हैं। हालांकि जल्दी ही बाजार में सुधार हो जाता है। लकड़ी, खनन उद्योग, कागज, भारी मशीनरी उद्योग, खेती में उपयोग आने वाली मशीनें, सीमेन्ट, कंक्रीट, भवन निर्माण उद्योग, रबर और टायर उद्योग, रेलवे और मैन्युफैक्चरिंग इस राशि से सम्बन्धित होने से ग्रहों के संचार के समय उनके शेयरों के भाव तथा उद्योगों के काम-काज पर असर होता है।

संगठित उद्योग के रुप में स्थापित कई फैक्टरियों का समूह कुम्भ राशि के अर्न्तगत आता है। साझा जिम्मेदारी और आदर्श को अपनाते हुए कार्य संचालन होता है। सतत् निगरानी के कारण इन उद्योगों में लगातार सुधार और नई खोजें होती रहती हैं। यह एक रहस्यमय प्रभावशाली राशि है। जलीय तत्व की न होते हुए भी इसमें जल तत्व का समावेश है। घड़े में से लगातार जल गिराते हुए व्यक्ति की कल्पना की गयी है। जल न होतें हुए भी यह जल से भरपूर है।

इसका अर्थ यह विद्युत तरंगों से भरपूर है और समाज पर अपनी तरंगों का पूरा प्रभाव डालती है। इन विद्युत तरंगों का प्रभाव व्यक्ति पर कम और समूह पर अधिक पड़ता है। इसके प्रभाव से सामूहिक उन्नति होती है। इसकी शक्तियों का यदि व्यक्तिगत स्तर पर उपयोग किया गया तो असफलता निश्चित है। दिमाग से मजबूत कुम्भ राशि का स्वभाव सहयोग करते हुए व्यक्तिगत पहचान बनाए रखना है। पहले शनि इस राशि का स्वामी माना जाता था लेकिन आजकल हर्शल का अधिकार इस राशि पर देखा जा रहा है।

हर्शल ग्रह स्वभाव से क्रान्तिकारी और उच्च तकनीक से सम्बन्धित ग्रह है। यह परम्परावादी न होकर विकासवादी ग्रह है। आजकल के अनेक अनुसन्धान इसी से सम्बन्धित हैं। समाज और देश में क्रान्ति ले आने वाला ग्रह है। इससे प्राप्त फल एक आश्चर्य होते हैं। बिना थके अनवरत काम करना इसका स्वभाव है। विद्रोह, क्रान्ति और स्वतन्त्रता का नायक है। इसके बारे में भविष्यवाणी करना संदेहजनक रहता है।

कुम्भ राशि में ग्रहों के संचार के समय भावों में उतार-चढ़ाव अनुमान के विपरीत होता है। बाजार अचानक पलटा खा जाता है। कम्प्यूटर, नई तकनीक के उद्योग, बिजली, विद्युत उत्पादन, वायुयान, मीडिया, केबल, रेडियों, टेलीविजन, एयरलाइन से सम्बन्धित उद्योग और उनके शयरों के भाव पर असर होता है। भाव अचानक पलटा खाते हैं।

राशि चक्र की अन्तिम एवं बारहवीं राशि मीन समस्त मानवता से सम्बन्धित है। अचेतन से चेतन को जोड़ने वाली राशि यह है। व्यक्ति की आवश्यकता और आकांक्षा को पूर्ण करने वाली राशि होने के कारण बाजार में क्रियाशीलता को बढ़ा देती है और भाव तेजी के

बन जाते हैं। स्वप्नों को पूर्ण करने वाली, आस्था, विश्वास बनाए रखकर आध्यात्मिकता की ओर झुकाव रखती हैं। भारतीय बजट पर अपना पूर्ण प्रभाव डालती है, इसीलिए लोग बजट से बहुत आशाएं रखते हैं। बजट और बाजार का सीधा सम्बन्ध है। आशाएं पूरा न होने पर बाजार इसीलिए लुढ़क जाता है। यदि बजट किसी अन्य राशि के प्रभाव में इधर-उधर के महीनों में रखा जाए तो बजट का स्वरुप बदल जाएगा और बाजार फिर उसके अनुरुप चलेगा। इस विषय पर बाद में लिखा जाएगा। मेदिनी ज्योतिष में यह अस्पताल, रसायन, दवा, नशा, अल्कोहल, वर्षा और पानी से सम्बन्धित राशि है।

इस राशि का स्वामी पहले केवल गुरु माना जाता रहा है। आधुनिक समय में नेपच्यून को भी इस पर प्रभाव डालने वाला ग्रह कहा जाता है। नेपच्यून के प्रभाव को आंकना आसान नहीं है। कोशिश करने के बावजूद भी इसका प्रभाव कहीं न कहीं आंकने में छूट जाता है। रहस्य परदे के पीछे छिपा रहता है। स्वभाव से यह तेजी की राशि है लेकिन कभी-कभी ग्रहयोग से बाजार में अच्छा मन्दा भी आता है जिसकी रिकवरी बाद में हो जाती है। नेपच्यून के प्रभाव से बाजार में अफवाह के क़ारण मन्दी फैलती है। बाजार की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। तेल और गैस, जहाजरानी उद्योग, चमड़े, जूते, कैमरा और फोटोग्राफी, फिल्म जगत के कारोबार पर असर होता है।

राशि चक्र की सभी बारह राशियों और उनके स्वामियों तथा उनसे सम्बन्धित उद्योग और वस्तुओं की संक्षिप्त में जानकारी देने के बाद बाजार को प्रभावित करने वाले ग्रहों और उनके योगों का प्रभाव बताया जा रहा है।

## *भारतीय ज्योतिष और पाश्चात्य ज्योतिष में योग*

दो ग्रहों के बीच अंशात्मक दूरी को योग कहते हैं। इनके अनुसार विभिन्न योग आगे बताए जा रहे हैं।

***युति ( ० )*** - जब दो ग्रह किसी राशि में एक ही भोगांश पर रहते हैं तो इसको उन दोनों ग्रह की युति कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि शनि तुला राशि में २१ अंश पर हो और उस समय मंगल भी तुला में २१ अंश का हो तो इस स्थिति को मंगल-शनि युति कहते हैं।

***क्रान्ति साम्य ( P )*** - जब दो ग्रह की क्रान्ति समान होती है, चाहे वह दानों उत्तर हों या एक उत्तर और दूसरा दक्षिण हो तो इस स्थिति को क्रान्ति साम्य कहते हैं।

***अर्ध त्रिरेकादश या द्विर्द्वादश***- आगे-पीछे की राशियों में चलते हुए जब दो ग्रहों की दूरी ३० की होती है तो उसको अर्ध त्रिरेकादश कहते हैं।

***अर्ध केन्द्र ( < )*** - जब दो ग्रहों की दूरी ४५ अंश की होती है तो उसको अर्ध केन्द्र कहते हैं।

***त्रिरेकादश ( * )*** - दो ग्रहों के बीच का अन्तर ६० अंश होने पर उसको त्रिरेकादश होता है। दो ग्रहों के बीच की राशि छोड़कर एक-दूसरे से तीसरी राशि में होने पर यह योग बनता है।

***केन्द्र-( Sqare )*** - दो ग्रह जब ९० अंश का कोण बनाते हैं तो उसको केन्द्र योग कहते हैं। एक दूसरे से चौथे-दसवीं राशि में होने पर यह योग बनता है।

***त्रिकोण ( Trine )*** - एक दूसरे से पाचवीं-नवीं राशि में होने पर १२० अंश की दूरी पर यह योग बनता है।

**सार्ध-केन्द्र ( Sesqua-Quadrate )** - दो ग्रहों के

बीच १३५ अंश की दूरी को सार्ध केन्द्र कहते हैं।

*षडाष्टक* (*Quincunc*) - दो ग्रहों के बीच १३५-२१० अंश की दूरी पर षडाष्टक योग बनता है।

*प्रतियुति* (*Oppostion*) - जब दो ग्रह सामने की राशि में रहते हुए १८० अंश की दूरी पर रहते हैं तो, उनको प्रतियुति बनाने को कहते हैं।

*योग*

शेयर्स और कमोडिटी को सबसे अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली योग युति और प्रतियुति हैं।

क्रान्ति साम्य, त्रिरेकादश, और त्रिकोण योग का प्रभाव तेजी से पड़ता है और प्रतियुति-युति के बाद यह महत्वपूर्ण योग हैं।

धीमे चलने वाले बाहरी ग्रह गुरु-शनि-हर्शल और नेपच्यून लम्बे समय तक क्रान्ति साम्य बनाए रखते हैं। साधारणतया क्रान्ति साम्य जब दो ग्रह युति अथवा प्रतियुति की स्थिति में होते हैं, उस समय बनता है। इससे इनका महत्व बढ़ जाता है।

अर्ध केन्द्र, सार्ध केन्द्र और षडाष्टक का प्रभाव कम होता है, अतः इनको बहुत महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।

सूर्य और शुक्र ४८ अंश से दूर कभी भी नहीं होते जिससे इन दोनों के बीच युति और अर्ध केन्द्र योग नहीं बनते हैं। सूर्य-शुक्र का अर्ध केन्द्र लम्बे समय तक प्रभाव डालकर शेयर और कमोडिटी में विशेषकर सोना-चांदी के भाव पर विशेष असर डालता है।

*भारतीय ज्योतिष में योग*

जब दो ग्रह एक ही राशि में हों तो उनको युति कहते हैं। उदाहरण के लिए मेष राशि में गुरू पच्चीसवें अंश पर हो और मंगल

दसवें अंश पर हो तो उसको युति कहते हैं। जैसे-जैसे दोनों करीब होते हैं, उनका प्रभाव बढ़ता जाता है और शेयर तथा कमोडिटी के भाव तेजी से बदलते हैं।

सभी ग्रह अपने से सातवें भाव को प्रभावित करता है। लग्न का चन्द्र सातवें भाव को, नवें भाव का बुध तीसरे भाव को प्रभावित करता है। यह प्रतियुति की स्थिति है और जैसे-जैसे उनके भोगांश बराबर होते रहते हैं, उनका प्रभाव तेज होता जाता है।

मंगल अपने से चौथे और आठवें भाव को भी प्रभावित करता है। मंगल मेष राशि में संचार करते हुए अपने से चतुर्थ कर्क, सातवें तुला और आठवीं राशि वृश्चिक पर भी प्रभाव डालेगा। वृश्चिक राशि से इसका षडाष्टक योग बनेगा। कर्क से केन्द्र और तुला से प्रतियुति योग बनेगा। शेयर, कमोडिटी बाजार तथा बुलियन बाजार में योग पूरा होने पर प्रभाव बहुत तेज होगा। मंगल का केन्द्र योग सभी बाजार में अच्छा परिवर्तन लाता है। अतः इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

वृहस्पति सातवें भाव के साथ पाचवें और नवें भाव को भी प्रभावित करता है। वृहस्पति का पाचवां और नवां भाव स्वयं में त्रिकोण योग बनाता है। मेष का गुरू सिंह एवं धनु राशि को प्रभावित करेगा और यदि उस राशि में कोई ग्रह हो तो शेयर, कमोडिटी, सोना-चांदी बाजार के भाव पर बहुत तेज असर होगा। त्रिकोण योग का सबसे अधिक प्रभाव इसी का होने से यदि अन्य ग्रहों का भी दूसरें ग्रहों से त्रिकोण योग बन रहा हो तो सबसे पहले वृहस्पति के त्रिकोण पर ही ध्यान देना चाहिए।

शनि सातवें भाव पर प्रभाव डालने के साथ तीसरे और दसवें भाव पर अर्थात त्रिरेकादश एवं केन्द्र योग पर भी प्रभाव रखता है। उदाहरण के लिए तुला का शनि सातवें भाव मेष राशि के अतिरिक्त धनु

और कर्क राशि पर भी अपना प्रभाव डालेगा। शेयर, कमोडिटी, और सोना-चांदी का भाव इसके योग बनने के समय तेजी से बदलेगा। जिस समय इसका त्रिरेकादश या दसवां भाव केन्द्र योग बन रहा हो उस समय सावधानी के साथ बाजार की दिशा बताना चाहिए।

अन्य ग्रह सूर्य-चन्द्र, बुध-शुक्र केवल सातवें भाव को तीव्रता से प्रभावित करते हैं। प्रतियुति योग पर प्रभाव रखने से जिस समय योग पूरा हो रहा होता है, उस समय प्रभाव अधिक तेजी से होता है। भारतीय ज्योतिष से विचार करने पर युति और प्रतियुति योग का प्रभाव पाश्चात्य ज्योतिष की तरह ही होगा।

शनि का तीसरे भाव का विचार पाश्चात्य ज्योतिष के त्रिरेकादश योग की ही तरह होगा। शनि का त्रिरेकादश योग बाजार पर बहुत तेज असर डालता है। यदि अन्य ग्रहों के त्रिरेकादश योग आपस में बन रहे हों तो शनि के योग के सामने महत्वहीन रहेंगे। अतः शनि के त्रिरेकादश योग पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मंगल का चौथे और शनि का दसवां भाव का योग बन रहा हो तो यह केन्द्र योग होगा। इस योग में शेयर, कमोडिटी, बुलियन बाजार में बहुत अधिक प्रभाव डालेगा। समान अंशो पर पहुंचने पर बाजार पर प्रभाव आश्चर्यजनक रूप से प्रभाव पड़ता है।

मंगल का आठवें भाव पर प्रभाव षडाष्टक योग होता है। योग बनने पर इसका प्रभाव तीव्रता से होता है। अतः मंगल के षडाष्टक योग पर अतिरिक्त सावधानी रखनी चाहिए।

वृहस्पति के त्रिकोण योग पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शेयर, कमोडिटी-बुलियन बाजार के भाव पर विशेष प्रभाव पड़ता है और शनि से होने पर बाजार की चाल तक बदल जाती है। अन्य ग्रहों

के त्रिकोण योग बाजार भाव पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं डालते। पाश्चात्य या भारतीय ज्योतिष चाहे जिससे अध्ययन करें इन योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इनसे बाजार भाव में परिवर्तन अधिक होता है। सभी ग्रह की युति एवं प्रतियुति का प्रभाव सूर्य और शुक्र का अर्धकेन्द्र मंगल और शनि का केन्द्र योग मंगल का चौथा एवं शनि का दसवां भाव इस योग पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मंगल का आठवें भाव पर प्रभाव (षडाष्टक योग) को विशेष ध्यान दें। शनि का तीसरे भाव पर त्रिरेकादेश योग के प्रभाव पर अवश्य ध्यान दें। गुरु के त्रिकोण योग बनने के समय यदि अन्य ग्रह भी दूसरे ग्रह से त्रिकोण योग बना रहे हों तो उनको अधिक महत्व नहीं दें।

ग्रहों के अंशात्मक योग बनते रहते हैं लकिन कभी ऐसा भी होता है जब कोई भी योग न बन रहा हो। इस स्थिति में हम योग बनने के पहले या बाद के प्रभाव का आंकलन करते हैं। इसको Applying या Separating Effects कहते हैं। यदि कठोर योग बन रहा है तो योग पूरा होने पर बाजार मन्दी में जाने का चान्स रहता है और नरम योग बनने पर बाजार योग पूरा होने के बाद तेजी में रहेगा। यदि कठोर योग बनने के बाद कोई दूसरा योग बनने में समय हो तो बाजार बाद में भी तेजी में रहेगा। नरम योग बनने के बाद यदि कोई योग न बन रहा हो तो बाजार कुछ दबकर बाद में एक दायरे में चलता रहेगा। यदि कमजोर योग बन रहे हों तो उनका प्रभाव बहुत कम होगा। यदि दो प्रमुख योगों के बीच लम्बा अन्तराल पड़ जाए, साथ ही एक दूसरे के विपरीत स्वभाव वाले योग हों तो यह अन्तराल काफी महत्वपूर्ण हो जाता है और इसमें बाजार की चाल उलट भी सकती है।

# सन् २०१३ ई० के अतिनेष्ट काल

ज्योतिष का यह अति महत्वपूर्ण और उपयोगी विषय पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। जिनको शनि की साढ़े-साती, ढैया, अशुभ दशा के कारण, परेशानियों का या अशुभ फल का सामना करना पड़ रहा हो, उनको इस अतिनेष्ट काल की दी हुई तारीखों में बहुत सावधानी रखनी चाहिए। किसी नवीन कार्य को प्रारम्भ करने के लिए योजना बनाना या नवीन कार्य इन तारीखों में प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। शुभ दशा वालों को अच्छा फल भी मिल सकता है। तालिका में जिन राश्यंकों को दिया गया है, वह लग्न राशि को भी प्रभावित करेंगे। व्यक्तिगत फल के अतिरिक्त मेदिनी ज्योतिष में भी इनका प्रभाव घटित होता है। अधिकतर प्राकृतिक प्रकोप इन्हीं तारीखों के समय के आस-पास होता है। व्यापारिक ज्योतिष एवं सट्टा में भी सफलतापूर्वक इसका उपयोग आप कर सकते हैं। रेस, लाटरी के अंक विज्ञान के लिए भी इन राश्यंकों का अत्यधिक महत्व है। सुविधा के लिए प्रत्येक राशि के अंक नीचे दिए गए हैं।

**राश्यांक- मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, धनु ९, मकर १० कुम्भ ११, एवं मीन १२।**

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ | जनवरी | २१ | ०७ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ५ | ,, | २९ | ५७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ६ | ,, | २८ | ४० | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| १० | ,, | ६ | ४३ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ११ | ,, | २५ | १४ | सूर्य-चन्द्र युति | १-२-६-८ |
| १३ | ,, | ७ | २८ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १३ | ,, | ८ | ४० | चन्द्र-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |
| १७ | ,, | १७ | ३२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १८ | ,, | २६ | ३७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १९ | ,, | २८ | ३५ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| २१ | .. | २२ | ०७ | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | २-३-७-९ |
| २२ | .. | १७ | ४६ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २५ | .. | ११ | २३ | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | २-३-७-९ |
| २७ | .. | १० | ०८ | सूर्य चन्द्र प्रति युति | २-३-७-९ |
| २७ | .. | १६ | २३ | चन्द्र-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| २७ | जनवरी | १७ | १३ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३० | ,, | २८ | १९ | सूर्य-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| ३० | ,, | २९ | १५ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २ | फरवरी | १५ | १३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ३ | ,, | १३ | १५ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| ३ | ,, | १५ | २८ | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | २-३-७-९ |
| ६ | ,, | १७ | २७ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ९ | ,, | ७ | ०० | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | २-३-७-९ |
| ९ | ,, | १७ | ५७ | चन्द्र-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |
| ९ | ,, | १९ | ४२ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १० | ,, | १२ | ५० | सूर्य-चन्द्र युति | २-३-७-९ |
| १३ | ,, | २८ | २८ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १४ | ,, | १५ | ०० | सूर्य-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |
| १५ | ,, | ११ | ५४ | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | ३-४-८-१० |
| १५ | ,, | १३ | ५६ | चन्द्र-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |
| १६ | ,, | १४ | १४ | चन्द्र-शनि प्रति युति | ३-५-१०-११ |
| १८ | ,, | २६ | ४५ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २३ | ,, | २३ | ४० | चन्द्र-शनि क्रान्ति साम्य | २-५-८-१० |
| २३ | ,, | २५ | ४६ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २४ | ,, | २२ | ४६ | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | ३-४-८-१० |
| २५ | ,, | २५ | ५६ | सूर्य-चन्द्र प्रति युति | ३-४-८-१० |
| २७ | ,, | १२ | १५ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २८ | ,, | १७ | ०० | सूर्य-चन्द्र क्रान्ति साम्य | ३-४-८-१० |
| १ | मार्च | २१ | ४४ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २ | ,, | १८ | ४६ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| ५ | ,, | २३ | ३० | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ८ | ,, | २६ | ३४ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ८ | ,, | २७ | ३८ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १० | ,, | २७ | ३३ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-४-८-१० |
| ११ | ,, | २५ | २१ | सूर्य-चन्द्र युति | ३-४-८-१० |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | मार्च | १५ | ११ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-४-८-१० |
| १३ | ,, | १३ | ०३ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १४ | ,, | २२ | ३२ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १५ | ,, | २१ | ५७ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| १८ | ,, | ९ | ३८ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २३ | ,, | ८ | ५८ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २३ | ,, | ९ | ५२ | चन्द्र-शनि क्रान्सिाम्य | २-५-८-१० |
| २५ | ,, | २२ | ३३ | सूर्य-चन्द्र क्रान्सिाम्य | ४-५-९-११ |
| २६ | ,, | १९ | ०६ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २६ | ,, | २१ | ४२ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-५-९-११ |
| २७ | ,, | १४ | ५७ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | ४-५-९-११ |
| २८ | ,, | २७ | १५ | चन्द्र-शनि क्रान्सिाम्य | २-५-८-१० |
| २९ | ,, | २३ | ४३ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| ३० | ,, | २४ | २८ | सूर्य-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १ | अप्रैल | २६ | ५० | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ५ | ,, | ७ | १८ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| ५ | ,, | १० | ४१ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ६ | ,, | १८ | ५३ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-५-९-११ |
| ९ | ,, | १८ | १७ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| ९ | ,, | २४ | ४८ | सूर्य-चन्द्र क्रन्तिसाम्य | ४-५-९-११ |
| १० | ,, | १५ | ०५ | सूर्य-चन्द्र युति | ४-५-९-११ |
| १० | ,, | २७ | २७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ११ | ,, | २७ | ०६ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| १४ | ,, | १४ | १८ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| १९ | ,, | १४ | १४ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १९ | ,, | २१ | ५५ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १९ | ,, | २५ | ०९ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ५-६-१०-१२ |
| २१ | .. | ८ | ०३ | सूर्य-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २२ | .. | २५ | ४२ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २५ | .. | ९ | १० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २५ | .. | १८ | ४० | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ५-६-१०-१२ |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| २५ | अप्रैल | २५ | २७ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | ५-६-१०-१२ |
| २६ | ,, | ५ | ४७ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| २८ | ,, | १३ | ५७ | सूर्य-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| २९ | ,, | ६ | ४० | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| १ | मई | १९ | ३२ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ५-६-१०-१२ |
| २ | ,, | ९ | २१ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| २ | ,, | १९ | ३५ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ६ | ,, | २० | ४६ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| ८ | ,, | ५ | ४३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ९ | ,, | ६ | ०६ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| १० | ,, | ५ | ५८ | सूर्य-चन्द्र युति | ५-६-१०-१२ |
| १० | ,, | ९ | ०० | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ५-६-१०-१२ |
| ११ | ,, | १७ | २२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| १४ | ,, | १३ | ५४ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ५-६-१०-१२ |
| १६ | ,, | १७ | ५१ | चन्द्र-शनि के न्द्र | १-८-१०-१२ |
| १७ | ,, | ९ | ५७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २० | ,, | ७ | ३० | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २२ | ,, | १६ | ०४ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २३ | ,, | १३ | ०४ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| २५ | ,, | ९ | ५५ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | १-६-७-११ |
| २६ | ,, | १३ | ०३ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| २७ | ,, | १२ | ४६ | सूर्य-शनि षडाष्टक | ५-७-१०-१२ |
| २९ | ,, | १३ | १७ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| ३० | ,, | ५ | ५० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २ | जून | २२ | ५५ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| ४ | ,, | ८ | १० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ५ | ,, | ८ | ३३ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| ७ | ,, | २० | १४ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| ८ | ,, | २१ | २६ | सूर्य-चन्द्र युति | १-६-७-११ |
| १२ | ,, | २१ | ११ | चन्द्र -शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १३ | ,, | १९ | ५९ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| १६ | जून | १२ | ३६ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १८ | ,, | २३ | ५५ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १९ | ,, | २० | ५० | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| २२ | ,, | २१ | ५६ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| २३ | ,, | १७ | ०२ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | २-७-८-१२ |
| २५ | ,, | २० | ५२ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| २६ | ,, | १६ | ४७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २९ | ,, | २७ | ३२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १ | जुलाई | १३ | ४४ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २ | ,, | १२ | ४१ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| ४ | ,, | २४ | ३७ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| ८ | ,, | १२ | ४४ | सूर्य-चन्द्र युति | २-७-८-१२ |
| ९ | ,, | २५ | ५७ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १० | ,, | २६ | ५७ | चन्द्र शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १३ | ,, | १७ | ५९ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १६ | ,, | ८ | ४० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १६ | ,, | २८ | ३० | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| २० | ,, | ८ | ०१ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| २२ | ,, | २३ | ४६ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | १-३-८-९ |
| २३ | ,, | ७ | ३२ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| २३ | ,, | २६ | ५३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २७ | ,, | १२ | ०६ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| २८ | ,, | ६ | ३५ | सूर्य-शनि केन्द्र | ७-९-११-१२ |
| २८ | ,, | २३ | ५० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २९ | ,, | २० | ११ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| ३१ | ,, | १३ | ४८ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | १-३-८-९ |
| १ | अगस्त | ७ | ५० | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| ५ | ,, | ६ | ५६ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | १-३-८-९ |
| ६ | ,, | ९ | २४ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ६ | ,, | २७ | २१ | सूर्य-चन्द्र युति | १-३-८-९ |
| ७ | ,, | ६ | ५८ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | अगस्त | २५ | ०३ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १२ | ,, | १८ | ३१ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १३ | ,, | १२ | १८ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| १३ | ,, | १६ | ४८ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | १-३-८-९ |
| १६ | ,, | १८ | ०८ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १९ | ,, | १९ | ४० | चन्द्र-शनि केन्द्र | ४-५-६-१२ |
| १९ | ,, | २८ | १६ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | २-४-९-१० |
| २० | ,, | १० | १८ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २१ | ,, | ७ | १५ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | २-४-९-१० |
| २२ | ,, | २५ | १४ | सूर्य-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २३ | ,, | २४ | ०८ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| २५ | ,, | ८ | १९ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | २-४-९-१० |
| २५ | ,, | १३ | ५० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २६ | ,, | ७ | १९ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| २८ | ,, | १८ | २१ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २ | सितम्बर | १९ | ५७ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३ | ,, | ८ | ४७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ४ | ,, | १६ | ०८ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | २-४-९-१० |
| ५ | ,, | १७ | ०६ | सूर्य-चन्द्र युति | २-४-९-१० |
| ६ | ,, | १० | ५७ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ७ | ,, | १७ | १२ | सूर्य-चन्द्र क्रांन्तिसाम्य | २-४-९-१० |
| ९ | ,, | ५ | ५७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ९ | ,, | २१ | १७ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| १२ | ,, | २७ | ५३ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| १६ | ,, | ७ | ४० | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १६ | ,, | १० | २० | सूर्य-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| १६ | ,, | १३ | ३३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १८ | ,, | २३ | १२ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-५-१०-११ |
| १९ | ,, | १४ | १७ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-५-१०-११ |
| १९ | ,, | १६ | ४३ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | ३-५-१०-११ |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| २० | सितम्बर | १४ | ०२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| २२ | ,, | ६ | ०० | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २२ | ,, | २१ | ०२ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| २५ | ,, | ७ | ३३ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| ३० | ,, | ९ | १२ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३० | ,, | ९ | १७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २ | अक्टूबर | १९ | ०५ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-५-१०-११ |
| ३ | ,, | २३ | ५४ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ४ | ,, | १७ | ०८ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-५-१०-११ |
| ५ | ,, | ६ | ०५ | सूर्य-चन्द्र युति | ३-५-१०-११ |
| ६ | ,, | १९ | ३३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ७ | ,, | ८ | ३८ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| १० | ,, | १४ | ०६ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| १३ | ,, | १२ | ५२ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १३ | ,, | १८ | ५१ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १४ | ,, | १८ | ४१ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ३-५-१०-११ |
| १७ | ,, | २८ | ०१ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १८ | ,, | २१ | ५६ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-६-११-१२ |
| १८ | ,, | २९ | ०८ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | ४-६-११-१२ |
| १९ | ,, | २२ | २१ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २० | ,, | ११ | ४० | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| २२ | ,, | २२ | ०९ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २७ | ,, | ९ | ११ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २७ | ,, | १५ | ४४ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-६-११-१२ |
| २७ | ,, | २३ | ५४ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३० | ,, | १० | १५ | सूर्य-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ३१ | ,, | १५ | ०७ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३ | नवम्बर | ११ | २९ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ३ | ,, | १८ | २० | सूर्य-चन्द्र युति | ४-६-११-१२ |
| ३ | ,, | २० | ५९ | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-६-११-१२ |
| ३ | ,, | २२ | ४८ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |

| ता. | मास | घं. | मि. | योग विशेष | प्रभावित राशियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | नवम्बर | १७ | ३० | सूर्य-शनि युति | १-५-७-१२ |
| ६ | ,, | २६ | ०३ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ८ | ,, | १५ | १० | सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य | ४-६-११-१२ |
| ९ | ,, | ११ | १८ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ९ | ,, | २९ | ४५ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| १४ | ,, | १६ | ४९ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १६ | ,, | १३ | ३७ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १६ | ,, | २५ | ३७ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| १७ | ,, | २० | ४६ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | १-५-७-१२ |
| १९ | ,, | १२ | ३२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| २३ | ,, | ९ | १३ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २४ | ,, | १४ | २९ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २८ | ,, | ६ | ५० | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| ३० | ,, | २९ | ०५ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १ | दिसम्बर | १४ | ४९ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |
| २ | ,, | २९ | ५२ | सूर्य-चन्द्र युति | १-५-७-१२ |
| ४ | ,, | १६ | २१ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| ६ | ,, | १२ | ४५ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| ७ | ,, | १७ | ४१ | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-४-६-७ |
| ११ | ,, | २८ | १५ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-६-८-११ |
| १३ | ,, | २७ | ३८ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| १४ | ,, | १३ | ५५ | चन्द्र-शनि प्रतियुति | ३-५-१०-११ |
| १६ | ,, | २५ | ३२ | चन्द्र-शनि षडाष्टक | १-७-९-१२ |
| १७ | ,, | १४ | ५८ | सूर्य-चन्द्र प्रतियुति | १-२-६-८ |
| २० | ,, | ९ | ४८ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २१ | ,, | २७ | ३० | चन्द्र-शनि केन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २५ | ,, | २० | ५२ | चन्द्र-शनि अर्धकेन्द्र | १-८-१०-१२ |
| २६ | ,, | १६ | ४४ | सूर्य-शनि अर्धकेन्द्र | ४-६-७-९ |
| २८ | ,, | २२ | ४२ | चन्द्र-शनि क्रान्तिसाम्य | २-५-८-१० |
| २९ | ,, | ६ | २८ | चन्द्र-शनि युति | १-५-७-१२ |

[illegible]

# सन २०१३ में सभी बाजार का
# वायदा-हाजिर-भविष्य फल

कमोडिटी बाजार, शेयर बाजार
रुई-कपास बाजार, सोयाबीन बीज-तेल, मूंगफली,
सरसों, सभी तिलहन बाजार, किराना बाजार, धनिया,
गुवार, चना, खल-बिनौला, कपासिया, सोना-चांदी,
तांबा, क्रूड आयल,
एवं सट्टे में उपयोगी मार्गदर्शक लेखों के साथ
एकमात्र पुस्तक


लेखक:- **श्री केदार नाथ कपूर**
( तेजी मन्दी विशेषज्ञ )
सम्पादक- चिन्तामणि पञ्चाङ्ग व चिन्तामणि जन्त्री



प्रकाशक- कंचन एस्ट्रॉलाजिकल पब्लिकेशन
एम-२१ गंगानगर कालोनी,
भदऊ, राजघाट
वाराणसी-२२१००१
फोन:- ०५४२/ २४४०६४९
०९३३५३३३५३५

मूल्य रु. ४००/-